अमृतदेश : अंगप्रदेश

डॉ. अमरेन्द्र

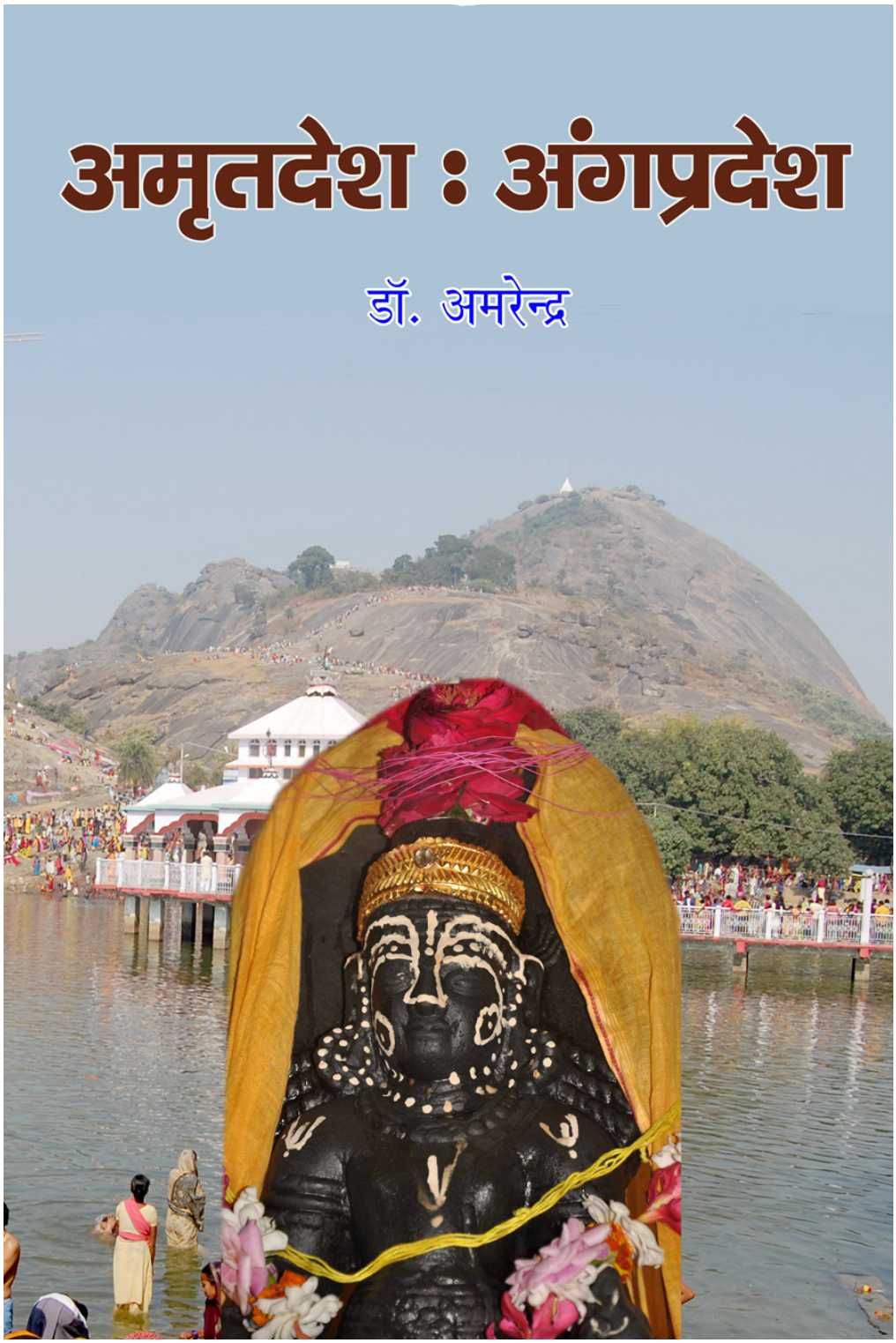

अमृतदेश : अंगप्रदेश

अमृतदेश : अंगप्रदेश

लेखक
डॉ. अमरेन्द्र

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
मुजफ्फरपुर, दिल्ली

© Dr. Amrendra

पुस्तक : अमृतदेश : अंगप्रदेश
लेखक : डॉ. अमरेन्द्र
आवरण : मनोज कुमार सिन्हा
चित्र : मन्द्राचल पर्वत और मधुसूदन की प्रस्तर मूर्ति
संस्करण : ई. २०१२
मूल्य : २०० रूपये
मुद्रक : समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, दिल्ली

AMRIT DESH : ANG PREDESH
By : Dr. Amrendra

नाट्य कला के कुशल शिल्पी और विद्वान आलोचक

डॉ. किशोर सिन्हा

के लिए

—अमरेन्द्र

नाटक से अलग कुछ बातें

अंगप्रदेश, मुझे आरम्भ से ही स्वर्णकलश में बंद एक सूरज की तरह लगता रहा है, जिसकी छटा से अभी भारत का इतिहास परिचित ही नहीं हुआ । जो इतिहास लिखा गया है, वह इस प्रदेश के सांस्कृतिक महत्व की उपेक्षा करते हुए । अगर विचार पूर्ण तथ्य के आधार पर इतिहास लिखने की कोशिश होती तो कम्बोज में प्रथम हिन्दू राज्य के संस्थापक कौण्डिन्य को दक्षिण भारतीय बताने का अनुमान नहीं होता । यह अजीब बात है कि जिस कौण्डिन्य को दक्षिण भारत का ब्राह्मण कहा गया, उस व्यक्ति के बारे में तमिल साहित्य या दक्षिण के किसी प्रान्त के इतिहास और साहित्य में कहीं उल्लेख तक नहीं मिलता । विरोध की हद है। कौण्डिन्य ने सोमा नामक नागवंशी कन्या से शादी की थी, हमें स्मरण रखना चाहिए कि नागवंश, अंग के राजवंशों में एक है । आज भी इस प्रदेश में कौण्डिन्य वंश के चिन्ह कौण्डिया नाम से मिल जाते हैं । यह यहाँ के साहित्य और समाज में भी व्याप्त है। इस धारावाहिक के पूर्व, वृहत्तर अंग महाजनपद इतिहास लेखन की इच्छा के पीछे कुछ ऐसे ही प्रसंग प्रेरणा की तरह साथ रहे हैं, जिन्हें इस रेडियो रूपक में उतारने की कोशिश है ।

भागलपुर आकाशवाणी से मेरा यह धारावाहिक रेडियो रूपक 'अंगदेश का अमृत मंथन' नाम से, २०११ ई. की एक फरवरी से लेकर २४ मई तक, प्रत्येक मंगल की रात में प्रसारित होता रहा । समय लगा, क्योंकि प्रान्तीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय खेलों की, बीच में, खूब धमाचौकड़ी मची । फिर भी 'अंगदेश का अमृत मंथन' रुका नहीं, और २४ मई के मंगलवार की रात में आखरी बार मथा गया ।

पुस्तकाकार यह रेडियो नाटक प्रसारित वही धारावाहिक रेडियो रूपक है। सिर्फ नाम बदल गया है । जब उसे प्रकाशित करने की बात सोच रहा था, तभी यह नाम दिमाग में उभर आया 'अमृत देश : अंगप्रदेश' । जैसे पिघले हुए

नीलम ने जम कर सुडौल रूप ले लिया हो ।

लेकिन प्रकाशित रूप में आ रहा यह रेडियो रूपक प्रसारित रूप से इसलिए कुछ भिन्न है, क्योंकि मैंने वहां कई स्थल ऐसे रिक्त छोड़ रखे थे, जो उस विषय के विद्वानों के उद्‌गारों से भरे जाने थे, लेकिन समयाभाव या और संकट के कारण ऐसा न हो पाया । अब प्रकाशित होने वाले इस रूपक को मैंने उसी रूप में रहने दिया है, जैसा यह लिखा गया था । प्रसारित होने वाले रूपक से इन अंशों को इसलिए हटा दिया था, कि वहाँ विद्वान बोले, मैं नहीं । त्रियोदश खण्ड में भी मूल को ही रख दिया है, प्रसारित हुए अंगुल भर अंश को हटा कर।

वैसे यह रेडियो रूपक इतिहास का ही शरीर और मन रखता है, लेकिन इतिहास कहीं से नहीं लगता, तो इसलिए कि इसमें क्रमबद्धता और सुसम्बद्धता की अवहेलना है, क्योंकि इतिहास प्रस्तुति का लोभ रहा भी, तो पूरा-पूरा नहीं । इस रूपक का महाभाव तो अंगदेश में बार-बार अमृत की हुई खोजों की खोज ही है, जिसमें भी अधूरा-अधूरा ही मैं सफल रहा हूँ । उसमें जो कुछ भी खोज है, उसके पीछे—सभ्यता का आदि बिन्दु : राढ़ (श्री प्रभात रंजन सरकार), प्राङमौर्य बिहार (डॉ. देवसहाय त्रिवेद), हिस्ट्री ऑफ बिहार (राधाकृष्ण चौधरी), संस्कृति के चार अध्याय (रामधारी सिंह दिनकर), मंदार परिचय (डॉ. अभयकान्त चौधरी), बिहार एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन (जयचन्द विद्यालंकार), वृहत्तर भारत (डॉ. आर. सी. मजुमदार), झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति (डॉ. बी. वीरोत्तम), अंग संस्कृति के दो अध्याय (कनक लाल चौधरी कणीक), बिहार की नदियाँ (हवलदार त्रिपाठी सहृदय), तिब्बत में सवा वर्ष (राहुल सांकृत्यायन), बौद्ध धर्म और बिहार (हवलदार त्रिपाठी सहृदय), लोकगाथा परिचय (नलिन विलोचन शर्मा), अंगिका संस्कार गीत (पं. बैजनाथ पाण्डेय, राधावल्लभ शर्मा), सरहपाद (विश्वम्भरनाथ उपाध्याय), कहलगाँव का इतिहास (डॉ. विनय प्रसाद गुप्त), वैदिक संस्कृति : पौराणिक प्रभाव (आचार्य चतुरसेन शास्त्री), जमुई का इतिहास (डॉ. श्यामानन्द प्रसाद), मुंगेर का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल (रामरघुवीर), प्राचीन चम्पा (ज्योतिष शर्मा), कर्ण (ज्योतिष शर्मा), मधेपुरा में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास (हरिशंकर श्रीवास्तव शलभ), बिहार में स्वाधीनता आन्दोलन (डॉ. के. के. दत्त), आजादी की जंग : बिहार के मशहूर क्रांतिकारी (डॉ. नागेन्द्र मोहन प्रसाद श्रीवास्तव), कठोपनिषद् (हिन्दी व्याख्याकार : आचार्य डॉ. सुरेन्द्रदेव शास्त्री), महाभारत, श्रीमद्वाल्मीकिय रामायण जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकों के अध्ययन का सम्बल ही रहा है। भागलपुर, मुंगेर और संथाल परगना के गजेटियरों ने जो मदद की, वह तो अलग से, और निस्संदेह, अपभ्रंश भारती, अंगिका लोक, अंगप्रिया (वर्ष-छः, अंक-एक), पत्रिकाओं

ने भी मेरे इस रूपक को लावण्य देने में कम मदद नहीं की है, यह तो मैं निःसंकोच कहूँगा ।

और जहाँ तक इस प्रसारित रेडियो रूपक की भव्यता-दिव्यता का प्रश्न है, वह तो सम्पूर्ण रूप से भागलपुर आकाशवाणी के नाटक विभाग के कार्यक्रम अधिशासी डॉ. किशोर सिन्हा की गंभीर नाट्य प्रतिभा के कारण ही आ पायी थी । वैसे मैं आभारी तो इस रेडियो रूपक में अभिनय करने वाले सभी कलाकारों के साथ डॉ. विजय कुमार मिश्र और अणिमा कुमारी का विशेष रूप से हूँ, जिन्होंने सूत्रधार और वाचिका की भूमिका में, अपने स्वर से जैसे अमृत-सागर ही मथ दिया हो । प्रसारण के बाद इस रेडियो रूपक का प्रकाशन भी होना, ऐसा लग रहा है, जैसे मातृभूमि और मातृऋण से इकन्नी भर ही सही, मुक्त हो रहा हूँ।

—अमरेन्द्र

नवान्न, 1 दिसम्बर 2011

विषय-क्रम

1. अग्नि-पिण्ड से ऊपर उठता महाद्वीप/११
2. असुरों का ऐश्वर्य और देवताओं की दीप्ति/२०
3. राजा रोमपाद का राज्य : पृथ्वी पर पुण्यलोक की पृष्ठभूमि/३१
4. महासंग्राम का महाबली कर्ण/४०
5. तीर्थंकरों के धाम में बुद्धं शरणं गच्छामि/५०
6. काया बेध अमृत झरै/६१
7. स्थापत्य की आत्मा/७०
8. अंगप्रदेश का कृष्ण विवर : अंगिका लोकगाथा/८४
9. स्वतंत्रता संग्राम का पाञ्चजन्य : तिलकामांझी/९४
10. सागर के पार आजादी का स्वप्न/१०५
11. अंगप्रदेश का रूद्रावतार/११३
12. नदियों की लीलाभूमि का प्रदेश/१२३
13. जाग मछन्दर गोरख आया/१३४

अमृतदेश : अंगप्रदेश

अमृतदेश : अंगप्रदेश

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत

अंगदेश का अमृत मंथन,
आदि, मध्य, भवितव्य चिरन्तन ।

जिसके सम्मुख झुका प्रलय-बल
जिसको अमृत का है संबल
महाबली बली-कर्ण-भूमि यह
क्रांति पुरुष, सरिता का कलकल
देश विपद पर महाप्रभंजन ।

गहन निशा में इन्दु मनोहर

प्रखर धूप में छाया-अम्बर
शून्य लोक में पिण्ड प्राण का
आशाओं-सपनों का स्वयंवर
शरत रितु का चंचल खंजन ।

(शंख की गुरु गंभीर ध्वनि)

सूत्रधार : यह धारावाहिक अंग प्रदेश का वृत्तचित्र है, यानी स्वर्ण कलश में बंद सूरज की फूटती रश्मियों को मुट्ठी में समेटने का प्रयास ।

अंगप्रदेश सृष्टि और संस्कृति की जन्मकथा का इतिहास है;

एक ऐसी कथा का इतिहास भी, जिसने जलप्रलय के भीषण आघातों को बार-बार सहा, और बार-बार समुद्र के पार के देशों में भारत की संस्कृति का राज्य बसाया । समुद्र की लहरों पर जिस अंगप्रदेश का इतिहास लिखा हुआ है, यह धारावाहिक उसी प्रकाश की बूंद का वृत्तचित्र है ।

अंगप्रदेश, जो सदियों से वेदों, उपनिषदों, पुराणों और जैन-बुद्ध की वाणियों से झंकृत होता रहा है; जो प्रदेश, भारत के कई महान ऋषियों की जन्मभूमि है, और भारतीय संस्कृति के निर्माण में अंगदेश के जिन नरेशों और नारियों की अमूल्य भूमिकाएं रहीं, यह ध ाारावाहिक उस महान अंग संस्कृति का वृत्तचित्र है ।

यह धारावाहिक वृत्तचित्र है, उस अंगप्रदेश का, जो आज भी धरती पर मनुष्य के महान आदर्शों की खोज में है, जिसने सृष्टि के जीवकाल में भी अमृत मंथन किया था, जो आज भी कर रहा है ।

जलप्लावन का अनियंत्रित भीषण शोर दूरागत गूंज में तब्दील

वाचक : आकाश तक उठते उत्ताल तरंगों वाला जलप्लावन की यह घटना लाख दो लाख वर्ष पूर्व की नहीं है, प्रकृति की इस महालीला की कथा करोड़ों-करोड़ वर्ष पूर्व की है, जब पृथ्वी पर जीव का कहीं अंश भर भी नहीं था । अगर कहीं कुछ था, तो वही जलप्रलय का दृश्य; सर्वव्यापी महासमुद्र का भीषण महागर्जन ।

जलप्लावन का उभरता भीषण अनियंत्रित शोर, जो क्रमशः शांत होता है

वाचिका : पृथ्वी पर इस भीषण जल-प्लावन के भी करोड़ों-करोड़ वर्ष पूर्व यह पृथ्वी सौरमण्डल से अलग होकर सिर्फ दहकते हुए द्रव का अग्निपिण्ड थी । करोड़ों-करोड़ वर्ष पृथ्वी अपने इसी अजीवकल्प के युग में स्पन्दनहीन बनी रही ।

वाचक : पृथ्वी का अग्निपिण्ड इस करोडों-करोड़ वर्ष की अवधि के बीच अपने ताप को छोड़ता गया, जिसके कारण पृथ्वी का खौलता द्रव शीतल हो होकर एक मोटी पपड़ी में जमता गया । पृथ्वी पर पहली बार जमी यह पपड़ी यानी पातालीय चट्टान अब पाताल में पड़ी हुई है ।

वाचिका : और पृथ्वी ठण्डी होती गई, तो इससे उठती अतुलनीय भाप भी कालान्तर में शीतल होकर बादलों में बदलने लगी । बादल भी ऐसे-वैसे नहीं,

महाप्रलय को ला देने वाले मेघ, और जैसे, हजारों-हजार बादल एक साथ फट रहे हों; वातावरण में जमते वे बादल फिर शीतल होकर बरस पड़े। धरती पर जलप्लावन का महाविनाश फिर फूट पड़ा ।

बिजली की कड़क :
बारिश और जलप्लावन ध्वनि-प्रभाव

वाचक : अपने में सागर को समेटे ऐसे बादल, पृथ्वी को लाख दो लाख वर्ष नहीं, करोड़ों-करोड़ वर्ष घेरे रहे । बादल फटते रहे और धरती पर महाप्रलय का शोर होता रहा ।

पूर्व ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : भीषण उष्मा और शीत की उस अवधि में अविराम पातालीय संघर्ष के परिणामस्वरूप पृथ्वीपर पड़ी आरम्भिक चट्टानें भी टूटने लगीं, उसमें दरारें पड़ने लगीं । समुद्र में टूटी चट्टानों के कण जमने लगे। फिर वे कण भी करोड़ों वर्ष के अन्तराल में परिवर्तित होकर पत्थरों में बदल गये ।

वाचक : लेकिन पृथ्वी के भीतर की हलचलें थमी नहीं थीं । इन्हीं हलचलों के कारण समुद्र के नीचे बनी चट्टानें कहीं-कहीं समुद्र तक उठ आईं । पातालीय पर्वत पर बर्फ की ऊँची-ऊँची चोटियाँ चढ़ गईं । बर्फ के प्रदेश में नये जीवों का विकास हुआ । नये जीवों पर फिर प्रलय के मेघ उमड़े ।

फिर वही विनाश का दृश्य

वाचिका : पुराणों में भी उल्लखित है कि जलप्रलय कई हुए । कई मनु हुए । सृष्टि कई बार उजड़ी, कई बार फिर बसी। इस बात की जानकारी हमें चट्टानों में सुरक्षित पड़े जीवाश्मों से मिलती है ।

वाचक : इसी जीवाश्म के परीक्षण के बाद ही यह ऐतिहासिक और भौगोलिक तथ्य प्रकट हुआ कि अविभाज्य बिहार के पुराने भागलपुर प्रमण्डल के राजमहल और मुंगेर की चट्टानें पातालीय चट्टानों के ही अवशेष हैं। अंगप्रदेश के ये क्षेत्र पहली बार समुद्र के नीचे दबे पातालीय पर्वत की दरारों के बीच जम रहे पर्वतीय कणों से बने क्षेत्र हैं ।

वाचिका : और इन क्षेत्रों की चट्टानों में दबे जीवाश्म इस कथा को उन्मुक्त स्वर से कह रहे हैं कि धरती पर जब जीव अपने अस्तित्व के लिए बेचैन हो रहा था, तब अंगप्रदेश की रक्त मृतिका ने ही अपनी शरण दी थी ।

चिड़ियों, हाथियों, सिहों का ध्वनि-प्रभाव

वाचक : रक्त मृतिका यानी लाल मिट्टी; जिसे ही चीनी भाषा में लाति कहा गया है, और ग्रीक भाषा में रिडि । आर्यों ने इसको नाम दिया राट्ट, और यह लाति, रिडि, राट्ट अपभ्रंश में राढ़ि, राढ़ हो गया । इतिहास में रक्त मृतिका का अंगप्रदेश, राढ़प्रदेश के नाम से भी जाना गया है ।

वाचिका : यह रक्त मृतिका पातालीय चट्टानों के टूटे कणों का समूह है, जो कण कालान्तर में लाल मिट्टी की परतों में परिवर्तित हो गये ।

वाचक : आरम्भ में यह रक्त मृतिका जहाँ-जहाँ तक जमी होगी, उसे एक द्वीप, एक देश के नाम से जाना गया होगा । शायद इसी कारण अंगप्रदेश को पुराणों में अंगदेश और अंगद्वीप के ही नाम से जाना गया है ।

वाचिका : यह अंगप्रदेश तब अपने निर्माण काल में चारों ओर से समुद्र से घिरा था, और समुद्र के बीच पातालीय चट्टानों से बना एक पर्वत प्रदेश था, यानी अंगप्रदेश !

वाचक : यह कथा तब की है, जब हिमालय का निर्माण नहीं हुआ था। हिमालय तो पृथ्वी के विकास के द्वितीय चरण की कड़ी में आता है । हिमालय को तो, दक्षिण भारत से लेकर अंगप्रदेश तक फैली एक विस्तृत शिला के भयंकर टक्कर ने ऊपर किया था । हिमालय तो जीवित पत्थरों का युवा पर्वत है, और अंगप्रदेश के पठार करोड़ों-करोड़ वर्ष पूर्व मरे पत्थरों के पिरामिड ।

वाचिका : जब हिमालय को ऊपर उठाने के लिए इस पातालीय भूमि ने ताकत लगाई थी, तब इस क्रम में इसके कुछ भाग ऊपर हो गये थे । विन्ध्याचल पर्वतमाला उसी इतिहास को कहती कथा है, और अंगप्रदेश के मध्य में शिवलिंग के आकार में ऊँचा सिर उठाए मन्द्राचल पर्वत भी उसी भौगोलिक महाघटना का साक्षी है।

वाचक : मन्द्राचल पर्वत । पुराण का पर्वत । सृष्टि की जन्मकथा को कहता पर्वत । मानव के क्रमिक विकास का मूक वाचन करता पर्वत । मंदार यानी इतिहास का वह पर्वत, जो अंगप्रदेश में मध्य एशिया से आ रहे मानव समूह के साथ अंग के वासियों के साथ संधि का घोषणा पत्र भी है ।

वाचिका : वेद, पुराण, इतिहास ने अपने-अपने ढंग से अंगप्रदेश और अंगवासियों को अपनी भाषा में पुकारा है । कहने के लिए तो इतिहासकारों ने

अंगद्वीप के मूलवासियों को असुर तक कहा है ।

वाचक : ऐसा कहना शायद स्वाभाविक भी था । सृष्टि के आरम्भकाल की पृथ्वी का वह भीषण ताप और कठिन संघर्ष ने उनके शरीर को ताँबें के रंग-सा बना दिया था । प्रकृति के साथ घोर संघर्ष ने उनके शरीर को लौह-पत्थर-सा सख्त बना दिया था, और ऐसे में शरीर को बलिष्ठ बनाने की ही बातें वे ज्यादा सोचते थे ।

वाचिका : इस शरीर को कैसे हमेशा-हमेशा के लिए कायम रखा जा सकता है, इसी खोज में उन्होंने ऐसे रसायन की खोज भी कर ली थी, जिसे अमृत कहा गया ।

वाचक : देह को कैसे अमर रखा जा सकता है—इसकी जानकारी असुरों के गुरुओं के पास थी । शुक्राचार्य ने तो इसके लिए मंत्र भी गढ़े थे, जिसके कारण ही वृहस्पति के पुत्र कच के प्राणों की रक्षा हो सकी। इसी मंत्र को पाने के लिए कच ने असुरों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से प्रेम का अभिनय किया था ।

वाचिका : यह अस्वाभाविक नहीं लगता कि असुरों से अमृत छीन लेने के लिए ही सुरों ने समुद्र-मंथन की संधि की हो, और अंगद्वीप के गर्भ में छिपे सभी रत्नों को एक-एक कर अपने हिस्से में कर लिया हो ।

वाचक : जो हो, समुद्र मंथन के लिए जिस पर्वत को चुना गया, वह है—बालिसानगर का मंद्राचल पर्वत । आधुनिक काल का बौंसी अंचल, पुराण काल का बालिसानगर ही है ।

वाचिका : महाभारत में इस पर्वत को मेरू पर्वत कहा गया है, जो तेज आभा से चमकीला है। इसकी सुनहली आभा से सूर्य की रश्मियाँ फीकी पड़ जाती हैं । इसकी गगनचुम्बी चोटियाँ रत्नों से खचित हैं ।

वाचक : तब बालिसानगर का यह मन्दार पर्वत भी बर्फ की मोटी चादर से ढका होगा, जिस बर्फ पर पड़नेवाली सूर्य की किरणें इसे सुमेरू बना देती होंगी । तब यह मन्दार सबसे ज्यादा ऊँचा उठा होगा । जपमाला में गुंथा अग्र भाग के मनके की तरह । इसी से यह सुमेरू भी कहा गया होगा ।

वाचिका : यह मेरू मन्दार ग्यारह हजार योजन ऊँचा, और उतना ही नीचे धँसा हुआ था।

वाचक : मन्दार पातालीय पर्वत है, और इसीसे पृथ्वी के बहुत भीतर तक धंसे होने की बात अस्वाभाविक नहीं है । कई बार के हिमयुग, जलप्लावन,

भीषण झंझावत ने आज मन्द्राचल को भले छोटा कर दिया है, लेकिन कभी यह आकाश को छूता प्रतीत होता होगा जिससे समुद्र मंथन हुआ ।

वाचिका : तब क्या सचमुच में इन्द्र के पास कोई ऐसा मंत्र था, जिससे ऐसे पर्वत को उखाड़ा जा सके, और रस्सी पर लट्टू की तरह घुमाया जा सके ?

वाचक : अगर समुद्र-मंथन की कथा से अतिशयोक्ति के कुछ अंश को हटा दिया जाय, तो अंगद्वीप पर घटी समुद्र-मंथन की कथा झूठी नहीं लगती। संभव है, असुरों के नेता इन्द्र ने पर्वत को विचलित करने का कोई यंत्र आविष्कृत किया हो । कुछ इतिहासकारों का यह अनुमान है कि इन्द्र अनार्य थे ।

वाचिका : संभव नहीं कि इन्द्र ने विशाल सर्प के आकार का कोई यंत्र निर्मित किया हो, जिसे मंदार पर्वत से बांधकर जब सुर और असुर अत्यधिक वेग से घूम रहे होंगे, तब उन्हें यही लगा रहा होगा कि पर्वत ही तेजी से घूम रहा है । विज्ञान के गति-नियम के अनुसार यह गलत नहीं लगता । यह भी गलत नहीं लगता कि असुरों में वह यंत्र बासुकी नाग के नाम से प्रचलित हो, जिस पर चढ़ कर देव और दानवों ने समुद्र मंथन किया था ।

वाचक : जो भी हो। समुद्र मंथन होते ही सम्पूर्ण अंग द्वीप में भीषण जलसंघात प्रारम्भ हो गया । लगा, फिर एक बार शांत सागर में भयावह जल प्लावन प्रारम्भ हो गया हो, और अंगद्वीप पर फिर भीषण जलप्रवाह का उत्पात खड़ा हो गया हो ।

पूर्व ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : यह प्रश्न सहज ही मन में उठता है कि इस समुद्र मंथन के लिए देवताओं ने मन्दार को ही क्यों चुना ?

वाचक : इसका एक प्रमुख कारण तो यही है कि यह मन्द्राचल पर्वत अद्‌भुत जड़ी-बुटियों का केन्द्र था, जिसकी औषधि से निकलने वाला रस पुनर्जीवन देने वाला था ।

वाचिका : महाभारत में उल्लेख है कि जब समुद्र-मंथन हो रहा था, तब पर्वत पर खड़े वृक्ष उखड़ने लगे, उनसे निकलने वाले रस से जब देवताओं का स्पर्श हुआ, तो उन्हें लगा कि उन्हें पुनर्जीवन मिल गया है । यह भी उल्लेख है कि उन उत्तम रसों को प्राप्त कर समुद्र का जल दूध की तरह उज्जवल हो उठा ।

वाचक : भगवान विष्णु के क्षीर सागर में शयन करने की बात पौराणिक है । विद्वानों का यह भी मत है कि बालिसा नगर में बहने वाली चीर नदी ही कभी क्षीर नदी, क्षीर सागर था, यह अस्वाभाविक भी नहीं लगता; कभी चीर का जल मन्दार पर्वत की औषधियों से निकलने वाले रस के कारण दूध के समान उज्जवल होता रहा होगा, और इसकी इसी खूबसूरती के कारण विष्णु ने चीर नदी यानी उथले सागर के किनारे को अपना आश्रय बनाया ।

वाचिका : क्षीर सागर पर अपना आश्रय बनाने से यह स्पष्ट होता है कि तब तक इस अंगप्रदेश में आर्यों का प्रवेश हो चुका था ।

वाचक : और पौराणिक शब्दावली में कहें, तो जब सुरों-असुरों द्वारा समुद्र मंथन शुरू हुआ, तो इससे रत्न आकाश में दिव्य नक्षत्रों की तरह ऊपर आने लगे । उनमें चन्द्रमा, लक्ष्मी, सुरा देवी, उच्चैःश्रवा अश्व, कौस्तुभ मणि भी थे ।

वाचिका : ये सभी रत्न आकाश मार्ग से होते देवताओं के पास चले गये । यानी असुरों को बिना जानकारी के सुरों ने प्राप्त कर किया ।

वाचक : समुद्र मंथन का उत्साह बढ़ गया था । तब दिव्य देहधारी धन्वन्तरी प्रकट हुए । श्वेत दन्त का एरावत हाथी प्रकट हुआ । और आखिर में प्रकट हो गया वह कालकूट हलाहल ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : धरती, देव, दानव सब दग्ध हो उठे । लगा, सृष्टि पुनः जलते तरल द्रव के पिण्ड में बदल जायेगी ।

करुण संगीत-प्रभाव

वाचक : तभी सृष्टि के आदि महादेव शिव प्रकट हुए, और उन्होंने हलाहल का पान कर लिया। ताम्रवर्णी शिव विष के प्रभाव से और भी श्याम पड़ गये।

वाचिका : महाशिव आदि देव हैं, जो सृष्टि के प्रथम भूखंड के निवासियों के रक्षार्थ प्रकट हुए थे । पुराणों में उल्लेख है कि मन्द्राचल पर्वत ही महादेव का भद्रासन है । महाशिव का आदि निवास । इतिहासकारों ने भी शिव को आर्यावर्त के इसी पूर्वी क्षेत्र का आदि ईश्वर स्वीकार किया है ।

वाचक : जो अपनी समदृष्टि के कारण देवताओं के भी पूज्य बन गये थे । महादेव के विषपान से दानव ही नहीं, देवता भी कालकूट की ज्वाला

में दग्ध होने से बच गये ।

वाचिका : लेकिन इस समुद्र मंथन में असुरों को कुछ भी हासिल न हो सका । जिस अमृत के पान से असुर हजारों वर्ष तक जी सकते थे; सिर से अलग हो जाने के बाद भी युद्ध में स्थिर रह सकते थे; वह अमृत इस समुद्र-मंथन में वे हार चुके थे । अभी कुछ और की प्राप्ति होती, इसके पूर्व ही अमृत को लेकर सुर और असुर में संघर्ष छिड़ गया । असुर अमृत को अपने पास रखना चाहते थे, लेकिन देवता इसके लिए किसी तरह तैयार न थे ।

वाचक : आखिर देवताओं में विष्णु ने एक चाल चली । उन्होंने मोहिनी का रूप धारण किया । ऐसी मोहिनी का रूप, जिसके समक्ष असुरों को अमृत का मोह भी तुच्छ लगे ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

मध्यम गति में बजती पायलों की झंकार

कई स्वर : आह ! कैसा अपूर्व रूप है, जैसे स्वर्ग से कोई अप्सरा अनायास उतर आई हो ।

स्वर एक : यह अप्सरा मेरे लिए है, मुझे प्राप्त होना चाहिए

स्वर दो : नहीं, यह भुवनमोहिनी मेरे लिए है, मैं उसे प्राप्त करूँगा ।

कई स्वर : नहीं, मेरे सिवा इसे कोई नहीं प्राप्त कर सकता ।

दूर होती झंकार : युवती की मृदुल हंसी

स्वर एक : अरे, इस तरह तुम मुझसे दूर क्यों होती जा रही हो, मैं तुम्हारे लिए सारे मोह को छोड़ने के लिए तैयार हूँ ।

राहू : (गुरु गंभीर स्वर) यह तो हमलोगों के साथ छल हो रहा है । सभी देवता अमृत का पान कर रहे हैं, और मेरे बन्धु-बान्धव मोहिनी के रूप-जाल में बद्ध होकर चेतना शून्य हो रहे हैं । नहीं, मैं इस रूप-जाल में नहीं फँस सकता । (फुसफुसाहट) मैं चुपके से देवताओं के बीच घुस जाता हूँ, और अमृत का पान कर लेता हूँ । लेकिन चन्द्रमा से बच कर निकलना होगा, उसकी नजर मुझ पर ही लगी हुई है ।

ध्वनि प्रभाव

चन्द्रमा : (चीखने का स्वर) सावधान, राहू देवताओं की भीड़ में घुस गया है । उसने अमृत की धार मुँह से लगा ली है । उसे मारो-मारो ।

मारो-मारो की एक साथ कई आवाजें

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

वाचिका : और इस तरह विष्णु के चक्र से राहू का शिरोच्छेद हो गया ।

वाचक : लेकिन विरोध का यही अन्त नहीं हो गया। विष्णु के दो अंगरक्षक मधु और कैटव ने राहू की हत्या का विरोध किया, और विष्णु से वर्षों युद्ध करते रहे । आखिर मधु-कैटव भी विष्णु के हाथों ही मारे गये।

वाचिका : राक्षसराज मधु, सर से कटकर भी, युद्ध कर रहा था । यह देखकर देवता विष्णु ने उसके धड़ को मन्दार पर्वत के नीचे दबा दिया, और स्वयं पर्वत पर बैठ गए ।

वाचक : अंगप्रदेश की नाभि पर खड़ा मन्दार पर्वत, व्यास की तरह,अंग की बहुत सी कथाएँ कहने के लिए बेचैन है, लेकिन किसी एकदन्त दयाविन्त इतिहासकार के पास वह कलम नहीं, जिससे सारी अकथ कथाएँ लिखी जा सके ।

शीर्षक गीत के साथ

समाप्ति संगीत

आरम्भिक संगीत के साथ शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : पृथ्वी का जन्म; पृथ्वी पर द्वीप की तरह, हिमसमुद्र के बीच, अंगद्वीप का प्रकटना; इस द्वीप पर मानव-जन्म के साथ आदिदेव शिव का आविर्भाव, और द्वीपवासियों के साथ मिलकर देवताओं का समुद्र-मंथन। धारावाहिक के प्रथम खण्ड में इस इतिहास के बाद अब प्रस्तुत है—अंग की धरती पर सुरों और असुरों का विचार-मंथन ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : सृष्टि के आरम्भ में पाताल को फाड़कर निकलने वाली अंग की धरा अपने जीवकाल में कहाँ-से-कहाँ तक व्याप्त थी; यह ठीक-ठीक बताना एकदम कठिन है ।

वाचिका : और अपने जीवकाल के आरम्भ में इस विशाल पातालीय भूखण्ड का नाम भी क्या रहा होगा, इसे भी ठीक-ठीक कहना मुश्किल ही है ।

वाचक : लेकिन वेदों में वर्णित देवताओं से यह ज्ञात होता ही है कि अंग अपने सांस्कृतिक उत्कर्ष को लेकर वेदकाल में भी वैसा ही प्रखर रहा, जैसा, रामायण काल में, महाभारत काल में, और जैसा कि जैन और बुद्ध के काल में भी ।

वाचिका : वेद के प्रमुख देवताओं में रुद्र, सोम, और इन्द्र का सीधा सम्बन्ध इसी अंगप्रदेश से है।

वाचक : शुक्ल यजुर्वेदीय संहिता में जिस रुद्र को रक्तवर्णी और विविध रूप धारण करनेवाला तथा चर्माम्बर धारी के साथ पर्वत पर निवास करने वाला बताया गया है, वह शिव का ही दूसरा रूप है । रुद्र घोर और अघोर दोनों हैं । घोर रूप में विध्वंशक पशु-सा संहारक हैं, और अघोर रूप में वही कल्याणकारी बन जाते हैं ।

वाचिका : असु नामक प्राणों से धनरूप होने के कारण ही रुद्र 'असुर' भी कहाए। वेद का यह देवता अंगप्रदेश में बसनेवाली असुर प्रजाओं का ही आदिदेव है ।

वाचक : और वेद का सोम कोई पुरुष देवता नहीं, यह वही औषधि है, जिसे अमृत भी कहा गया है, और जो अंग की भूमि पर समुद्र-मंथन से

देवताओं ने प्राप्त किया था । यह सोम, इन्द्र को बहुत प्रिय है ।

वाचिका : इसी कारण इन्द्र को 'सोमपा' भी कहा गया है । अंग से सोम का संबंध और सोम से इन्द्र के गहरे सम्बन्ध को देखते हुए यह सहज ही समझा जा सकता है कि वेद ने जिन देवताओं की प्रशंसा में मंत्र गाये हैं, उनमें अंग के देवता भी शामिल हैं ।

(एक भयावह चीख, और उन्माद पूर्ण अट्टहास)

वाचिका : असुरों के गढ़ को ध्वस्त करने और आर्यों के बीच बाँट देने या ऋग्वेद के कई मण्डलों में इन्द्र की स्तुति से, इन्द्र को आँख मूँद कर आर्य देवता स्वीकारना संगत नहीं, क्योंकि कई ऋषियों के साथ इन्द्र का दुराचार भी जगजाहिर है । लगता है कि किसी बात के मतभेद के कारण या आर्यीकरण के बाद, इन्द्र लिंगोपासक असुरों का घोर विरोधी हो गया था, और असुरों की लूटी गयी सम्पत्ति को वह आर्यों में बाँट देता था । ऋग्वेद के मण्डलों में इन्द्र की स्तुति का कारण भी यही है । इतिहासकार डॉ. अभयकान्त चौधरी ने लिखा है कि इन्द्र असुरों के देवता थे, और असुरों के इस देवता को आर्यों ने अपना लिया था । असुर लिंगोपासक थे, और लगता तो यही है कि वैदिक काल के बहुत पूर्व से अंगप्रदेश के लिंगोपासक असुर, पर्वतों को ही लिंग रूप में पूजते रहे होंगे ।

वाचक : वैदिक देवताओं में और अन्य प्रमुख देवता हैं—अग्नि, सवित, वृहस्पति, अश्विनी, वरुण, उषस और विष्णु ।

वाचिका : अंगप्रदेश का बालिशा नगर का दूसरा नाम मधुसूदन नगर ही है । यहाँ बहती हुई चीर नदी और मन्दार पर्वत, भगवान विष्णु के क्षीर सागर और दानव मधु के वध की कथा को कहते आज भी अवस्थित हैं ।

वाचक : मधु-कैटभ दोनों असुर भाई थे, और विष्णु के प्रहरी भी; लेकिन राहू की हत्या से दोनों भाई उग्र हो कर विष्णु से विद्रोह कर बैठे ।

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

अट्हास की गूंज

मधु : विष्णु, आज से मैं तुम्हारा प्रहरी नहीं, बैरी हूँ बैरी । मैं तुमसे युद्ध करने के लिए तैयार हूँ ।

कैटभ : हाँ, हाँ, मैं भी (अट्टहास) मैं अभी एक ही कुठाराघात से तुम्हे इस समुद्र के नीचे सुला दूँगा । कैटभ की ताकत से तुम परिचित नहीं।

विष्णु : (उग्र स्वर) कैटभ, तुम्हारे इस नीच वचन का दंड मैं अभी देता हूँ ।

(चक्र की गतिध्वनि और एक भयंकर चीख के साथ, जैसे भारी चीज के गिरने की ध्वनि)

मधु : (उदण्ड क्रोध से) अरे, तुमने मेरे अनुज का शिरोच्छेद कर दिया; ठहरो, मैं तुम्हें अभी धराशायी करता हूँ ।

(अस्त्रों की टकराहट)

विष्णु : लगता है, सुदर्शन के प्रयोग के बिना यह भी वश में नहीं होगा। लो!

(चक्र की ध्वनि, चीख; फिर अट्टहास)

विष्णु : अरे, यह तो सिर से अलग होकर भी युद्ध के लिए उठ खड़ा हो गया है। अब इसे इसी मन्दार पर्वत के नीचे दबा देना होगा । संभव है, उस हाल में भी यह बलशाली बाहर निकल आये । क्यों न मैं मंदार पर्वत के ऊपर बैठ जाऊँ, और अपने पाँवों से पर्वत को ही दबाए रहूँ।

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

वाचिका : और तब से, क्षीर सागर छोड़कर, विष्णु मंदार पर्वत को दबाए बैठे हैं।

वाचक : इस पौराणिक कथा में लोककथा की चाहे जितनी भी बातें हों, विष्णु से बालिसा के संबंध को किसी तरह भी नहीं अलगाया जा सकता । वेद भी विष्णु को इन्द्र का साथी कहता है, और एक ही काल में, एक ही स्थल के दो देवताओं में गाढ़ी निकटता होने में आश्चर्य भी क्या है ।

वाचिका : यही नहीं, वेद में मंत्रों को जोड़ने वाले ऋषि अंगिरस का संबंध अंगदेश से ही बताया गया है । आदि में केवल चार ही गोत्र थे—भृगु, अंगिरा, वशिष्ठ, और कश्यप । ऋग्वेद के प्रथम मंडल में कुल १६१ सुक्तों में ११६ सुक्त अंगिरस के ही हैं ।

वाचक : गौतम और भारद्वाज अंगिरा वंश के ही थे और काण्व भी अंगिरस हैं।

वाचिका : ऋग्वेद में अंगिरस और इनके वंशजों की स्तुति की गई है, और यह भी कहा गया है कि यह इन्द्र के मित्र हैं । यह भी उल्लखित है कि अंगिरस को ही पहले-पहल यज्ञ की प्रक्रिया सूझी, और उन्होंने ही पहले-पहल यह जाना कि अग्नि काठ में स्थित होती है ।

(वैदिक मंत्रों का उच्चार)

वाचक : अंगिरस ऋषि वैशाली कुल के परम्परागत पुरोहित होते थे । राजा करन्धम के पुरोहित अंगिरस का लड़का उषिज अंगिरस ही था ।

उसके तीन पुत्र हुए—उचाथ्य, वृहस्पति और संवर्त । हैहयों के डर से जब काशीराज दिवोदास भाग खड़े हुये थे, तब अंगिरसों ने ही शरण दी थी।

वाचिका : और इसी कारण दिवोदास ने अंगिरस को अपना पुरोहित बना दिया था ।

वाचक : अथर्ववेद तो सम्पूर्ण रूप से अंगिरस की ही कृति है, जिसमें इन्द्र की स्तुति की प्रमुखता है । इसी कारण इन्द्र ने इसकी घोषणा की थी कि इस वेद को अथर्वांगिरस कहा जायेगा, और अंगिरस को ही यज्ञ का बलिभाग मिलेगा ।

वाचिका : इस अथर्ववेद को भले ही महाभारत द्वारा उच्चासन मिला हो; लेकिन अनेक विद्वानों ने इसे वेदों का सम्मान देने में संकोच ही प्रकट किया है। क्योंकि अंगिरस अंग के ऋषिकुल में थे, और वेद में अंग-मगध के प्रति घृणा को इस तरह व्यक्त किया गया है कि—हे रोग, तुम गान्धार, अंग, मगध जैसे देशों में चले जाओ !

नेपथ्य-स्वर—गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः

वाचक : यह सूक्त अथर्ववेद का ही है, लेकिन क्या यह विश्वास किया जा सकता है कि अंगप्रदेश का कोई ऋषिकुल, अंग के लिए ही, ऐसी उक्ति कर सकता है ! ऐसा कथन किसी प्रतिस्पर्धा के कारण ही हो सकता है ।

वाचिका : अथर्ववेद, रुद्र की स्तुति का वेद है, और रुद्र व्रात्यों के प्रमुख देवता हैं । यह बताने की जरूरत नहीं कि व्रात्य धर्म सम्पूर्ण अंगप्रदेश के साथ मगध और विदेह में भी व्याप्त था ।

वाचक : और व्रात्यों के प्रति वैदिक ऋषियों का सोच उदार नहीं था, यह महाभारत के श्लोकों से भी उजागर है ।

वाचिका : अंगिरा, अंगिरस ऋषिकुल के नाम से ही स्पष्ट है कि अंगदेश का नाम वेदकाल में ही स्थापित हो गया था। इतिहासकार डॉ. राधाकृष्ण चौधरी ने 'हिस्ट्री ऑफ बिहार' में लिखा है कि अंग की स्थापना मध्य ऋग्वेद के काल के पूर्व में ही हो चुकी थी। वैसे इस प्रदेश का नाम अंग क्यों हुआ, इस संबंध में कई पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं; जिसमें एक तो आदिदेव रुद्र यानि शिव से ही जुड़ी हुई है ।

वाचक : बाल्मीकि रामायण के अनुसार शिव के क्रोध के कारण, भयभीत होकर भागते कामदेव का अंग जिस स्थान पर भस्मीभूत हुआ था, उस

स्थान का नाम अंग पड़ गया ।

वाचिका : इतिहासकार 'शलभ' ने कोशी अंचल के कन्दाहा को ही वह पौराणिक स्थल माना है, जहाँ शिव के क्रोध से कामदेव अनंग हुआ था, और इनके अनुसार; कन्दर्प के दहन का स्थल 'कन्दाहा' ही मूल अंग प्रदेश है ।

वाचक : वेद के सुक्तों से यह प्रकट होता है कि रुद्र का रूप सूर्य की तरह प्रकाशमान था ।

वाचिका : और इसी कारण कन्दाहा में सूर्य मंदिर की स्थापना भी की गई हो, तो आश्चर्य नहीं। यह सूर्य मंदिर रुद्र की तीसरी आँख से निकलने वाले उस तेज प्रकाश का भी प्रतीक है ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचक : वैसे बौद्ध ग्रंथ 'दीर्घ निकाय' तो यही कहता है कि अपने शारीरिक सौष्ठव को लेकर ही यह भूखण्ड 'अंग' कहलाता था। लेकिन सर्वाधिक प्रचलित, पौराणिक और ऐतिहासिक मान्यता यही है कि सम्राट बलि के ज्येष्ठ पुत्र अंग ने, अपने नाम पर, इस पातालीय भूखण्ड का नाम अंग रक्खा था ।

वाचक : राजा अंग के साम्राज्य-विस्तार का पता तो इसी से लगता है कि अंग का फैलाव पूर्व में कलिंग तक था और उत्तर में हिमालय की तराई तक ।

वाचिका : इस विस्तृत भूखंड वाले अंग महाजनपद की नींव, प्रतापी राजा ययाति के पुत्र अनु से उत्पन्न शक्तिशाली पुत्र महामना के ही पुत्र तितिक्ष ने रखी थी, जिसमें आधुनिक भागलपुर के अतिरिक्त वैशाली और विदेह के राज्य भी शामिल थे ।

वाचक : प्रतापी राजा अनु के वंश में उत्पन्न राजा आनव कहलाए; इसी आनव वंश में पराक्रमी और दानवीर बलि का जन्म हुआ था ।

वाचिका : बलि अंग महाजनपद का महापराक्रमी राजा था, जो राजा सगर का समकालीन था । राजा बलि से संबंधित जो पौराणिक घटनाएँ प्राप्त होती हैं, उनसे यह स्पष्ट होता है कि बलि अंग द्वीप का ही पराक्रमी राजा था ।

वाचक : पौराणिक कथा के अनुसार, जब समुद्र मंथन के समय असुरों का विद्रोह शुरू हो गया, तब सुरों के भय को दूर करने के लिए बलि ने ही बीच-बचाव करके, असुरों को पुनः समुद्र मंथन के लिए राजी

किया था ।

वाचिका : यह तो सर्वविदित कथा है कि बलि निःसन्तान था । अंगिरस ऋषि के पुत्र उतथ्य की पत्नी ममता से उत्पन्न दीर्घतमा अपनी उदण्डता के कारण, बेड़े पर बिठाकर, गंगा में निर्वाचित कर दिया गया था, गंगा के किनारे विहार करते बलि की दृष्टि उस पर पड़ी । इसी वैदिक ऋषि दीर्घतमा के कारण, नियोग क्रिया से, बलि की पत्नी सुदेष्णा को चार पुत्रों की प्राप्ति हुई थी, जिनमें अंग ज्येष्ठ पुत्र था ।

वाचक : समुद्र मंथन में बलि की भूमिका; अंगिरस के पुत्र उतथ्य; गंगा के किनारे राजा बलि का टहलना, और अपने ज्येष्ठ पुत्र का नाम अंग रखना; ये सारी बातें इतिहास के बंद पड़े पन्ने को खोलती हैं ।

वाचिका : इतिहासकार यह भी मानते हैं कि अंगद्वीप में जब कोशी नहीं बहती थी, और इसकी जगह सागर लहराता था, तब उत्तर अंग मत्स्य क्षेत्र या बराह क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध था । मत्स्य और बराह के रूप में ही विष्णु ने मानव और पृथ्वी की रक्षा की थी ।

वाचक : पुराण की कथा के अनुसार, ब्रह्मा की स्तुति पर विष्णु ने, बराह के रूप में, समुद्र में डूबी जा रही पृथ्वी को निकाला था। इससे यह अनुमान लगाना गलत नहीं लगता कि अंगुत्तराप के जल क्षेत्र में ऐसा कई गोपनीय मार्ग होगा, जो अन्य देश से मिलता होगा । विष्णु ने जब बलि को पाताल जाने को कहा, तब बलि ने अंगद्वीप के इसी बराह क्षेत्र के उस गोपनीय समुद्री मार्ग की शरण ली होगी ।

वाचिका : बलि और विष्णु का अंगद्वीप से जुड़ाव की अन्य कई पौराणिक कथाएं हैं। उनमें विष्णु के विभिन्न अवतार की कथाएँ भी शामिल हैं ।

वाचक : विष्णु के दशावतारों में चार श्रेष्ठ अवतार की कथाएं तो इसी अंग महाजनपद से जुड़ी हुई हैं—चाहे वह कच्छपावतार की कथा हो, चाहे मत्स्यावतार की, वह चाहे बराहावतार की हो, या वामनावतार की।

वाचिका : यहाँ तक कि विष्णु का एक और अवतार भी अंग देश से ही जुड़ा हुआ है, और वह है इनका नरसिंहावतार ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

हि.कश्यपु : (क्रूर स्वर में) ध्रुव ! तुम्हें इसका भी स्मरण नहीं रहा कि मैं तुम्हारा पिता हिरण्यकश्यपु बोल रहा हूँ ।

ध्रुव : (नम्रता से) मैं इस इस सत्य को किस तरह विस्मृत कर सकता हूँ, पिताजी ।

हिरण्य. : (उसी स्वर में) तब भी तुमने विष्णु की भक्ति नहीं छोड़ी, जो हमारी असुर संस्कृति पर हठात् ही तलवार की तरह तन गया है ।

ध्रुव : (नम्रता से) असुरों की रक्षा के लिए ही भगवान हमारे समक्ष आए हैं, शायद हम अपने ही अहंकार के कारण यह नहीं समझ पा रहे हैं ।

हिरण्य. : (और तेज स्वर) नीच, पामर ! तुम मुझे शिक्षा दे रहे हो । जो भगवान तुम्हारी ही रक्षा नहीं कर सकेगा, वह असुर संस्कृति के कुल की क्या कर सकता है ! तुम अपने विष्णु से कहो कि पहले वह अपनी रक्षा मुझसे करे । कहाँ है, तुम्हारा वह विष्णु ?

ध्रुव : (विनम्रता में ही) इस खम्भ में ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

वाचक : वह खम्भ, जिससे विष्णु नरसिंह रूप में निकल पड़े थे, वह आज भी अंगप्रदेश के पूर्णिया जिला में भग्नावशेष रूप में स्थित है । लोकविश्वास आज भी ऐसा ही मानता है ।

वाचिका : अंगप्रदेश में नरसिंह की मूर्तियां कई ऐतिहासिक स्थलों पर प्राप्त हैं । इनमें एक तो भागलपुर की शाहकुण्ड पहाड़ी पर स्थित परसिंह की अत्यन्त कलात्मक मूर्ति है, और दूसरी मूर्ति है, राजमहल के कन्हाईथान में स्थित, जो जांध पर हिरण्यकश्यपु को विदीर्ण करती हुई अंकित है।

वाचक : इन दो प्राचीन मूर्तियों के अतिरिक्त, बाँका के बालिसा नगर के मंदार पर्वत पर एक नरसिंह गुफा है, जहां इस देवता की आकृति गुफा की प्रस्तर दीवार पर, अंकित है ।

वाचिका : मंदार पर्वत पर नरसिंह की आकृति के अंकन के पीछे हिरण्यकश्यपु से जुड़ी एक पौराणिक कथा है । कहते हैं कि असुरराज हिरण्यकश्यपु ने, विष्णु द्वारा अपने भाई की हत्या से क्रोधित होकर, और अपनी माता दिति के आदेश पर, विष्णु से बदला लेने के लिए बालिसा पर्वत पर ही सहस्त्रों वर्ष की घोर साधना की थी । आखिर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करने में वह असुरराज सफल हो गया ।

पूर्वदिप्ती संगीत-प्रभाव का उभरना

ब्रह्मा : असुरराज हिरण्यकश्यपु, मैं तुम्हारी घोर तपस्या से प्रसन्न हुआ । जाओ, तुम्हारी ही इच्छा के अनुकूल, अब मुझसे उत्पन्न कोई भी जड़, चेतन, मनुष्य या देवता तुम्हारा वध नहीं कर सकेगा । न धरती पर, न आकाश पर ।

पूर्वदीप्ति संगीत-प्रभाव की समाप्ति

वाचक : और हिरण्यकश्यपु का संहार तब नरसिंह ने अपनी जांघ पर रख कर किया । मंदार पर्वत पर नरसिंह की प्रस्तर मूर्त्ति उसी पौराणिक घटना की स्मृति में शायद बनाई गई थी ।

वाचिका : वैसे आन्ध्रप्रदेश का सिंहाचलम पर्वत भी उसी पौराणिक आख्यान से जुड़ा है, और लोकमान्यता के अनुसार सिंहाचलम ही हिरण्यकश्यपु का राजमहल था । जैसाकि पुर्णिया में स्थित प्रस्तर खंभ के प्रति भी यह लोक प्रचलित मान्यता है कि इसी खंभ से भगवान नरसिंह निकल आये थे। अपार वैभव और शक्ति से सम्पन्न असुरराज हिरण्यकश्पु के एक से अधिक राजमहल विभिन्न प्रान्तों में हों, तो आश्चर्य ही क्या है । वैसे भी अंगप्रदेश और आन्ध्रप्रदेश की सीमाएं, उस काल में, एक दूसरे से बहुत टकराती थीं ।

वाचिका : इतिहास और पुराण गवाह हैं कि राजा बलि के बाद उसके पुत्र अंग ने, अंग के साम्राज्य को, उसी गौरव से सम्पन्न रखा ।

वाचिका : ऐतरेय ब्राह्मण का कथन है कि राजा अंग ने समस्त पृथ्वी को जीत कर अश्वमेघ यज्ञ किया था । अंग अपने चारों भाइयों में, अपने पिता बलि की तरह ही, सर्वाधिक कुशाग्र बुद्धि का और बलशाली था । यही कारण था कि इसके तीन भाइयों के राज्य का कुशल शासन भी बहुत कुछ अग्रज अंग पर ही निर्भर था ।

वाचक : अंग ने राज्यवर्द्धन के लिए सिर्फ अश्वमेघ यज्ञ ही नहीं किया था, बल्कि पुराणानुसार अग्निष्टोम, बहुसुवर्णक राजसूय, गोमेघ, वैष्णव और माहेश्वर यज्ञ भी उसने किया था।

वाचिका : प्रतापी राजा अंग का साम्राज्य उसके बाद उसके पुत्र दधिवाहन को प्राप्त हुआ, जिसका एक नाम ब्रह्माण्ड पुराण में अनपान भी प्राप्त होता है। अनपान, दन्तवाहक या दधिवाहन अपने पिता अंग की तरह चक्रवर्ती बुद्धि का नहीं था, इसी से इसके समय में अंग साम्राज्य का आलोक बढ़ने की जगह कुछ क्षीण ही हुआ ।

वाचक : जैन ग्रंथ में भी चम्पा के राजा दधिवाहन का उल्लेख है, जहाँ उसकी पत्नी का नाम अभया बताया गया है ।

वाचिका : इसका भी उल्लेख हुआ है अभया चम्पा के सुदर्शन नामक सेठ को प्यार करती थी । दधिवाहन को जब इसकी जानकारी मिली, तो उसने सुदर्शन को प्राणदण्ड की सजा सुनाई ।

वाचक : कहानी के अनुसार, जब सुदर्शन को सूली पर चढ़ाया जा रहा था, तब जल्लाद के हाथों का खड़ग फूलों की माला में बदल गया था ।

वाचिका : लेकिन इतिहासकार ऐसा अनुमान करते हैं कि प्राणदण्ड की सजा पाने के पूर्व ही सुदर्शन किसी तरह चम्पा से भाग कर पाटलिपुत्र पहुँच गया था, जहाँ पहुँच कर वह कालान्तर में प्रसिद्ध जैन मुनि हुआ, और अनुमान तो यह भी किया जाता है कि जैन ग्रंथ में पाया जाने वाला यह दधिवाहन अंग के पुत्र से अलग कोई अन्य राजा हुआ होगा । एक ही समय में, एक नाम के दो राजाओं का पाया जाना आश्चर्यजनक नहीं। कौशल और चम्पा के दशरथ इसके उदाहरण हैं।

वाचक : दधिवाहन के बाद जब उसके पुत्र दिविरथ ने अंग का सिंहासन संभाला, तब भी अंग का वह गौरव वापिस नहीं लौट पाया, जो राजा बलि के समय में इसे प्राप्त था ।

वाचिका : यहाँ तक कि दिविरथ के मरणोपरान्त जब उसका पुत्र धर्मरथ अंग के सिंहासन का उत्तराधिकारी हुआ, तब वह भी अंग के साम्राज्य की सुरक्षा की जगह, अपने धर्म-कार्य में ही लगा रहा । राजा धर्मरथ सचमुच में धर्मरथी था । यह समय सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र रघु का था, जिसने अपने नाम पर रघुवंश को स्थापित किया था ।

वाचक : धर्मरथ के कहने पर चक्रवर्ती राजा रघु ने काशी नरेश को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया था, जिसे राजा दिलीप ने बन्दीगृह में डाल रखा था।

वाचिका : राजा रघु के राज्यकाल में ही चित्ररथ, अपने पिता धर्मरथ के बाद, अंग मालिनी के सिंहासन पर आसीन हुआ । चित्ररथ में अपने पिता का गुण चरम तक उतरा था । न्यायप्रियता में उसके समान पूरे आर्यवर्त्त में कोई नहीं था । महाराज युधिष्ठिर को धर्मराज की उपाधि चित्ररथ के मरणोपरान्त ही प्राप्त हो सकी थी । इसी कारण महामुनी श्रीवत्स धौम्य ने, महाभारत में, धर्मराज युधिष्ठिर को चित्ररथ का धर्मपुत्र कहा है ।

वाचक : महान धर्मावलम्बी और न्यायप्रिय चित्ररथ के उपरान्त उनका पुत्र सत्यरथ अंग मालिनी के सिंहासन पर बैठा । अपने पूर्वजों की तरह ही सत्यरथ ने भी कौशल से अपना संबंध बनाए रखा । सत्यरथ के शासनकाल में कौशल का नरेश अज था ।

वाचिका : सत्यरथ और अज में गाढ़ी मित्रता थी। अज का चम्पा में बने रहना और सत्यरथ का प्रायः कौशल में ठहरना, आम बात थी । एक समय

की बात है ।

वाचक : कौशल के राजा अज, अंगनरेश सत्यरथ के राजप्रसाद में ठहरे हुए थे; उसी समय, सत्यरथ को पुत्र प्राप्ति की सूचना सारे नगर में फैल गई । उधर अज की पत्नी भी गर्भकाल को पूरा कर रही थी ।

वाचिका : कि तभी कौशल से आकर एक संदेशवाहक ने सूचना दी, कि महराज अज को पुत्र की प्राप्ति हुई है ।

आह्लाद संगीत

वाचक : दोनों राजमित्रों के हर्ष की कोई सीमा नहीं थी । सत्यरथ ने, अंग के कुलगुरु कश्यप ऋषि को, ग्रह-राशि के विचार से, पुत्र के नामकरण के लिए सादर बुलाया ।

वाचिका : और कौशल के राजा अज ने भी अपने कुलगुरु वशिष्ट को उसी निमित्त आमंत्रित किया। दोनों ऋषियों ने ग्रह, नक्षत्र, राशि पर विचार करते हुए कहा कि पुत्र का नाम दशरथ ही रखा जा सकता है ।

वाचक : और इस तरह अंग और कौशल में, एक ही समय में, दो दशरथों का जन्म हुआ । दोनों अपने-अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त राजसिंहासन पर बैठे ।

वाचिका : अंग का दशरथ आगे चल कर रोमपाद के नाम से विख्यात हुए, क्यों कि, कहते हैं, इनके सारे शरीर में रोम उग आये थे । रोमपाद अंगवंश की आठवीं पीढ़ी का नरेश था, और कौशल के नरेश दशरथ का अभिन्न मित्र ।

वाचक : 'शांता द्वयतांगिनी' नाटक के अनुसार, रोमपाद का विवाह काशी नरेश की पुत्री से हुआ था, और इसके ही कहने पर कौशल के दशरथ ने काशीनरेश की कनिष्ठ पुत्री से विवाह कर लिया था ।

वाचिका : लेकिन कौशल और काशी नरेशों के बीच तो पुस्तैनी दुश्मनी थी । काशी नरेश की कनिष्ठ पुत्री के साथ दशरथ का ब्याह होते ही कौशल नरेश अज का क्रोध भड़क उठा। स्थिति को सामान्य करने के लिए कौशल का दशरथ, अपनी नवविवाहिता पत्नी को लिए, अंग नरेश रोमपाद के राजमहल आया ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

रोमपाद : (चिन्तित, व्याकुल स्वर में) मित्र, इस अवस्था में, और इस समय; किसी सहयोगी को साथ लिए बिना ! कोई अप्रिय बात तो नहीं ?

दशरथ : (थके स्वर में) हाँ, अप्रिय बात ही है, मित्र; काशी नरेश की पुत्री से

मेरे ब्याह के कारण पिता अत्यन्त क्षुब्ध हैं । उन्होंने मेरे पुनर्विवाह की बातें भी शुरू कर दी हैं।

रोमपाद : क्या कहते हो मित्र !

दशरथ : मैं सच ही कर रहा हूँ । स्थिति और भी असामान्य न हो जाए, इसीसे अपनी गर्भवती पत्नी को मैं अपने साथ ही ले आया हूँ । वह पीछे-पीछे रथ पर आ रही है । मैं चाहता हूँ, उपद्रव शांत होने तक मेरी पत्नी मालिनी में ही रहे, अपनी ज्येष्ठ बहन के संरक्षण में रहेगी, तो मैं भी आश्वस्त रहूँगा ।

रोमपाद : मित्र, ऐसा ही होगा, यही होगा ।

रथ के आने और रुकने की ध्वनि के साथ
घोड़े के टापों की दूरागत होती ध्वनि
शीर्षक गीत : समापन संगीत

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : धारावाहिक के प्रथम तथा द्वितीय खण्ड में आपने सुना—पृथ्वी के रूप में अंगद्वीप का सृजन, द्वीप पर सुरों-असुरों का समुद्र मंथन, वैदिक देवताओं और अवैदिक असुरों के संघर्ष, उनके विवाद-संवाद । धारावाहिक रेडियो नाटक के इस तृतीय खण्ड में प्रस्तुत है—रामायण युग के अंगदेश का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास । अंगदेश के महर्षि ऋष्यशृंग का, अवधनरेश के लिए, अमृतमय पुत्रेष्टि महायज्ञ का आयोजन ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचक : राजा रोमपाद का राज्य । अंग में सुख संस्कृति, और समृद्धि का सागर लहरा पड़ा था।

वाचिका : और उधर, कलह-क्रोध की शान्ति के लिए, कौशल के नरेश का ब्याह भी हो गया था। एक नहीं, तीन-तीन रानियों से । लेकिन न तो कौशल्या से सन्तान मिली, न कैकेयी से, और न ही तो सुमित्रा से। कौशल की सारी समृद्धि के बीच कौशल का यह असहनीय अभाव, राजा दशरथ को ही नहीं, महर्षि वशिष्ट को भी विचलित कर रहा था। कि तभी अंग राज्य पर प्रकृति का प्रकोप फूट पड़ा ।

वाचक : आषाढ़ आया, सावन आया, फिर भादो भी आया, लेकिन सब बिना बादल को लाए ही लौट गये । अकाल का नया महाप्रलय ताण्डव कर उठा । नदियाँ सूख गईं, तालाब सूख गये, धरती की कोख तक सूख गयी ।

करुण संगीत

वाचक : पुरोहितों, पंडितों की सभा जमी । राजा रोमपाद की चिन्ता का समाधान खोज लिया गया। अगर महर्षि ऋष्यशृंग से रोमपाद की पालिता पुत्री शान्ता का विवाह सम्पन्न हुआ, तो अंगदेश का दुख दूर हो जायेगा । फिर क्या था, अंग की सिद्ध नृत्यांगनाएँ महर्षि ऋष्यशृंग के पास पहुँच गईं । अपने रूप-जाल, भाव-भंगिमा से रिझा कर वे ऋषि को नाव में लिए चंपा चल पड़ीं। नृत्यांगनाओं के पाश में बंधे,

महर्षि मुग्ध भाव में विभोर थे ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

ऋष्यशृंग : (भावपूर्ण स्वर में) एक अनछुआ सुख, एक अद्वितीय अनुभूति,अभूतपूर्व। मेरे शरीर की शिराओं, धमनियों और नसों में प्रवाहित हो रहे हैं । यह मुझे क्या हो रहा है ! गंगा की धाराएं इतनी स्थिर क्यों हो गयी हैं! हवाओं के पंख कैसे टूट गये ! नृत्यांगनाओ, मैं अपने आश्रम में ही हूँ न ?

लहरों की प्रवाह-ध्वनि

नृत्यांगना : प्रकृति के सम्पूर्ण सुख-वैभव की प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपने चित्त की अवहेलना भी करनी पड़े, तो इसमें अनुचित कहाँ है ! मनुष्य को जब सृष्टि का दुर्लभ सुख सहज ही प्राप्त हो रहा हो, तब इस क्षण को हम ईश्वर का आशीर्वाद समझ कर स्वीकार करें; क्या यह उचित नहीं है ऋषिवर !

ऋष्यशृंग : प्रकृति और चित्त की यह शांति, यह शीतलता—अद्‌भुत है, अनिर्वचनीय है !

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

वाचक : अंगराज्य के महर्षि विभांडक के पुत्र ऋष्यशृंग से, रोमपाद की दत्तक पुत्री शांता का विवाह सम्पन्न हुआ । ऐसा होना था कि प्रकृति का उल्लास फूट पड़ा । आकाश में बादल उमड़ आए । घनवर्षण हुआ। नदियाँ उमड़ पड़ीं । धरती की कोख फिर भर गयी । वन-पर्वत के भाग्य जाग गये ।

वाचिका : वर्त्तमान संथाल परगना का बेलनीगढ़ का पर्वतीय प्रदेश ही ऋषिशृंग और शांता के परिणय की कथा नहीं कहता, सदियों से इसका गवाह लोकमानस भी ऐसा ही मानता है ।

वाचक : इसमें आश्चर्य ही क्या है कि ऋषिशृंग जैसे तपस्वी का विवाह, अगर नगर से दूर, सुरम्य और शांत प्रकृति के मड़वे के नीचे सम्पन्न हुआ हो। बेलनीगढ़ में शृंगी ऋषि और शांता का विवाह, अंगप्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों की भी कथा है ।

वाचक : शांता और शृंगी का विवाह चम्पा के अकाल की अशांति को दूर करने के लिए हुआ था, और अंग का दक्षिणी प्रदेश, वर्षा के लिए, विशेषकर उड़ीसा से उठे मानसून पर निर्भर है । उड़ीसा से उठा हुआ मानसून जब छोटानागपुर की पहाड़ियों और पारसनाथ पर्वत से टकराता है,

तब छोटानागपुर से लेकर अंग के दक्षिणी भाग पर बरसते हुए, चम्पा की भूमि तक बरस पड़ता है ।

वाचिका : बेलनीगढ़ में ही शांता और शृंगी का विवाहोत्सव इस भौगोलिक स्थिति की ओर भी संकेत है। इतिहासकारों ने बेलनीगढ़ की कुछ मूर्तियों को शांता और ऋषिशृंग की ही मूर्तियाँ कहा है । मूर्त्तियां ही नहीं, पर्वत भी इस विवाह के गवाह हैं। सिंघाड़ी या सिंगारी पर्वत शृंगऋषि का ही देशज रूप है ।

वाचक : और रोमपाद की पुत्री शांता के साथ ऋषिशृंग का विवाह होना था कि

बादल, जलधारा एवं नदियों का कलकल

वाचिका : अंग राज्य का ही भाग्य नहीं जागा, ऋष्यशृंग का शांता के ब्याह से तो कौशल का भाग्य भी जाग उठा ।

वाचक : कौशल में महापंडितों, पुरोहितों की बैठी सभा ने कहा, अगर अंग के महर्षि ऋष्यशृंग, कौशल में दशरथ के लिए पुत्रकामेष्ठी यज्ञ करें, तो रानियों की गोद भर जायेंगी । क्योंकि समस्त जम्बू द्वीप पर अंगदेश के ऋष्यशृंग ही ऐसे ऋषि थे, जो कामेष्ठी यज्ञ के अकेले मंत्राधिकारी थे ।

वाचिका : महाराज दशरथ रानियों समेत अंग आए । तब रोमपाद को अपना दुःख कहा । निदान का मार्ग भी । रोमपाद ने अपने मित्र का परिचय ऋयशृंग को दिया, और कौशल पहुँच कर पुत्रेष्टि यज्ञ करने का अनुरोध भी किया ।

वाचक : महर्षि ऋष्यशृंग शान्ता के साथ कौशल पहुँचे, पुत्रेष्टि यज्ञ किया । कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा की कोखें स्पन्दित हो उठीं । समय बीता, और कौशल नरेश का राजभवन, बालक राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की किलकारियों से, गूंज उठा ।

उल्लास का संगीत-प्रभाव (जन्मोत्सव गीत)

वाचिका : स्पष्ट है कि कौशल नरेश दशरथ और अंगराज रोमपाद के काल तक अंग और कौशल का संबंध अत्यधिक पारिवारिक बना रहा था।

वाचक : यह पारिवारिक संबंध राजा राम और उनके पुत्र कुश तक चलता रहा। पुराणों में, विवाहोपरान्त जानकी के साथ राम के अंग राज्य में आने, और शिव के जलाभिषेक के लिए काँवर उठाने की बात अति प्रसिद्ध है ।

वाचिका : कौशल के साथ ही नहीं, मिथिला के साथ भी अंगराज्य का वैसा ही

पारिवारिक संबंध था । इतिहास के प्राचीन भारत के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अंग, कौशल और मिथिला का संबंध उस काल में अत्यधिक घनिष्ट था ।

वाचक : यह मात्र संयोग नहीं था कि अंग राज्य के महर्षि विश्वामित्र की अगुआई में कौशल के राम का ब्याह विदेहराज सीरध्वज की पोष्य पुत्री सीता से हुआ था । जब वैदेही जनकपुर से अवध के लिए चली थी, तब अंगुत्तराप अर्थात अंग के आधुनिक बेगूसराय के सिमरियाघाट पर, अंग की सौभाग्यवतियों ने, वैदेही को आखरी जल पिलाया था ।

विदाई गीत

वाचिका : और चौदह वर्षों के वनवास के बाद राम-जानकी जब कौशल लौटे, तो कृतज्ञता निवेदन के लिए सबसे पहले वह अंगराज्य ही आए ।

वाचक : अंग और कौशल का यह पारिवारिक संबंध, रामायण युग में कितना घनिष्ठ रहा होगा, यह तो इसीसे समझा जा सकता है कि जब जानकी का हरण कर वायुमार्ग से, रावण लंका की ओर चला जा रहा था, तब चम्पकारण्य यानी आज की जमुई के पर्वत पर वास करने वाले पक्षीराज जटायु ने सीता की मुक्ति के लिए घोर युद्ध किया था । **(घर्घर नाद और पक्षी की विचित्र आवाज)** जटायु लड़ता ही रहा था, तब तक, जब तक उसके प्राण का अन्तिम अंश शेष रहा ।

वाचिका : जटायु का श्राद्ध स्वयं राम ने किया था । रामायण का यह प्रसंग अंग और कौशल की घनिष्टता की अमरकथा है ।

वाचक : जब कौशल में, कौशलेन्द्र राम के बाद उनका पुत्र कुश शासन कर रहा था, तब अंग राज्य का सम्राट पृथुलाक्ष था । पृथुलाक्ष के पूर्व, रोमपाद का पुत्र चतुरंग भी मालिनी के सिंहासन को सुशोभित कर चुका था।

वाचिका : चतुरंग के बाद जब पृथुलाक्ष अंग का सम्राट हुआ, तब इस राज्य पर बाहरी राज्यों की लोलुप भरी आँखें उठ खड़ी हुई थीं ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

नागरिक-१: अब हमारे इस राज्य का क्या होगा ? अंग नरेश अपने ही राजसिंहासन की सुरक्षा में इतने व्यस्त और चिन्तित हैं कि देश की उन्हें चिन्ता ही नहीं रही।

नागरिक-२: लेकिन हमलोग कर भी क्या सकते हैं । हम सब तो प्रजा हैं। प्रजा की रक्षा का भार भी तो राजा पर ही होता है।

नागरिक-१: ठीक है, पर जब राजा अपने कर्त्तव्य से च्यूत हो रहा हो, तब प्रजा को

मौन बैठे नहीं रहना चाहिए, क्योंकि यह देश हम प्रजाओं का भी है। देखते नहीं; सिर्फ उत्तर सीमा से ही नहीं; पश्चिमोत्तर सीमा की ओर से भी हमारे देश को विचलित करने के लिए बाहरी शक्तियाँ संगठित हो रही हैं ।

नागरिक-२: बाहरी शक्तियाँ ही क्यों, देश के अन्दर ही कई आन्तरिक शक्तियाँ हैं, जो राजा के राजमहल में, और राजमहल के बाहर भी सक्रिय हैं । एक राजा पर दूसरा राजा है, दोनों शासन कर रहे हैं, और दोनों में वैमनस्य है ।

नागरिक-१: सुना है, हमारे राजा को शास्त्र का ज्ञान भी नहीं; मंत्री, सेवक की सलाह पर राज्य का संचालन करते हैं ।

नागरिक-२: मित्र, तुमने ठीक ही सुना है, शासन की स्थिति यह है कि राजा थोड़ी भी मुसीबत में पड़ते हैं, तो इनके आन्तरिक शत्रु, बाह्य शत्रु से मिलकर, प्रजाओं के बीच राजा की शिकायत में लग जाते हैं ।

नागरिक-१: और हमारे राजा भी ऐसे हैं कि सारी प्रजा को प्रजा समझ कर उनका कल्याण करने की जगह, उनके वंश-धर्म और सिंहासन की सुरक्षा में मददगार जातियों को ही अपने निकट रखना चाहते हैं ।

नागरिक-२: यह तो अपने देश का घोर दुर्भाग्य है और इसकी संस्कृति का अपमान भी । दुर्भाग्य ही तो है कि राजा के गुप्तचर, दूसरे देशों के राजा से मिलकर, इस देश की गुप्त जानकारी तक उसे दे रहे हैं ।

नागरिक-२: भगवान जाने, इस देश का क्या होने वाला है, जहाँ द्वैराज्य का भी शासन है, और वैराज्य का भी। बाहरी राजा हमारे देश में परोक्ष रूप में शासन कर रहा है; ऐसे में हमारे राजा, शत्रु को दबाने के लिए, बाहरी राजा पर ही निर्भर रह गये हैं ।

नागरिक-१: और उस पर अपने शासन की प्रशंसा में उत्सव करवा रहे हैं, अक्षर खुदवा रहे हैं, अक्षरों के बीच आदमकद, मुर्तियाँ बनवा रहे हैं । सिंहासन और राजकोष का ऐसा अपव्यय अपने देश में कभी नहीं हुआ, जो अब हो रहा है । आश्चर्य तो यह है कि हम प्रजा, वर्णों में बँट कर, राजा के सिंहासन के शिकार हो गये हैं । वैसे सुना है, पृथुलाक्ष ने कौशल नरेश कुश की सहायता से अपने साम्राज्य को असुरक्षित होने से बचा लिया है। उनकी राजनीतिक सूझ मालिनी के लिए सुरक्षा-कवच सिद्ध तो हुई, लेकिन अंग का साम्राज्य राजनीतिक तौर पर मजबूत नहीं रह पाया है।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

वाचक : पृथुलाक्ष के कमजोर कंधे से ससर कर अंग का शासन-भार राजा चम्प के कंधे पर आया। चम्प अंगनरेश पृथुलाक्ष का ही पुत्र था । कहा तो यही जाता है कि सिंहासनारूढ़ होने पर चम्प ने, मालिनी का नाम बदलकर अपने नाम से अंग की राजधानी बनाई। लेकिन इतिहास ऐसा भी कहता है कि सम्राट पृथुलाक्ष ने अपने पुत्र का नाम चम्प रखा था और उसने ही मालिनी का नाम परिवर्तित कर चम्पा नाम चलाया ।

वाचिका : इतिहास यह भी कहता है कि जब पृथुलाक्ष चम्प का जन्मोत्सव मना रहा था, तब अन्य राज्यों के ही नहीं, पृथुलाक्ष के आमंत्रण पर कौशल नरेश कुश भी उस उत्सव में उपस्थित था ।

मंगलगान, मंत्रोच्चार का ध्वनि-प्रभाव

वाचक : अंगनरेश चम्प प्रकृति का अद्‌भुत प्रेमी और दार्शनिक नरेश हुआ । उसने अपने समय में अंग की राजधानी चम्पा को ही सिर्फ चम्पा के वृक्षों से सुसज्जित नहीं किया, बल्कि अंग के अधीन समस्त भूमि को ही चम्पा वृक्षों से चम्पाकारण्य बना दिया ।

वाचिका : आज का जमुई जिला, और कोशी प्रमण्डल के सहरसा तथा मधेपुरा तब चम्पाकारण्य ही कहाते थे । पौराणिक इतिहास अंग के उत्तर को चम्पाकारण्य ही कहता है।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

चम्प : महामंत्री, सम्पूर्ण चम्पा राज्य में डुगडुगी बजवाइए कि जितने ऊसर-टीकर भूभाग हैं, उन सभी जगहों पर चम्पा के वृक्ष लगाए जाएं । घने, सघन वनों को उजाड़ना, राजद्रोह के समान होगा । सरोवर-तालाबों को दूषित करना, उससे भी बड़ा राजद्रोह । यह अंगनरेश चम्प का राज्यादेश है।

नेपथ्य से डुगडुगी का उभार

डुगडुगी वालाः (हाँक के स्वर में) देश की प्रजाओं को राजा का आदेश सुनाया जाता है कि खाली पड़े भूखण्ड को चम्पावन में बदल दिए जाए, और उन चम्पावनों के मध्य झील या तालाब का निर्माण कराया जाय । ऐसा, वे राज्यधर्म समझ कर करें, क्योंकि यह देश सबका है, सिर्फ राजा पर निर्भर होना राजद्रोह की तरह है । (डुगडुगी) राजा का यह भी आदेश है कि जंगलों में विचरने वाले हाथियों, मृगों, सिंहों का जो शिकार

करेगा वह राजदण्ड का शिकार होगा, क्योंकि मनुष्यों की तरह पशु भी प्रकृति और देश के लिए बहुत उपकारी हैं । वन्य पशुओं के चर्म और हड्डियों का व्यापार करनेवाला प्राणदण्ड की सजा का भागीदार होगा । (डुगडुगी) किसी भी अवस्था में चम्पा के वृक्ष की उपेक्षा न हो, क्योंकि सुगन्धों से, प्रकृति और मनुष्य ही नहीं, जंगल के विशाल गजराज भी मृगवत व्यवहार करते हैं ।

डुगडुगी का स्वर तेज होकर समाप्त

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

वाचक : अंग के उत्तर को अंगुत्तराप, तो बुद्धकाल में कहा जाता रहा इतिहासकार हवलदार त्रिपाठी की मान्यता है कि मुंगेर और भागलपुर के सामने गंगा के उत्तरी भाग में बराबर सर्वत्र जल भरा रहता था, इसलिए यह भूमिभाग 'अंगुत्तराप' कहलाता था ।

वाचिका : चम्पा फूलों के अनन्य पुजारी राजा चम्प को पुत्र की प्राप्ति तब हुई, जब वह वयस के चौथेपन में पहुँच गये थे ।

वाचक : उम्र के चौथेपन में प्राप्त यही पुत्र, अंग के इतिहास में, महाराज हर्यंक के नाम से प्रसिद्ध है ।

वाचिका : हर्यंक ही अंगप्रदेश का आखरी पराक्रमी नरेश हुआ, जो पौराणिक इतिहास में अपनी धर्मशीलता को लेकर प्रख्यात पुरुष के रूप में समादृत है। अंगनरेश हर्यंक के संबंध में मत्स्य पुराण में एक कथा आती है,

वाचक : कि जब हर्यंक एक विशेष यज्ञ सम्पादित कर रहा था, जिस यज्ञ के पुरोहित विभाण्डक ऋषि थे, तब उस यज्ञ की पवित्रता से प्रभावित होकर इन्द्र ने अपने ऐरावत हाथी जैसा ही दिव्य और अत्यन्त बलशाली हाथी उसे प्रदान करने का आदेश दिया । जब हर्यंक यज्ञ के अग्निकुण्ड में अन्तिम आहुति कर रहा था, तभी कुण्ड से अश्वत्थामा नामक दिव्य, और ऐरावत जैसा ही विकट बलशाली हाथी प्रकट हुआ, जो हर्यंक को प्राप्त हुआ था।

हाथी का गुरु गंभीर चिग्घाड़

वाचिका : कहते हैं, उस हाथी के समक्ष होते ही शत्रुओं की आधी शक्ति स्वयं शेष हो जाती थी।

वाचक : इस कथा से अगर मिथकीय रूप को हटा दिया जाय, तो यह सिद्ध होता है कि इन्द्र की तरह अंगराज हर्यंक को भी, ऐरावत जैसा ही,

अश्वत्थमा नाम का अत्यन्त बलशाली हाथी प्राप्त था ।

वाचिका : ऐरावत जैसे श्रेष्ठ हाथियों के लिए अंगप्रदेश पुराणकाल से विख्यात रहा है । सिंह चाहे जहाँ से आये हों, बाघ और श्रेष्ठ हाथी तो अंगप्रदेश के जंगलों की ही सन्तान हैं । समुद्र-मंथन में ऐरावत हाथी का मिलना किसी विशेष इतिहास की ओर संकेत है ।

वाचक : इन्द्र को, समुद्र मंथन से, चार सफेद दाँतो वाले जिस दिव्य हाथी की प्राप्ति हुई थी, उसका रंग भी सफेद था । शताब्दियों पहले वर्मा की इरावदी नदी के तट पर अवस्थित घने जंगलों में भी कभी सफेद हाथी पाये जाते थे । (पॉज) ऐरावत-इरावदी इन दो नामों में साम्य, एक बंद पड़े इतिहास को खोलता है ।

वाचिका : इतिहास कहता है कि वर्मा की इरावदी नदी का नाम इन्द्र के ऐरावत हाथी के नाम पर ही पड़ा था । अंग प्रदेश सहित पूरे पूर्वी प्रदेश में सफेद हाथी सौभाग्य का सूचक माना गया है । इसी से जातक कथा के अनुसार, पूर्व जन्म में भगवान बुद्ध ने पृथ्वी पर सफेद हाथी के रूप में जन्म लिया था । बौद्धों के धर्म में सफेद हाथी बहुत पवित्र है ।

वाचिका : थाईलैण्ड में, सन् १९२६ ई. में प्राप्त प्रमाण से ज्ञात होता है, कि किसी सफेद हाथी की प्राप्ति पर राजा द्वारा उसके सम्मान में विशिष्ट आयोजन किया जाता था, सुगन्धित जल से उस हाथी को नहलाया जाता, तुरही-नाद के साथ हाथी की शोभायात्रा निकाली जाती, और अनुष्ठान की समाप्ति पर पूरा नगर हर्षोल्लास तथा संगीत में डूब जाता ।

तुरही, ढोल, नगाड़े की ध्वनियाँ

वाचक : और जब यज्ञ से, अंग नरेश हर्यंक को, ऐरावत-सा सफेद हाथी की प्राप्ति की बात आती है, तो इसका अर्थ सिर्फ इतना ही होता है, कि इन्द्र को जब दूसरा सफेद हाथी प्राप्त हुआ, तो उसने उसे हर्यक को भेंट में दिया, और जिस हाथी के सम्मान में ही अंगपति नरेश ने भव्य धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया था ।

वाचक : अपने रघुवंश महाकाव्य में महाकवि कालिदास अंगराज की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं कि नरेश के हाथी सूत्रकारों द्वारा प्रशिक्षित हैं ।

वाचिका : महाकवि चंदवरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' में उल्लिखित है—

सूत्रधार : अंगदेश के पूरब में एक वन है, जिसके बीच उज्ज्वल जल और कमलों

से भरा लोहित नाम का एक सरोवर है, जहाँ हाथियों का झुण्ड दिन-रात क्रीड़ारत रहते है। वहीं पालकाप्य का भी आश्रम था, जो हाथियों के साथ प्रीतिपूर्वक रहा करते थे। आखेट पर गये राजा रोमपाद उन हाथियों को पकड़कर चम्पापुर ले आये । पालकाप्य के बिना हाथी अत्यन्त दुर्बल हो गये । तब मुनि पालकाप्य ने वहाँ पहुँचकर उन हाथियों की चिकित्सा की ।

नेपथ्य में कविता का स्वर

अंग देश पूरब्ब, मद्धि वनषंड गहब्बर ।
उज्जवल जल दल कमल, विपुल लुहिताख्य सरब्बर ।।
श्रापित गज कौ जूथ, करत क्रीड़ा निसिवासर ।
पाल काप्य लघुवेस, रहत एक तहाँ रुषेसर ।।
तिन प्रीति बाँधि अति परसपर, रोमपाद नृप संभरिय ।
आखेट जाइ फंदन पकरि, दुरद आनि चंपा पुरिय ।।

दूहा

पाल काप्य कै विरह करि, अंग भये अति षीन ।
मुनिवर तब तहुँ आय कै, गज चिग्गछ गुन कीन ।।

हाथियों का चिंघाड़/समाप्ति संगीत

आरम्भिक संगीत की समाप्ति के साथ शीर्षक गीत।
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : अंगप्रदेश पर सृष्टि का आरंभकालीन जलप्रलय; हिमयुग के बाद देवों-दानवों का मंदार-मंथन, अंग में अवैदिक-वैदिक धर्मो का अभ्युदय और रामायण युग में अंग का आध्यात्मिक उत्कर्ष : आपने इस धारावाहिक के प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्डों में इतिहास के इन अध्यायों को सुना, और अब प्रस्तुत है—अंगदेश का महाभारत युग यानी द्वापर युग का शौर्य मंथन।

वाचक : अंगप्रदेश के स्मरण भर से आँखों के सामने जो छवि बनती है, वह है—मन्दार पर्वत पर बैठे समाधिस्थ शिव की; मंत्रोच्चार करते अंग के ऋषि कश्यप की, कश्यप के पुत्र विभांडक ऋषि की; विभांडक के पुत्र ऋष्यश्रृंग की; कोशी के कच्छ पर घोर तपस्या में लीन विश्वामित्र की; गंगा को क्रोध में पी गए जहनु ऋषि की; जनक की सभा में शास्त्रार्थ करते अंग के ऋषि अष्टावक्र की; विश्वामित्र के पुत्र महर्षि मुदगल की, और असीम क्रोध में भुजा फड़काते दुर्वासा के साथ परशुराम की।

वाचिका : पुराण, इतिहास में इनके गोत्र, जन्मकथा और कार्यस्थल से यह स्पष्ट है कि इन महर्षियों की जन्मभूमि अंगप्रदेश की मालिनी या चम्पा के आसपास के भूखंड ही रहे हैं।

वाचक : विश्वामित्र महर्षि गाधि के पुत्र थे, और सत्यवती ऋषि विश्वामित्र की बहन। महर्षि गाधि अपनी पुत्री सत्यवती का ब्याह भार्गवकुल के ऋषि ऋचीक से नहीं करना चाहते थे, इसी से उन्होंने ऋचीक के सामने एक शर्त रखी, अगर वह कन्या-शुल्क के रूप में चन्द्रमा के समान श्वेत और हवा से बातें करने वाले श्याम कर्ण युक्त एक सहस्त्र अश्वों को दें, तो यह ब्याह सम्पन्न हो जायेगा । ऋचीक ने उनकी यह शर्त पूरी की ।

एक साथ घोड़ों की हिनहिनाहटें

वाचिका : ऋचीक के साथ सत्यवती का विवाह हो गया, लेकिन वृद्ध हो रहे ऋचीक ज्यादा दिनों तक जीवित न रह सके, और दुखिता सत्यवती उनका अनुसरण करती हुई कौशिकी नदी रूप में परिणत हो गयी ।

वाचक : पुराण की यह भी कथा है कि कोशी नदी को विश्वामित्र ने धरती पर

उतारा था और चूंकि विश्वामित्र कौशिक गोत्र के थे, इसी से उस नदी का नाम कौशिकी पड़ा । महर्षि विश्वामित्र ने अपनी बहन कौशिकी के तट पर सहस्त्रों वर्ष का कठोर तप किया था ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : इसी कौशिकी के तट पर कश्यप पुत्र विभांडक ऋषि का भी एक आश्रम था । श्रृष्यशृंग विभाण्डक ऋषि के ही पुत्र थे, जो अत्यन्त ही विद्वान और संयत इन्द्रिय के थे ।

वाचक : उनकी विद्वता से ही प्रभावित होकर राजा रोमपाद ने उनसे अपनी पुत्री शांता के ब्याह की बात सोची थी और इसके लिए समस्त कलाओं में निपुण नर्त्तकियों को उनके आश्रम पर भेजा गया ।

वाचिका : ऋषियों की जन्मभूमि और साधनास्थली के रूप में विख्यात अंगप्रदेश का कहलगाँव, जो कहोल ऋषि के नाम पर है, कई-कई महर्षियों की जन्मकथा और उनके व्यक्तित्व की कहानियाँ अपने में समेटे हुए है। कहोल ऋषि के ही पुत्र थे, अष्टावक्र, जिन्होंने जनक की सभा में शास्त्रार्थ करते पंडितों को पराजित किया था और अष्टावक्र इसलिए हो गये थे कि उन्होंने मातृगर्भ से ही वेद के गलत उच्चारण की ओर पिता को इशारा किया था ।

वाचक : अष्टावक्र के नाना थे ऋषि उद्दालक, जिनके बचपन का नाम आरूणि था । उद्दालक का आश्रम कहलगाँव में ही था, और कहोल ऋषि उद्दालक के आश्रम में ही रहा करते थे।

ध्वनि-प्रवाह

वाचिका : इतिहास में इसका तो उल्लेख है कि दुर्वासा ऋषि की जन्मभूमि अंगप्रदेश में ही थी । कुछ विद्वान इन्हें कहोलगाँव से ही जोड़ते हैं, जैसा कि विश्वामित्र की जन्मभूमि को भी

ध्वनि-प्रभाव

वाचक : कहने के लिए तो ऋषि वशिष्ट की साधना-स्थली भी कहलगाँव का वटेश्वर स्थान ही था । वटेश्वर स्थान, वशिष्ठेश्वर स्थान का ही अपभ्रंश है, जहाँ ऋषि ने शिवलिंग की स्थापना तथा उसकी आराधना की थी ।

वाचिका : कहलगाँव अष्टावक्र की जन्मभूमि है, और कहोल मुनि के गुरु और प्रख्यात वैदिक ऋषि उद्दालक की भी जन्मभूमि । इस तरह नचिकेता की जन्मभूमि अंगप्रदेश ही है । गौतम, उद्दालक और

वाजश्रवा अलग-अलग ऋषि नहीं हैं, बल्कि ये नाम एक ही ऋषि के हैं। गौतम गोत्र से होने के कारण यह जहाँ गौतम कहाते थे, वही अन्नदान करने के कारण ये वाजश्रवा कहाए । उद्दालक तो इनका प्रसिद्ध नाम था। इसी उद्दालक ऋषि के पुत्र थे नचिकेता, और उद्दालक का संबंध अंगप्रदेश से होने से हम नचिकेता की जन्मभूमि के भी बारे में भी सहज जान सकते हैं ।

वाचक : आदिदेव शिव से लेकर हर्यंक तक जो अंगप्रदेश अध्यात्म और लोक कल्याण के मंत्रों से गूंजित होता रहा, जिसने संस्कृति के प्रसार से ही शांति का विस्तृत साम्राज्य कायम किया, अगर इसका इतिहास अस्त्रों की गूंज और रक्त से रंजित नहीं मिलता, तो आश्चर्य ही क्या।

वाचिका : लेकिन धर्म, दर्शन, अध्यात्म, जब राजाओं का जीवन दर्शन बन जाता है, तब साम्राज्य की सुरक्षा कठिन हो जाती है । सम्राट हर्यंक के बाद अंग के इतिहास के पराभव के पीछे यही कारण बन गया । हर्यंक के बाद ऐसा कोई अंगपति नहीं हुआ, जो ऐतिहासिक दृष्टि से उल्लेखनीय कहा जा सके । चाहे वह वृहद्दमान हो, या महात्मवान, या फिर विश्वजीत ही, जो अन्य स्थल पर जन्मेजय के नाम से भी जाना गया है ।

वाचक : इन राजाओं के शासनकाल तक हस्तिनापुर में पुरुवंशियों का प्रभाव बढ़ चला था । पुरुवंशियों का साम्राज्य, भादो की गंगा और कोशी की तरह, विस्तृत होता जा रहा था, जिससे अंग भी अछूता न रहा ।

वाचिका : इधर अंग के राजाओं की व्यक्तिगत कमजोरियों के कारण, अंग के अधीन क्षेत्र के शक्तिशाली पुरुष भी अंगपति के खिलाफ उठ खड़े हुए थे, और उन्होंने स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना शुरू कर दी थी। मगध इसका सबसे बड़ा उदाहरण था ।

वाचक : इतिहास के कई प्रसंगों से यह स्पष्ट है कि मगध अंग के अधीन था, कोई स्वतंत्र राज्य नहीं । महाभारत के शान्ति पर्व के अनुसार अंग के राजा ने विष्णुपद पर्वत पर बलि दी थी, और एक अन्य उल्लेख के अनुसार चित्ररथ के पिता धर्मरथ ने गया के विष्णुपद पर्वत पर इन्द्र के साथ सोमपान किया था ।

वाचिका : लेकिन अंग के राजा विश्वजीत के शासनकाल में ही मगध का प्रभुत्व इतना बढ़ गया कि मगध के शासक जरासंध के पराक्रम से पुरुवंशी धृतराष्ट्र और यदुवंशी कृष्ण तक की शान्ति भंग हो गई । मगध के

ही राजा वृहद्रथ ने अंग की सीमा को काटकर इतना छोटा कर दिया था कि वह जल से भरी थाली में चाँद की परछाई की तरह बच गयी थी।

वाचक : कहने के लिए तो अंग का अभी भी स्वतंत्र अस्तित्व था, और विश्वजीत अंग का नरेश बना हुआ था, लेकिन सत्य यही था कि राजा विश्वजीत पुरुवंशियों के अधीन कार्य करने के लिए विवश था। वह अपने मन से कुछ भी नहीं कर सके, इसीसे पुरुवंशियों ने विश्वजीत के शासन में सहयोग के लिए पौण्ड्र के नरेश भगदत्त को बहाल कर दिया था । पौण्ड्र अंग का पड़ोसी राज्य था ।

वाचिका : राजा भगदत्त ने अंग के शासन को सुव्यवस्थित रखा, और सोलह वर्षों तक शासन किया। राजा भगदत्त के नाम पर ही चम्पा का वह अंचल, जहाँ भगदत्त का निवास था, भगदत्तपुर कहाया, जो कालान्तर में विकृत होकर भागलपुर हो गया है।

वाचक : राजा भगदत्त असीम शक्ति का पुरुष था, जिसका जन्म पृथ्वी नामक स्त्री और नरकासुर के संयोग से हुआ था । भगदत्त शिव का महान उपासक था । असुर पिता की सन्तान होने के कारण उसमें अतुलित शक्ति तो थी ही; उसने अपनी तपस्या के बल पर ब्रह्मा, विष्णु से भी अपराजित रहने का वर प्राप्त किया था । जब महाभारत का युद्ध छिड़ा, तब अंग और पौण्ड्र का यह राजा कौरव की ओर से युद्धरत था ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

विभिन्न अस्त्रों, घोड़ों-हाथियों की आवाजें के साथ सैनिक की चीख-पुकार

अर्जुन : भगवन् यह कौन है, जिसके अस्त्र के समक्ष मेरे अस्त्र आग पर गिरी जल-बूंदों की तरह, व्यर्थ हो जाते हैं ।

कृष्ण : अर्जुन, यह कोई सामान्य शूर नहीं है । अंग और पौण्ड्र का यह वीर एक ऋषि के कारण मानवी स्वभाव में आ गया था । लेकिन इस समय उसकी पूर्व की आसुरी शक्ति जागृत हो उठी है, जिसे पराजित करना असंभव है ।

अर्जुन : (चिन्तित स्वर) तो हे कृष्ण, क्या यह युद्ध भगदत्त के पक्ष में गिरेगा?

कृष्ण : चिन्तित नहीं होओ अर्जुन, आदिनाथ शिव के इस परम भक्त को, भगवान शिव के पाशुपत अस्त्र से ही पराजित किया जा सकता है। अन्यथा मेरा सुदर्शन भी भगदत्त का कुछ अहित नहीं कर सकता ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि-संगीत

वाचिका : विश्वजीत और भगदत्त के शासन के बाद अंगवंश के अन्य कई राजाओं का उल्लेख ब्रह्माण्ड पुराण में आया है ।

वाचक : ब्रह्माण्ड पुराण के ही अनुसार अंगवंशीय राजा वृहत्मना की दो पत्नियाँ थीं—यशोमति और सत्या । सत्या सूतपुत्री थी । सत्या का पुत्र था विजय और विजय का पुत्र धृति; धृति का ही पुत्र हुआ धृतव्रत । सत्यकर्मा धृतव्रत का पुत्र था, और सत्यकर्मा का पुत्र था-अधिरथ, जिसने कुन्तीपुत्र कर्ण को, गंगा में प्रवाहित हो रहे मंजूषा से निकाल कर, पुत्र की तरह स्वीकार किया था ।

वाचक : महाभारत युग में यानी आज से लगभग पाँच या साढ़े पाँच हजार वर्ष पूर्व, कुन्तीपुत्र कर्ण दुर्योधन का कृपापात्र होकर अंग नरेश बना ।

वाचिका : अंग के इस चक्रवर्ती कर्ण की जीवनकथा को, धार्मिक विश्वास से तो स्वीकार कर लिया जा सकता है, लेकिन विवेक इसे सहज ही नहीं स्वीकार सकता ।

वाचक : मंजूषा में रखा बालक कर्ण अश्व नदी में बहता हुआ यमुना नदी पहुँचा, फिर यमुना से गंगा में प्रवाहित होते हुए अंग देश की गंगा तक पहुँच गया, और इस बीच में किसी की नजर मंजूषा पर नहीं पड़ी—यह घोर आश्चर्य की बात है। यह भी नहीं है कि मंजूषा एक ही रात में बहकर अंग तक पहुँच गया होगा । तब तक मगध की आँखें आर्यावर्त के नदी, पहाड़, जंगल के कोने-कोने पर थीं।

वाचक : वेदव्यास कृत महाभारत जिस रूप में प्राप्त है, वह प्रकाशित होने के पूर्व उसी रूप में नहीं था । इसकी कथा में संगति बिठाने के लिए संकलन और सम्पादनकर्त्ता ने अपनी कल्पना का भी सहयोग लिया था, इसका हमें स्मरण रखना चाहिए ।

वाचिका : महाभारत की कथा से अलग, अंग का यही लोकविश्वास है कि कुन्ती वर्त्तमान में झारखण्ड राज्य के एक अंचल की राजकन्या थी । यह अविश्वसनीय भी नहीं लगता, संभव है, उस समय ऐसी कोई पहाड़ी नदी होगी, जो अंगदेश की गंगा में आकर मिलती होगी । फिर कौमार्य काल में जिस ऋषि के आशीर्वाद से कर्ण की प्राप्ति हुई, वह दुर्वासा ही थे, और दुर्वासा तो अंग के ही ऋषि थे ।

वाचक : जो हो, अंग के नये नरेश के रूप में कर्ण ने अंग की प्रतिष्ठा पूरी पृथ्वी पर पुनः स्थापित की । जब कर्ण पृथ्वी पर विजय के लिए निकला,

तब उसकी विशाल सेना के शौर्य से चारों दिशाओं के नरेश भयाक्रांत हो उठे ।

घोड़े हाथियों अस्त्रों का ध्वनि-प्रभाव, जो विजयकथा तक तेज और मद्धिम स्वर में कायम रहता है

वाचिका : हस्तिनापुर से विशाल सेना के साथ चला कर्ण ने सर्वप्रथम द्रुपद की राजधानी पर विजय की, और हिमालय के पद पर बिछे सभी राज्यों को अपने अधीन किया । फिर पूर्व के भी राज्यों को; इसमें कलिंग, पौण्ड, बंग, मिथिला, मगध सभी शामिल थे।

वाचक : पूर्वी राज्यों पर विजय के बाद कर्ण ने दक्षिण के राज्यों पर विजयके लिए अभियान किया। अनेक राजाओं ने कर्ण की सत्ता स्वीकार ली, लेकिन रुक्मी के साथ कर्ण को भारी युद्ध करना पड़ा था।

युद्ध का ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : लेकिन कर्ण के पराक्रम के समक्ष रुक्मी को भी नत होना पड़ा ।

वाचक : दक्षिण के अनेक नरेशों को अपने अधीन करने के बाद कर्ण अपनी विशाल सेना के साथ पश्चिम की ओर बढ़ा । पश्चिम में उसने यवन और बर्बर राजाओं को परास्त कर, उनके राज्यों को अपने अधीन किया। इस तरह कर्ण ने अपनी विशाल सेना के साथ सम्पूर्ण भारत पर विजय प्राप्त की ।

शंख, तूर्यनाद की ध्वनियां

वाचिका : यह अलग बात है कि अपनी यह विजय उसने अपने मित्र दुर्योधन को समर्पित कर दी, और महाभारत में महारथी भी बना, तो दुर्योधन के लिए ही । महाभारत के युद्ध में उसकी शूरता और सैन्य संचालन को देखकर कृष्ण बार-बार 'वाह' कह उठते ।

वाचक : युद्ध नीति, युद्ध धर्म के अनुसार ही, अंग के इस महाबलशाली नरेश कर्ण को, न केवल छल से कवच-कुण्डल विहीन होना पड़ा, बल्कि युद्धभूमि में घटोत्कच की उपस्थिति से, उससे उस अमोघ अस्त्र का भी प्रयोग करवाया गया, जो कर्ण को इन्द्र से प्राप्त हुआ था, और जिसे अर्जुन के लिए उसने सुरक्षित रखा था ।

वाचिका : युद्धभूमि में रक्त का कीचड़, और कीचड़ में फँसा कर्ण का रथ । वह भी कुछ ऐसा कि कर्ण के हाथ लगाए बिना कोई हिला भी न सके । दृश्य, अदृश्य की महामाया !

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

युद्ध का ध्वनि-प्रभाव

सारथी : कर्ण, समझ में नहीं आ रहा; थोड़े से कीचड़ में यह रथ इस तरह कैसे फँसा हुआ है कि रथ के जुते ये घोड़े भी खींचने में थके जा रहे हैं ।

कर्ण : (ओज स्वर में) नियति ही विरुद्ध हो गयी है लेकिन चिन्तित होने की कोई बात नहीं; मैं अभी रथ से उतरता हूँ, और चक्के को ऊपर करता हूँ ।

कूदने की ध्वनि

कर्ण : (ताकत लगाने का स्वर) आश्चर्य है, हाथ भर के कीचड़ में रथ का चक्का इस तरह फँसा हुआ है, जैसे रसातल से जा सटा हो ।

उदास संगीत का उभार

अर्जुन : भगवन, मैंने अपनी आँखों से देखा है—वनराज सिंह की तरह अपनी सेना पर कर्ण को टुटते; युद्धभूमि में पाण्डव सेना, दोपहर के सूर्य के समक्ष छाया की तरह, छुपती रही है। अगर यह कर्ण रथ के चक्के को कीचड़ से बाहर निकल लेने में समर्थ हो गया, तो क्या होगा । कुछ कहिए, प्रभु !

कृष्ण : अर्जुन, यही सुअवसर है, कर्ण के हृदय स्थल को तीरों से भेद देने का। यह अवसर अगर चुका, तो सृष्टि पर कोई शक्ति नहीं, जो कर्ण को पराजित कर सके । मैं भी नहीं। इसीसे कहता हूँ, साधो अपना वाण, और बेध डालो कर्ण के शरीर को ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचक : जिस तरह रघुकुल के राम के बाद सूर्यवंश का तेज कथाओं में रह गया, उसी तरह सूर्यपुत्र कर्ण के बाद अंगवंश की समस्त रश्मियाँ सिंकुड़ कर सन्ध्या की गोद में सिमट गईं ।

वाचिका : बैठने के लिए तो अंग के सिंहासन पर कर्ण का ज्येष्ठ पुत्र वृषसेन और उसके बाद वृषसेन का पुत्र पृथुसेन भी बैठा, लेकिन अंग के राजनीतिक इतिहास का जो पराभव, महाभारत के अन्त और महाबली कर्ण की मृत्यु के साथ हुआ, वह अंग देश के भाग्य के साथ हमेशा के लिए बंध गया । कर्ण का ज्येष्ठ पुत्र वृषसेन तो युद्ध में ही लड़ते हुए, कर्ण की मृत्यु के एक दिन पूर्व ही मारा गया था ।

वाचक : अंग का प्राक् इतिहास-काल शायद इस तरह छिन्न-भिन्न नहीं हुआ

होता, अगर इस प्रदेश के दुर्भाग्य ने इसका पीछा छोड़ दिया होता । संभव है, महाभारत के अन्त के बाद अंग की सीमा उसी तरह विस्तृत हो जाती, जैसा अंगपति कर्ण ने सम्पूर्ण भारत विजय से किया था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका ।

वाचिका : क्योंकि महाबली कर्ण का दूसरा पुत्र वृषकेतु, अंगदेश को छोड़कर, पाण्डवों के साथ ही हस्तिनापुर चला गया था । अद्‌भुत पराक्रमी था, वृषकेतु; जिस तरह कभी दुर्योधन के यज्ञ के लिए कर्ण ने दिग्विजय किया था, उसी तरह कर्ण के पुत्र वृषकेतु ने युधिष्ठिर के पक्ष में, अर्जुन के सहयोग से, अश्वमेघ यज्ञ किया था ।

वाचिका : त्रेता और कलियुग के संधिस्थल पर सूर्य-सा दीपता कर्ण, अपनी किरणों से युगों-कल्पों को आलोकित करता काल में समाधिस्थ हो गया। वह एक ऐसा पुरुष था, जिसके नाम को अपने नाम के साथ जोड़ कर अंग के राजवंश गौरवान्वित होते थे । अंग और मगध के कई नरेशों के नामों के पीछे 'कर्ण' उपाधि का मिलना इसका प्रमाण है । यह परम्परा आधुनिक काल के मुगल शासन तक देखी जा सकती है ।

वाचक : आधुनिक अंगप्रदेश के निर्माण के पूर्व, प्राचीन अंगप्रदेश का नागवंशी राजा भीम कर्ण इसका उदाहरण है, लोदी काल में और भी कई नागवंशी राजा हुए, जो प्रताप कर्ण, छत्र कर्ण और विराट कर्ण के नाम से इतिहास में उल्लखित हैं; जिनके विरुद्ध घटवार राजा उठ खड़े हुए थे ।

वाचिका : कौन थे ये नागवंशी राजा जो अपने नाम के साथ कर्ण की उपाधि लगाते थे ?

वाचक : अंगप्रदेश आदिकाल से नागोपासक देश रहा है । बिहुला-विषहरी की कथा इसका प्रख्यात उदाहरण है । नागवंश की उत्पति की कथा भी बहुत रोमांचकारी है । कहतें हैं नागवंश का संस्थापक फणि मुकुट राय, पुण्डरीक नाग और वाराणसी की ब्राह्मण कन्या पार्वती का पुत्र था।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

कथावाचक : (कथावाचक शैली) तो, प्यारे भक्तों, अब आप सब नागवंश की उत्पत्ति की कथा सुनिए ! जब जन्मेजय ने नागयज्ञ किया, तो नागों के बीच से पुण्डरीक नामक एक नाग आकाश की ओर उड़ गया, और बाद में मनुष्य का रूप धारण कर वह वाराणसी में बस गया । यहाँ

तक कि वह, वहाँ के ब्राह्मणों के बीच अपने को ब्राह्मण बताकर, ब्राह्मण कुमारों को शिक्षा देने लगा (कुछ और तेज स्वर में), तो सुनिए, आगे की कथा । पुण्डरीक था तो अद्‌भुत कुशाग्र बुद्धि का, इसीसे एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या पार्वती का विवाह उससे कर दिया । लेकिन एक रात की बात है, जब पुण्डरीक सोया हुआ था, तब पार्वती ने उसकी जिह्वा को, सांप की तरह, बीच से दो भागों में फटी पाया। पुण्डरीक के जगने पर पार्वती ने जब इसका रहस्य पूछा, तो पुण्डरीक ने सारी कथा सच-सच बता दी। (ढोलक पर थाप) बाद में पुण्डरीक, पत्नी पार्वती के साथ, अपने देश की ओर रवाना हुआ । जब वे सुतियाम्बे परगना के सिठोरिया ग्राम को पार कर रहे थे, तब दोनों थके-मांदे एक वृक्ष के नीचे सो गये । पार्वती का प्रसवकाल पूरा हो रहा था, और प्रसव में बस कुछ पलों की देर समझ कर, पुण्डरीक ने सर्प रूप धारण कर बगल के तालाब में छलांग लगा दी । (पॉज), भक्तों, नींद खुलने पर जब पार्वती ने पुण्डरीक को नहीं पाया, तो वह अत्यन्त व्याकुल हो उठी, और एक बालक को जन्म देने के बाद वह स्वयं सती हो गयी । (तेज स्वर में) भक्तों, तभी उस समय मानकी मुद्रा मुण्डा उधर से गुजर रहा था । यह देखते ही पुण्डरीक मानवी रूप में फिर उपस्थित हुआ, और कहा कि यह बालक नागपुर का संस्थापक राजा होगा ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

वाचिका : वही बालक आगे चलकर नागवंश का संस्थापक राजा हुआ, जो फणिमुकुट नाम से विख्यात हुआ । यह घटना सन् १०४ ई. की बतायी जाती है । लेकिन कई इतिहासकार नागवंश की भ्रूण-स्थापना ग्यारहवीं शती की कोख में देखते हैं । फणि मुकुट का विवाह वीरभूम के पंचेत के गोवंशी राजपूत घराने में होना भी यही सिद्ध करता है । वीरभूम अंगप्रदेश की सीमा में ही था । इतिहासकार डॉ. देवसहाय त्रिवेद के अनुसार,

संगीत-तरंग

सूत्रधार : ''कलिंग भी अंग राज्य में सम्मिलित था, और तंत्र भी अंग की सीमा एक शिव मंदिर से दूसरे शिव मंदिर तक बतलाता है । यह एक महाजनपद था । अंग में मानभूमि, वीरभूम, मुर्शिदाबाद और संताल परगना ये सभी इलाके सम्मलित थे ।''

संगीत-तरंग

वाचक : प्रथम नागवंशी राजा फणिमुकुट द्वारा सुतिया में सूर्यमंदिर का निर्माण कराया जाना और राजकीय ठाकुरबाड़ी की प्राण प्रतिष्ठा जगन्नाथपुरी के एक ही पंडे से कराना, साथ-ही-साथ नागवंशीय राजाओं का कर्ण उपाधि धारण करना; इतिहास के अनछुए-अनसुलझे अध्याय को खोलते हैं । सूर्यपुत्र कर्ण के प्रति श्रद्धा निवेदन का इससे बढ़कर और क्या पवित्र मार्ग हो सकता था; उस कर्ण के प्रति, जिसने अपने असीम शौर्य से एक सुव्यवस्थित साम्राज्य की नींव रखी थी ।

वाचिका : अंगप्रदेश की चम्पा से लेकर बंगाल राज्य के मिदनापुर जिला के झालाबाड़ी थाने में अतिरथी कर्ण के गढ़ों के ढहते ढूह; हथेलियों पर इतिहास के जीवाश्म को रख कर, अंगप्रदेश के अतीत का गायन करते हैं । आज के मिदनापुर और बेहरामपुर का संयुक्त भाग ही महाभारत काल में तब कर्ण सुवर्ण कहाता था । इतिहासकार प्रमत्थोनाथ मल्लिक के अनुसार; यहाँ अंगनरेश कर्ण का किला था ।

वाचक : इसे कर्ण सुवर्ण इसलिए कहा जाता था कि जावा-सुमात्रा जैसे स्वर्ण द्वीपों से स्वर्ण धन को लेकर लौटने वाले अंगप्रदेश के महानाविक कर्ण सुवर्ण के पोतपत्तर पर ही उतरते थे, और यही वह भूमि थी, जहाँ से स्वर्ण द्वीपों के लिए वे सागर यात्रा करते थे । व्यापार से प्राप्त इस अपार धन-स्वर्ण के कारण ही, वृहत्तर अंग महाजनपद का यह क्षेत्र, कर्ण सुवर्ण के नाम से ही प्रख्यात हो गया था ।

वाचक : जो भी हो, कभी अंगदेश, कभी मालिनी, कभी चम्पा, और कभी अनूप देश के नाम से ख्यात यह अंगप्रदेश, महाबली कर्ण के शासन के सूर्यास्त होते ही एक अनिश्चितता के धुंधलके के बीच खड़ा हो गया।

वाचक : सृष्टि के आदियुग के प्राकृतिक उत्पातों को झेलने वाले अंगवासी महाभारत के समर से उठे अंधकार को तोड़ने में भला कैसे नहीं सक्षम हो पाते । पहाड़ों, वनों को लाँघ कर अंगवासी सागर के पार जाने की ललक से भर उठे, समृद्धियों को पाने, और जीवन की शांति के रहस्य को फिर से जानने के लिए आत्मा, देवताओं के द्वार को खटखटाने लगे।

एक संगीत के उभार के साथ शीर्षक संगीत ।

समाप्ति संगीत

पंचम खण्ड

आरंभिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : अंगद्वीप के रूप में पृथ्वी के विकास के साथ ही जिस व्रात्य धर्म का उदय हुआ, वह अंगदेश में अवतारों के सतयुग, त्रेता के रामयुग, और द्वापरकाल के महाभारत के बीच बहता हुआ, कलियुग के काल तक चला आया था । अब अंग की धरती बुद्ध के वचनों से आन्दोलित हो रही थी । धारावाहिक की यह पांचवी कड़ी बुद्धकाल में अंग के इतिहास की कथा है। जब अंग प्रदेश बौद्धधर्म का अमृत मंथन कर रहा था ।

सं. स्वर : अंग समन्तं सर्वतः पृथ्वीं जयन् परीयाश्वेन च मेध्येनेजे इति ।

वाचक : जिस सम्राट अंग ने सारी पृथ्वी जीत कर अश्वमेघ यज्ञ किया था, उस सम्राट की चम्पा,ईसा की सातवीं सदी में,मात्र ७० मील की परिधि में सिमट कर शेष रह गयी थी, जिसमें नगर की सीमा ही ७ मीलों में व्याप्त था । समृद्धि और भव्यता के प्रतीक प्रासाद ढह चुके थे । आकाश मुट्ठि में सिमट गया था ।

वाचिका : मगध का विष्णुपद पर्वत कभी अंग के राजाओं के आमोद-प्रमोद और धार्मिक कृत्य का केन्द्र था । अंग के अन्तिम राजा ब्रह्मदत्त ने बिम्बिसार के पिता भत्तिय को पराजित कर मगध पर अधिकार किया था।

वाचक : बिम्बिसार अपने पिता की पराजय के अपमान को भूल नहीं सका, और ब्रह्मदत्त का वधकर चम्पा को अपने अधिकार में कर लिया ।

वाचिका : और इस तरह महाभारत के बाद अंग की बची-खुची स्वतंत्रता भी धूमकेतु की तरह आखरी बार चमक कर विलुप्त हो गयी। अंग मगध का एक उपराज्य बन गया, और कोणिक यानी अजातशत्रु अंग की चम्पा का उपराजा । अजातशत्रु ने अंग का इतना अधिक शोषण किया कि यहाँ की प्रजा ने विक्षुब्ध होकर बिम्बिसार से इसकी शिकायत की थी ।

वाचक : और जब अजातशत्रु मगध की गद्दी पर बैठा, तब अंग उसके साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया । इतिहास की यह घटना ६०० ई. पूर्व के आसपास की है । जैन धर्म के महातीर्थंकर महावीर का भी काल यही है । इनका निर्वाण काल ५४५ ई. पूर्व स्वीकारा गया है ।

वाचिका : तीर्थंकर महावीर के जन्मस्थल और निर्वाण भूमि के संबंध में अब तक ऐतिहासिक विवाद है । इनके जन्मस्थल को कोई तो बज्जि महाजनपद मानता है, और कई इतिहासकार अंग महाजनपद के जमुई जिला के अंचल को ही।

वाचक : अंगप्रदेश में जैनधर्म की कथा तो इस पंथ के प्रथम तीर्थकर वृषभ से ही आरम्भ हो जाती है ।

वाचिका : जैनग्रंथ वसुदेव हिण्डी के अनुसार जैनियों के प्रथम तीर्थकर बालक वृषभ स्वामी को अंगप्रदेश के प्रसिद्ध पौराणिक पर्वत मंदार की ही एक शिला पर लाकर रखा गया था, और जैन धर्म के नवें तीर्थकर सुविधिनाथ तो इसी महाजनपद के जमुई जिला के ही थे ।

वाचक : और तीर्थकर की परम्परा में बारहवें तीर्थकर भगवान वासुपूज्य के जन्म और निर्वाण की भूमि चम्पा ही है ।

वाचिका : जब अंगिका भाषा को आधार मानकर अंग्रेजी सरकार ने, सन् १७७३ में भागलपुर जिला का गठन किया, तब गिरीडीह इसी जिले का पर्वतीय प्रदेश था, लेकिन बिहार पुनर्गठन अधिनियम १९६५ ई. में, बिना किसी तर्क के, भागलपुर का भौगोलिक-राजनीतिक विभाजन कर दिया गया। गिरीडीह का अंचल बंगाल में डाल दिया गया, और बिहार पुनर्गठन अधिनियम २००० ने तो अंगप्रदेश को और भी निर्ममता से विभाजित कर दिया । बंगोपसागर तक फैला अंग का हिमालय किसी कटी-छटी पहाड़ी के रूप में खड़ा हो गया ।

वाचक : लेकिन अपने धर्म, अपनी भाषा को लेकर अंगप्रदेश कभी विभाजित न हो सका, और यही कारण है कि जैनधर्म की चर्चा उठते ही अंगप्रदेश के गिरिडीह से लेकर मुंगेर के जमुई तक का ही नहीं, मिदनापुर के कर्णगढ़ का भी रोम-रोम पुलक उठता है ।

वाचिका : तीर्थकर पार्श्वनाथ का संबंध गिरीडीह से ही रहा है।

वाचक : पार्श्व वैदिक कर्मकाण्ड से उदासीन अंगप्रदेश के व्रात्यधर्म के अनुयायी थे । जब वह तीस वर्ष के थे, तब गृहस्थ जीवन से विरक्त हो इन्होंने प्रवज्या ग्रहण की, और चौरासी दिनों के ध्यान के बाद सारे विकारों को जीत कर वह जिन हो गये । तीर्थकरों की परम्परा में पार्श्व २३ वें तीर्थकर थे ।

तरंगायित संगीत ध्वनि-प्रवाह

वाचक : तीर्थकर पार्श्व के बाद ही २४ वें तीर्थकर के रूप में भगवान महावीर

का जन्म जमुई के उसी पर्वतीय क्षेत्र में हुआ था, जो तीर्थकर सुविधिनाथ की भी जन्मभूमि है ।

वाचिका : भगवान महावीर की निर्वाण-भूमि को लेकर मतभेद है । कुछ तो महाराष्ट्र में इस भूमि की खोज करते हैं, और कुछ, राजगीर के निकट।

वाचक : विवाद होता रहे, लेकिन भगवान महावीर की प्रथम शिष्या चम्पा की ही बेटी थी, चन्दनवाला । क्या इतिहास अपने विवेक से यह समझ सकेगा कि जैनग्रन्थों में चम्पा का ऐसा अलौकिक वर्णन क्यों है ? (गीत की पंक्तियां उरभरती हैं, फिर हिन्दी अनुवाद के नेपथ्य में गूंजती हुई, अंत में प्रकट होती है)

जा वेढिय परिहाजलभरेण– णं मेइणि रेहइ सायरेण ।
उत्तुंगधवलकउसीसएहिँ – णं सुग्गु छिवइ वाहूसएहिँ ।
जिणमन्दिर रेहहिँ जाहिँ तुंग– णं पुण्णपुंज णिम्मल अहंग ।
कोसेयपडायउ घरि लुलंति– णं सेयसप्प णहि सलवलंति ।
जा पंचवण्णमणिकिरणदित्त– कुसुमंजलि णं मयणेण घित्त ।
चित्तलियहिँ जा सोहइ घरेहिँ– णं अमरविमाणहिँ मणहरेहिँ ।
णवकुंकुमछडयहिँ जा सहेइ– समरंगणु मयणहो णं कहेइ ।
रत्तुप्पलाइँ भूमिहिँ गयाइँ–णं कहइ धरंती फलसयाइँ ।
जिणवासपुज्जमाहप्पएण – ण वि कामुय जित्ता कामएण ।

सूत्रधार : ''वह चम्पा नगरी जल-भरी परिखा से घिरी होने के कारण, सागर से वेष्टित पृथ्वी के समान शोभायमान है । वह अपने ऊँचे प्रासाद-शिखरों से ऐसी प्रतीत होती है; मानों, अपनी सैकड़ों बाहुओं द्वारा स्वर्ग को छू रही हो । वहाँ विशाल जिनमंदिर ऐसे शोभायमान हैं; मानों, निर्मल और अभंग पुण्य के पुंज ही हों । घर-घर रेशम की पताकाएँ उड़ रही हैं, मानों आकाश में श्वेत सर्प सलबला रहे हों । वह पंचरंगे मणियों की किरणों से देदीप्यमान हो रही है; मानों, मदन ने अपनी कुसुमांजलि ही चढ़ायी हो । वह चित्रमय घरों से ऐसी शोभायमान है; जैसे, वे देवों के मनोहर विमान ही हों । नयी केशर की छटाओं की वहाँ ऐसी शोभा है कि मानों, वह कह रही हो कि मदन का समरांगण यही तो है । वहाँ स्थान-स्थान पर रक्त-कमल बिखरे हुए हैं; मानो, वह पुकार-पुकार कर कह रही है कि मैं ही सैकड़ों प्रकार के फलों को धारण करती हूँ । वहाँ भगवान वासुपूज्य के माहात्मय से पुरुष कामी

होकर कामदेव द्वारा जीते नहीं जाते । क्यों जैनग्रन्थ का अधिकांश साहित्य अर्द्धमागधी अंगिका में लिखित है ?

वाचिका : तनकावतार सूत्र के रचयिता विराज जैन चम्पा से ही क्यों आए ?

वाचक : और क्यों चम्पा में ही सॉन कोलविज को 'थेरगाथा' लिखनी की प्रेरणा मिली ?

वाचिका : भगवान महावीर के निर्वाणकाल में सारा अंगप्रदेश ही नहीं, मगध और विदेह से बाहर के प्रान्त भी उनके संदेशों से निर्मल बन रहे थे । तब चम्पा के मणिभद्र और पूर्णभद्र, चम्पा की तरह ही, राजगृह और पद्मावती में समान रूप में पूजित हो रहे थे । कौन थे ये मणिभद्र और पूर्णभद्र, और हिन्दुओं के देवों-ऋषियों से इनकी इतनी निकटता क्यों है ? इसका तो एक ही उत्तर हो सकता है कि चम्पा के इन दो जैन मतावलम्बी भाई, हिन्दु देवों-ऋषियों से इसलिए इतने निकट हैं कि जैन का जन्म और विकास अंगप्रदेश के क्षेत्रों में ही पहले हुआ, जिसके कारण ही हिन्दु और जैनों के देव इतने घुल-मिल गये हैं । भगवान महावीर हिन्दुओं के भी भगवान बन गये थे ।

वाचक : यह वही समय था, जब भगवान बुद्ध गया के तपोवन में महाज्ञान प्राप्त कर, प्राणियों को उसके दुखों से मुक्ति के लिए, मगध, अंग, बज्जि में धर्मोपदेश कर रहे थे ।

वाचिका : धर्मोपदेश के लिए महात्मा बुद्ध अम्बलतिका से नालन्दा आए थे, फिर वहाँ से अंग की चम्पा नगरी आए । चम्पा की गग्गरा झील और गंगा बुद्ध संगीत से गूंज उठीं ।

समूह स्वर: बुद्धं शरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघम् शरणं गच्छामि.....

वाचिका : तब अंग की चम्पा में सोणदण्ड नामक वैदिक ब्राह्मण की प्रतिष्ठा शीर्ष पर थी । बुद्ध के आने की खबर सोणदण्ड को लगी, तो असाधारण अन्तःदृष्टि से सम्पन्न बुद्ध से मिलने की उसकी इच्छा प्रबल हो उठी ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

सोणदण्ड : शिष्यों, तुमलोगों का कहना है कि बुद्ध के पास मेरे पहुँचने से बुद्ध की महिमा बढ़ेगी, लेकिन मैं तो वहाँ जाकर यह देखना चाहता हूँ कि भिक्खु गौतम किस अर्थ में मुझसे अधिक ज्ञानवान है, और किन

क्षेत्रों में मेरा ज्ञान बुद्ध से वृहत्तर।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

वाचक : और सोणदण्ड जब अपने सैकड़ों शिष्यों के साथ बुद्ध के समक्ष उपस्थित हुआ, तब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बातों को कहाँ से शुरू किया जाय । यह देखकर महात्मा बुद्ध ने ही बातचीत आरम्भ की ।

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

बुद्ध : सोणदण्ड, क्या आप बता सकते हैं कि अच्छे ब्राह्मण में किन-किन श्रेष्ठ गुणों का होना अनिवार्य है ? यदि आवश्यक लगे, तो आप वेदों के भी उदाहरण दें ।

सोणदण्ड : (प्रसन्न स्वर में) भिक्खु गौतम, सच्चे ब्राह्मण के तो पाँच ही गुण निर्धारित हैं । वे हैं—आकर्षक व्यक्तित्व, मंत्रोचार और कर्मकाण्ड कराने की निपुणता, सात पीड़ियों से रक्त की शुद्धता, उदात्त कर्म और ज्ञान ।

बुद्ध : इन पाँच विशिष्ट गुणों में भी कौन से गुण ब्राह्मणों के लिए अति विशिष्ट हैं, मैं सोणदण्ड से जानना चाहता हूँ । क्या इनमे पाँचो गुणों में से किसी एक के बिना भी श्रेष्ठ ब्राह्मण बना रहा जा सकता है ?

सोणदण्ड : (सोचते हुए) इन पाँचों गुणों में अन्तिम दो गुणों यानी सात पीड़ियों से रक्त की शुद्धता, और उदात्त कर्म-ज्ञान का होना एकदम आवश्यक है । पूर्व तीन गुण श्रेष्ठ ब्राह्मण के लिए अनिवार्य नहीं है ।

(कोलाहल की ध्वनि)

कई स्वर : यह हम ब्राह्मणों का अपमान है । आप मेरे गुरु नहीं हो सकते । आप को हमसे शास्त्रार्थ करना होगा । आप भिक्खु बुद्ध के प्रश्नों से दिग्भ्रमित हो गये हैं ।

बुद्ध : मान्य अतिथियों, अगर आप सबों को सोणदण्ड पर विश्वास है, तो शांत रहिये, अगर विश्वास नहीं है, तो आप सबों में कोई सामने संवाद के लिए आएं । मैं उनसे बात करना चाहूँगा ।

सोणदण्ड : (शांत करते हुए) शिष्यों, शांति रखें । आप सभी, मेरे ही चचेरे भाई अंगक की बात लें । अंगक को जो व्यक्तित्व प्राप्त है, वह तो सिर्फ भिक्खु बुद्ध को ही प्राप्त है, मंत्रोचार में उसकी वाणी की तुलना किसी से नहीं की जा सकती । वह अनुष्ठान कराने में भी निपुण है और मातृ-पितृकुल से रक्त की शुद्धता में भी उसका कोई मुकाबला

नहीं । लेकिन इसके बावजूद अगर वह व्यभिचारी है और ज्ञानहीन है, तो सुन्दर देह यष्टि, गंभीर मंत्रोचार, रक्त की शुद्धता से ही क्या हो जाता है । ऐसे में श्रेष्ठ कर्म और ज्ञान ही ब्राह्मण होने के लिए आवश्यक है; यह सर्वांगीण सत्य है, न कि भिक्खु गौतम का व्यक्तिगत सत्य ।

तालियों की गड़गड़ाहट

बुद्ध : साधुवाद सोणदण्ड ! आप सत्य ही कह रहे हैं । सद्कर्म और सद्ज्ञान ही जीवन की मूल्यवान उपलब्धि है । क्या आप यह बता सकते हैं कि सद्कर्म और ज्ञान को उच्चतर स्तर तक कैसे ले जाया जा सकता है?

सोणदण्ड : वह तो आप ही बता सकते हैं । हम तो सिर्फ सिद्धान्त जानते हैं । वास्तविक मार्ग के पथिक तो आप ही हैं ।

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

वाचक : आरम्भ में वैचारिक भेद और श्रेष्ठता बोध के कारण सोणदण्ड बुद्ध से राह चलते मिल भी जाता, तो हाथ उठाकर अभिवादन भर कर लेता, लेकिन अपने ब्राह्मण शिष्यों के साथ जब वह बुद्ध का शिष्य बना, तो अंग के प्रकाण्ड वेदाभ्यासी अम्बष्ठ और उसका पुत्र पुष्कर सादि भी बुद्ध के शिष्य बन गये ।

वाचिका : अंगदेश में बुद्ध के जहाँ-जहाँ चरण पड़े, वहाँ-वहाँ उनके शिष्यों की संख्या बढ़ती गई। बुद्ध जब वर्त्तमान बाँका के भदरिया ग्राम में पहुँचे, तब उनके साथ बारह सौ शिष्य थे, और इन्हीं शिष्यों के साथ वह आज के मधेपुरा-सहरसा के अँचल में भी पहुँचे थे, जो बुद्ध के समय में अंगुत्तराप के नाम से प्रसिद्ध था ।

वाचक : अंगुत्तराप में भी सेल नाम से प्रसिद्ध एक ब्राह्मण पंडित रहता था, जो वेदों, निघण्टु, कल्प, व्याकरण की शिक्षा अपने तीन सौ शिष्यों को दिया करता था । इतिहास में उल्लिखित है कि सेल ने अपने तीन सौ शिष्यों के साथ, बुद्ध से प्रभावित होकर, प्रव्रज्या ग्रहण किया था ।

वाचिका : वेदाभ्यासी पंडित ही नहीं, श्रेष्ठि परिवार की ललनाएँ भी भिक्षुणी बन रही थीं । उन्हीं में एक थी भदरिया के मेण्डक सेठ की पुत्री विशाखा। बौद्ध भिक्षुणी बनने के बाद विशाखा ने, नैहर से मिले नौ करोड़ मूल्य का अपना महालता हार, बुद्ध के लिए, दान कर दिया था।

वाचक : बुद्ध के प्रति यह लगाव देख कर विशाखा के ससुर महासेठ मिगार ने

उसे घर से निकलने का आदेश दिया । विशाखा ने इन्कार तो नहीं किया, लेकिन बाहर निकलने के बाद उसने पंचायत बिठाकर अपने को निर्दोष सिद्ध किया था । और तब सेठ ने विशाखा को माता कह कर संबोधित किया था । विशाखा मिगार माता के नाम से भी इतिहास में प्रसिद्ध है ।

वाचिका : विशाखा, बुद्ध की पहली शिष्या थी और चन्दनवाला, तीर्थंकर महावीर की पहली शिष्या, जो चम्पा के राजमहल से संबंध रखती थी, और अपने ऊँचे आदर्श के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हो गयी है ।

वाचक : वैसे अंग की धरती पर जैन धर्म का उतना विकास नहीं हो सका । इसका एक प्रमुख कारण तो जैन धर्म में कड़े आचार-विचार ही थे । हाँ, अपने कठिन आचारों के कारण जैनमत अंग महाजनपद में लोकप्रिय नहीं हो सका, जो लोकप्रियता बौद्धमत को प्राप्त हुई । लेकिन तत्कालीन अंग समाज में जैन और बौद्ध दोनों मतों को समान आदर प्राप्त था ।

वाचिका : इसका कारण भी स्पष्ट है । अन्तिम अंगपति राजा ब्रह्मदत्त की हत्या के बाद, अंग के पास अध्यात्म की शरण में जाने के सिवा और कोई विकल्प नहीं था । संभवतः धर्म ही इसके टूटे मन को शान्ति भी दे सकता था ।

वाचक : फिर बौद्ध और जैनमत इसीलिए भी तेजी से फैले, फूले, क्योंकि इन पंथों से मिलता-जुलता अंग देश का व्रात्य धर्म अभी भी शेष नहीं हुआ था, जिस धर्म से बुद्ध और महावीर भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके थे ।

वाचिका : व्रात्य धर्म के उपासक व्रात्यों को कई धार्मिक ग्रन्थों में हीन दृष्टि से भी देखा गया है। इसका एक प्रत्यक्ष कारण तो यही था कि व्रात्य कर्मकाण्ड में विश्वास नहीं रखते थे; व्रात्य भ्रमण को प्रमुखता देते थे; उनका विश्वास ही था कि विश्व की सृष्टि का कारण भ्रमण करती वायु ही है । व्रात्य सृष्टि के कोने-कोने में स्थित है, और व्रात्य जहाँ-जहाँ पहुँचता है, वहाँ-वहाँ प्रकृति की शक्तियाँ जाग उठती हैं ।

वाचक : व्रात्य भूत, पिशाचों में विश्वास करनेवाले थे । इस धर्म के अनुसार विश्व एक सजीव देह है और इसका स्वामी अनादि व्रात्य है । विद्वान व्रात्य इस जगत में उसका सहकारी हैं । व्रात्यों का यह भी विश्वास था कि अनादि व्रात्य २१ प्रकार से श्वास लेते हैं । (पॉज) ऐसा लगता

है कि पांतजलि योग शास्त्र का बीज व्रात्य धर्म में ही निहित था।

वाचिका : ये व्रात्य कौन थे । इतिहासकारों ने अनुमान लगाया है कि ये आर्यों की आदि शाखा थी, जो घने जंगलों, नदियों, पर्वतों के इस अंगदेश में आकर, अपने मूल संस्कार से कटकर, वेदविरोधी हो गये थे । लेकिन तर्कसंगत यही है, कि ये व्रात्य सृष्टि के पूर्ण जीवकाल में आए वे मानव थे, जो भूत, प्रेतों में विश्वास के साथ इस सृष्टि के स्वामी आदिव्रात्य में विश्वास करते थे । आदिव्रात्य अवश्य ही उनका आदिदेव शिव ही थे।

वाचक : व्रात्य यज्ञ नहीं करते थे । इसीसे महाभारत में व्रात्यों को महापातकी कहा गया है । राजाओं के आनन्दोत्सव और सुरापान में शरीक होना व्रात्यों की प्रमुखता थी ।

घुंघरुओं और सुरा डालने की ध्वनियाँ

नशीले स्वर

वाचिका : इतिहास और वैदिक ग्रन्थों से इसका पता लगता है कि व्रात्यों को संस्कारित कर आर्यों में शामिल करने की भी परम्परा चल पड़ी थी । दक्ष प्रजापति की कन्या का रुद्र से विवाह इसी की ओर संकेत है, लेकिन प्रजापति के यज्ञ में रुद्र की उपेक्षा यह भी सिद्ध करती है कि व्रात्यों के आर्यीकरण के बावजूद, आर्यों के बीच उन्हें वैदिक ऋषियों का सम्मान प्राप्त नहीं था । वैसे अथर्ववेद में व्रात्य को भ्रमणशील पुण्यात्मा यति का आदर्श भी कहा गया है ।

वाचक : व्रात्य चाहे कोई भी रहे हों; कुछ भी रहे हों; इतना तो तय है कि शिशु नागवंशी अजातशत्रु के अधीन महाजनपद अंग ने, व्रात्य धर्म के साथ बौद्ध और जैनपंथ का सहारा पाकर, एक नये किस्म की शक्ति पाई। इसे अपने अस्तित्व का बोध हुआ । जड़ता में एक नई जागृति जगी। नया जीवन पाने की आकांक्षा ने साहस की कल्पना को नये पंख दिए, और भारत की सीमाओं को छोड़कर अंग के साहसी युवक सागर के पार नये देशों की ओर चल पड़े । अंग का नया राज्य बनाने के लिए सागर पर बेड़ों को उतारने लगे ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

जल पर बेड़ों के बढ़ने की ध्वनि जो सम्बादों के पीछे मद्धिम गति से बजती रहती है

नाविक १ : महानाविक, अभी तो हम बंगाल की खाड़ी में ही हैं, स्वर्णभूमि तो

हमसे कई सौ मील दूर है ।

ज्वार भाटे का ध्वनि-प्रभाव

नाविक २ : समुद्र की लहरें कितनी भीषणता में उठ रही हैं ।

महानाविक : धैर्य खोने की कोई बात नहीं, नाविक । हमारे पोत पर सात सौ नाविक साथ हैं । यह गरजता समुद्र हमें भयभीत नहीं कर सकता ।

नाविक : (भय में) महानाविक, देखिए, सागर की लपलपाती लहरें हमारे पोत की ओर ही बढ़ रही हैं ।

भय में शोर गुल तीव्र होता है

महानाविक : नाविकों, पोत को संभालो, अन्यथा हममें से कोई भी नहीं बच पायेगा।

भीषण समुद्री शोर जो धीरे-धीरे शांत होता है

स्त्री स्वर : नाविक, अपने पोत को उस दिशा की ओर ले जाओ, लगता है, समुद्र की लहरों ने किसी बड़े पोत को लील लिया है, और वह नाविक समुद्र की लहरों से निकलने की निरन्तर कोशिश कर रहा है ।

समुद्र का शान्त शोर

स्त्री स्वर : नाविक, तुम कौन हो, किस देश के रहने वाले हो और इस तरह समुद्र के बीच हाथ-पाँव क्यों मार रहे हो, जबकि तुम्हें पता है, कि सहस्त्रों मील तक तट का कुछ भी पता नहीं।

महानाविक : देवी, मैं अंगदेश का महानाविक हूँ, मेरा नाम महाजनक है, मैं अपने पोत पर सात सौ साथियों के साथ स्वर्णभूमि की ओर जा रहा था, लेकिन समुद्री तूफान ने मेरे सभी साथियों को लील लिया है, और मैं इस महाविनाश में अकेला बच गया हूँ ।

देवी : क्या तुम्हें भरोसा है कि तुम इस उद्यम से समुद्र के तट तक पहुँच जाओगे ?

महानाविक : देवी, मैं तो यही जानता हूँ कि लोक में जब तक आदमी बना रहे, उसे अपनी रक्षा के लिए उद्यम करते ही रहना चाहिए । इसीसे तट का पता नहीं होने पर भी मैं उद्यम कर रहा हूँ ।

देवी : इस अथाह सागर में, जिसका कोई तट नहीं दिखता, उससे बच निकलने की तुम्हारी कोशिश व्यर्थ है, तुम्हारी मृत्यु तो इन्हीं लहरों में निश्चित है ।

महानाविक : (हाँफते हुए) आप ऐसा क्यों कहती हैं, देवी ! मैं उद्यम करता हुआ मर भी जाता हूँ, तो अपने अंगवासियों के बीच घृणा का पात्र होने से बच तो जाऊँगा । मैं तो इतना ही जानता हूँ कि जो व्यक्ति उद्यम

करता हुआ मृत्यु को प्राप्त करता है, वह पितरों के ऋण से मुक्त हो जाता है।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

वाचिका : सागर की उठती तरंगों को हजारों हजार कोस पीछे छोड़ते अंगदेश के साहसी युवक हिन्द-चीन के द्वीपों तक पहुँचने लगे थे । बर्मा और श्याम से दक्षिण और पूर्व की ओर जो द्वीप समूह हैं, वे कभी अंगद्वीप कहाते थे, जिसे ही भारतीय इतिहासकारों ने बृहत्तर भारत कहा है।

वाचक : वृहत्तर भारत वास्तव में वृहत्तर अंग ही है । अंग देश के व्यापारी और धर्मप्रचारक बड़ी-बड़ी नौकाओं पर समुद्र की प्रलयकारी लहरों को धकेले बर्मा पहुँचे थे ।

वाचिका : श्याम और चीन पहुँचे थे।

वाचक : मलाया पहुँचे; जावा पहुँचे ।

वाचिका : और बालि द्वीप पहुँचकर वहाँ चम्पा राज्य बसाया था । बाली द्वीप भारत से ३००० मील दूर जावा-सुमात्रा से पूर्व की ओर है । इस द्वीप के संबंध में यही पौराणिक विश्वास है कि अंगदेश के राजा बलि को जब पाताल भेज दिया गया, तब बलि के नाम पर इस द्वीप का नाम बालि द्वीप हुआ । इतिहास बताता है कि बालि द्वीप भारत के स्थल मार्ग से जुड़ा हुआ था, और चीनी इतिहास कहता है कि बाली का प्रथम राजपुरुष कौण्डिन्य वंश का था ।

वाचक : आगे चलकर ये सभी अंगद्वीप अंग राज्य के अन्तर्गत किये गये, और अंगकोर को उसकी राजधानी बनाई गई ।

वाचिका : आज जो कम्बोडिया के नाम से जाना जाता है—वह इतिहास की नौवी शताब्दी में अंग साम्राज्य ही था, जिसे कम्बोज के राजा जयवर्मा ने द्वीपों को एकीकृत कर बनाया था।

वाचक : अंगकोर का प्रसिद्ध मंदिर—अंगकोरवाट—आज भी अंगदेश की संस्कृति, विस्तार और समृद्धि का मौन साक्षी है ।

वाचिक : लेकिन यह भी सही है कि अंगप्रदेश के प्रभुत्वशाली व्यापारी शासक जब द्वीपान्तर स्थित दीपों तक यात्रा करने निकले, और वहाँ चम्पा राज्यों की स्थापना की तो उन राज्यों पर शासन करने के बदले वहाँ की आदिवासी जातियों को सभ्य और सुंसस्कृत ही किया इतना ही नहीं, बल्कि उन जातियों के साथ वैवाहिक, पारिवारिक, सामाजिक संबंधों को स्थापित करके वे उन्हीं के होकर वहीं रह गये । यह इसलिए

संभव हो सका कि अंगप्रदेश तब जाति-व्यवस्था के बंधन को स्वीकार ही कर सका था । जाति-वर्ण का विरोधी अंगप्रदेश ने कम्बोडिया से लेकर चीन तक वर्णहीन समाज का अमृत मंथन किया, जिसका चरम था कि द्वीपान्तर द्वीपों तक पहुँचने वाले ये अंग के शासक व्यापारी आखिर उसी देश-द्वीप के होकर रह गये । कालान्तर में उन द्वीपों की सभ्यता-संस्कृति ने अंग के निवासियों को भी प्रभावित किया, जिसके कारण उन चम्पा वासियों की संस्कृति ही नहीं बदली, इनके द्वारा बनाए स्थापत्यों में भी निरन्तर बदलाव होता रहा ।

वाचक : और यही कारण हैं कि अंगप्रदेश के उन शासकों का कोई क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं होता, 'वृहत्तर भारत' में इतिहासकार डॉ. आर. सी. मजुमदार ने भारतीय व्यापारियों के उन पूर्वी द्वीपों में जाने और बसने के विवरण में इस तथ्य को रेखांकित किया है । यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जब अंगप्रदेश के व्यापारी शासकों ने द्वीपान्तर द्वीपों में चम्पा राज्यों को बसाया, तो भारत के अन्य पूर्वी महाजनपद-जनपद का स्रोत भी उन नये चम्पा राज्यों की ओर प्रवाहित हुआ । अंगप्रदेश के चम्पा उपनिवेशकों का यह विस्तृत इतिहास इसलिए व्यवस्थित ढंग से प्राप्त नहीं होता, क्योंकि उनका उद्देश्य वहाँ द्वीपान्तर द्वीपों में साम्राज्य स्थापित करना नहीं था, धनोपार्जन ही उनका केन्द्रीय लक्ष्य था।

वाचिका : अंग का उपनिवेश-विस्तार पूर्व दिशा में ही हुआ हो, ऐसा नहीं है; इस महाजनपद के व्यापारियों और धर्मप्रचारकों ने भारत के उत्तरी-पश्चिमी प्रान्तों में भी अंग का उपनिवेश कायम किया था । आमूदरिया के क्षेत्र में कभी चम्पा राज्य था, जिसे अंगद्वीप के नाम से भी पुकारा जाता था।

वाचक : आचार्य चतुरसेन ने उल्लेख किया है कि कश्मीर में ही चम्पा नगरी नहीं बसायी गयी थी, कोचीन में भी इसी नाम की नगरी अंगवासियों ने बसाई थी । और इस तरह ई. पू. से लेकर नौवीं सदी शताब्दी तक अंगदेश भारत की सीमा से निकल कर पूर्व, पश्चिम, उत्तर के देशों में बस गया था । बिन्दु सागर बन गया था । आखों में आकाश बस गया था । जैसे सम्राट अंग ने फिर से सारी पृथ्वी को अपने अधीन कर लिया हो, इतिहास जैसे एक बार फिर घूम गया हो ।

हर्षभावोद्रेक संगीत के साथ शीर्षक संगीत

समाप्ति संगीत

षष्ठ खण्ड

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : 'अंगदेश का अमृत मंथन' धारावाहिक रेडियो नाटक के पाँच खण्डों में आपने अंगदेश के सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग के आरंभ की कथा सुनी, और कलि के शाप को धोने आये, अंग की धरती पर, तीर्थंकरों के साथ भगवान बुद्ध की गाथा भी । अब, धारावाहिक के छठे हिस्से में प्रस्तुत है—अंग की धरती पर बौद्ध धर्म का आत्मसंघर्ष, उत्कर्ष और पराभव के परिदृश्य । पालवंशी अंग के इतिहास का यह वह काल था, जब काया के मध्य में अमृत की खोज हो रही थी ।

वाचक : छः या साढ़े छः सौ वर्ष ई. पू. में अपनी शक्ति और समृद्धि से अंगजनपद महाजनपद बन गया था । पूरे भारत में ये महाजनपद बारह थे, और उन महाजनपदों में अंग सबसे अग्रभाग में था।

वाचिका : अग्रभाग में अंग प्रदेश के होने का एक कारण—इस प्रदेश का चम्पा बन्दरगाह था, जो तत्कालीन भारत के आन्तरिक पोतपत्तन में विख्यात था । चम्पा के इसी पोतपत्तन से अंग के साहसी नाविक समुद्र की लहरों पर उतरते थे ।

वाचक : अंग के इतिहास में ऐसे कई महानाविकों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें समुद्र यात्रा के क्रम में समुद्री तूफानों का भारी संघर्ष सहना पड़ा था, और वे महानाविक अपनी जीवटता के कारण उससे निकल गये थे ।

वाचिका : अपने प्राणों की बाजी लगा कर उन महानाविकों ने, समुद्र पार के देशों से धन, अपने पोतों पर लाद कर, अंगदेश में लाया था । इतना धन कि यहाँ सोने का मूल्य धूल की तरह हो गया था ।

वाचक : इतिहास में इसका उल्लेख है कि चम्पानगर का शोण कोटिविंश नामक एक सेठ ही बीस करोड़ स्वर्णमुद्राओं का स्वामी था । उसके खजाने में हिरण्यमुद्राओं में भरी अस्सी बैलगाड़ियाँ थीं, और उसके द्वार पर ४६ गजराज झूमते थे ।

वाचिका : शोण कोटिविंश बाद में भिक्षुक होकर राजगृह चला गया था ।

वाचक : राजनीतिक दृष्टि से अंग भले ही गुप्त वंश तक स्वतंत्र नहीं रहा, लेकिन ज्ञान और आर्थिक समृद्धि की दृष्टि से यह कभी भी निर्बल नहीं हुआ । इसकी आर्थिक समृद्धि का पता तो इससे भी लगाया जा

सकता है कि १२वीं शताब्दी के राजा इन्द्रद्युम्न की पत्नी, सोने से बने कमलदल पर बैठ कर, स्नान करती थी ।

वाचिका : जमुई जिला में आज भी गढ़ के अन्दर रानी का वह तालाब देखा जा सकता है । इन्द्रद्युम्न के पास अपार स्वर्ण मुद्राओं का एक वृहद कोषागार था, जो प्रस्तर चट्टान से बन्द रहता था । जब इन्द्रद्युम्न अपनी रक्षा के लिए गढ़ छोड़ कर लक्खीसराय की ओर भाग रहा था, तब उसी कोषागार में अपने एक विश्वासी मगर दुराचारी योद्धा को उसी प्रस्तर चट्टान से बन्द कर दिया था । इतिहासकार कहते हैं कि वह विश्वासी योद्धा इन्द्रद्युम्न की पुत्री से विवाह करने की आकांक्षा पालने लगा था, और इसी कारण वह राजा के कोप का शिकार हुआ।

वाचक : प्राचीन चम्पारण्य का राजा इन्द्रद्युम्न पालवंशी राजा था, जो इख्तियार खिलजी के आक्रमण के समय जमुई से भाग कर लक्खीसराय में गढ़ बना कर बस गया था । और फिर वहाँ से भी निकल कर उड़ीसा भाग गया । इतिहास की यह घटना ११९८ ई. की है । इन्द्रद्युम्न पहले देवघर, फिर उड़ीसा पहुँचा । इतिहासकार समदार के अनुसार इन्द्रद्युम्न के पूर्ववर्ती राजा मदन पाल का अधिकार क्षेत्र पटना से मुंगेर तक व्याप्त था ।

वाचिका : पालवंशी राजाओं का संबंध इतिहास में बंगाल के शासकों की परम्परा में दिखाया गया है, जो ग्रेटर बंगाल के स्वप्न का एक हिस्सा है । अन्यथा पालवंशी राजाओं का संबंध अंग महाजनपद से ही था; जिस वंश के राजाओं ने अंगप्रदेश की संस्कृति के उत्कर्ष में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि पालवंशी राजाओं का संबंध पूर्वी द्वीपों में बने चम्पा राज्य से बराबर बना रहा।

वाचक : अंग महाजनपद का उत्तरी भाग 'अंगुत्तराप' भी पालवंशी राजाओं के राज्य का मुख्य अंग था । महात्मा बुद्ध अंगप्रदेश के भद्रिया ग्राम से निकल कर ही 'अंगुत्तराप' पहुंचे थे।

वाचिका : महात्मा बुद्ध अपने बारह सौ शिष्यों के साथ तारापुर के पूर्व भागमें स्थित शंभूगंज से होते हुए पहले सुल्तानगंज पहुंचे थे, और वहीं से खगड़िया के चौथम से होते हुए वनगाँव यानी आपण निगम पहुंचे । इतिहासकार हवलदार त्रिपाठी सहृदय के अनुसार,

ध्वनि-प्रभाव

सूत्रधार : ''आपण निगम बनगाँव ही था, अपने इस कथन की पुष्टि में मैं कहना

चाहूँगा कि गंगा के दक्षिण भाग में अंग देश की पश्चिमी सीमा किऊल नदी की धारा थी, जो लखीसराय से सूर्यगढ़ा तक विस्तृत थी। किऊल नदी का पश्चिमी भाग मगध के क्षेत्र में आ गया था । इसी के सामने गंगा के बाएँ (उत्तरी) भाग में बलिया-लखमिनिया के साथ खगड़िया का भाग तथा इसके उत्तर, जीवछ-कमला, तिलयुगा और करेह नदी के संगम से पूर्व का भाग ही अंगुत्तराप था ।''

संगीत प्रभाव

वाचक : अंगुत्तराप के आपण निगम में ही वह 'जातिवन' जहाँ बुद्ध रहे थे । देववन या देवनवन पालवंशी राजा देवकाल में पड़ा होगा । पालवंशी राजा बुद्धभक्त थे । इसी आपण निगम में पालवंशी राजा विग्रह पाल (तृतिय) का वह ऐतिहासिक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें पाल राजाओं के पूर्व पुरुष गोपाल की, भगवान बुद्ध के रूप में प्रार्थना की गई है । महिषी ग्राम में प्राप्त यह अद्‌भुत ताम्रपत्र पाल वंशी राजाओं के पूर्व पुरुष गोपाल के जन्मस्थान और वंश को समझाने में ऐतिहासिक महत्व रखता है । सिर्फ अनुमान के आधार पर गोपाल को वारिन्द्री का रहने वाला मान लेना उचित नहीं । खगड़िया पालकालीन अलोलीगढ़ का ध्वंशावशेष और उत्खनन में मिली पालकालीन मूर्त्तियाँ मूक इतिहास को स्वर देते हैं ।

वाचिका : और किसी एक पुस्तक के आधार पर उसे हीनवंश का ठहराया जाना भी ऐतिहासिक भूल है । गोपाल प्रकाण्ड विद्वान पालराजा था और वैसा ही पराक्रमी राजा जिसने अंग के आस-पास के राज्यों के साथ बंगाल को भी अपने राज्य के अधीन किया था; जिसने २७ वर्षों तक शासन किया, और अस्सी वर्ष में मृत्यु को प्राप्त हुआ । धर्मपाल, गोपाल का प्रतापी पुत्र था ।

वाचक : सन् ८०७ और ८०८ ई.में बौद्ध धर्मपाल गद्‌दी पर बैठा और धर्मपाल के बाद उसका लड़का देवपाल ९३३ ई. के आसपास गद्‌दी पर बैठा, जो पिता की तरह ही बौद्ध मतालम्बी था । देवपाल का समकालीन था, सुमात्रा का राजा शैलेन्द्र । शैलेन्द्र के पुत्र देववर्मा ने, देवपाल की अनुमति से, नालन्दा में स्वर्णद्वीपी छात्रों के लिए छात्रावास बनवाया था। इस खर्च के लिए देवपाल ने गया और राजगृह के पास पाँच गाँवों की आय दे दी थी, इसका उल्लेख मुंगेर से प्राप्त ताम्रपत्र में है।

वाचिका : देवपाल के बाद उसका पुत्र विग्रहपाल गद्‌दी पर बैठा, और इसके बाद अंग के राजा के रूप में नारायणपाल गद्‌दी पर आसीन हुआ, लेकिन प्रतिहारों के कारण नारायणपाल के अधिकार से तिरहुत और पूर्णिया

का राज्य छिन गया, और नारायणपाल का शासन क्षेत्र अंग महाजनपद के मुंगेर, भागलपुर और संताल परगना तक ही सिमट कर रह गया। नारायणपाल के अधिकांश लेख इन्हीं क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं ।

वाचक : इतिहास से यह भी ज्ञात होता है कि नारायण पाल की राजधानी चम्पा थी या फिर मुंगेर का मुदगिरि क्षेत्र । यहाँ यह भी स्मरणीय है कि मिहिर भोज के ५५ वर्ष और उसके पुत्र महेन्द्र के १४ वर्ष के शासन काल में यानी ८३६ ई. से लेकर ९०० ई. तक अंग ही ऐसा महाजनपद था, जो कन्नौज के प्रतिहार साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा, जबकि सारा बिहार प्रतिहार-साम्राज्य के ही अन्तर्गत था।

वाचिका : लेकिन चन्देलों के आक्रमण के समय विग्रहपाल द्वितीय को फिर मुंगेर और अंग के पूर्वी पहाड़ी अंचलों में शरण लेनी पड़ी । आज भी भागलपुर के कहलगाँव अंचल में पालवंश्यिों के वंशज पुरानी कथा को कहते सिमटे हुए हैं ।

वाचक : पालवंशी राजाओं में महिपाल प्रथम, जो ९७५ से १०२६ के बीच था, ने अपने राज्य को विस्तृत किया था ।

वाचिका : इस पालवंश का संस्थापक शासक तो श्रीगोपाल था, लेकिन इस वंश के साम्राज्य को विस्तृत करने में प्रतापी राजा धर्मपाल की ही भूमिका प्रमुख रही, जिसका शासनकाल ७६९ से ८०९ ई. तक का है। ध र्मपाल ने ही अपने शासनकाल में विक्रमशिला विद्याकेन्द्र की स्थापना की थी, जिस विद्याकेन्द्र के ही आचार्य थे सिद्ध कवि सरहपा ।

वाचक : विक्रमशिला विद्याकेन्द्र तंत्र का विश्वविख्यात केन्द्र था, और सरहपाद काव्य के साथ तंत्रविद्या के भी प्रख्यात ज्ञाता ।

संगीत प्रभाव

वाचिका : सरहपाद ने चेतना के स्वातंत्र्य को स्वीकारते हुए वर्जनाओं के बहिष्कर के लिए काम-मार्ग को स्वीकार किया था । उच्चकुल में जन्म लेकर भी उन्होंने निम्न वर्ग में उत्पन्न एक कन्या के साथ जीवन जीना शुरू किया था, जो शुद्धतावादियों के लिए परेशनियों का कारण था ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

नागरिक-१: कौन कहता है कि सरह उच्च कुल में उत्पन्न है, अरे इसे तो डाकिनी ने जन्म दिया है, डाकिनी ने; उसी से इसको लोग डाकि भी कहते हैं, डाकि । और डाकि का मतलब जानते हो, जिसकी माँ कोई साधारण औरत नहीं, डाकिनी हो ।

नागरिक-२: (भय का स्वर) ऐसा ?

नागरिक-१: और नहीं तो क्या ! और फिर सरह उच्च कुल का होता, तो उसके ऐसे लक्षण होते ? पन्द्रह वर्ष की एक किशोरी को लेकर साधना कर रहा है, वह किशोरी भी किस जात की ? निम्नतम जात की ।

नागरिक-२: सुना है, वह किशोरी, दही में मूली डाल कर जो सब्जी बनाती है, सरह को वह सबसे ज्यादा प्यारी है; अपनी साधना से भी ज्यादा ।

नागरिक-१: तुमने गलत क्या सुना है, एकदम सही बात है । लेकिन यह सब भी कोई बात नहीं, सबसे बड़ी बात है कि सरह दिन में 'भ्रम पैदा करने के लिए' ब्राह्मण जैसा आचार-विचार दिखाता है, और रात में माँस, मदिरा, का सेवन करता है ।

नागरिक-२: छी-छी, घोर अपकर्म ! हमें इस बात की जानकारी राजा रत्नपाल तक पहुँचानी होगी।

नागरिक-१: बिल्कुल, बिल्कुल। हम साथ में अन्य लोगों को भी ले लेंगे । चलो ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

कई स्वर : महाराज की जय हो, धर्म पर आई विपत्ति के निवारण के लिए हमलोग यहाँ आए हैं।

रत्नपाल : आखिर धर्म पर ऐसी कौन-सी विपत्ति आ गई है, जिसके निवारण के लिए मेरी जरूरत आ पड़ी है ?

एक स्वर : महाराज, उच्च कुलोद्भव कहा जाना वाला सरह, अत्यन्त नीच जाति की एक कन्या के साथ रहते हुए, तंत्र की साधना कर रहा है ।

रत्नपाल : यह तो घोर पाप है, (क्रोध में) मंत्री, अभी तुरंत सरह को राजदरबार में उपस्थित करो और पिघलते तांबे को भी मंगवाया जाय ताकि सरह के गले में उसे उतारा जा सके।

मंत्री : जो आज्ञा महाराज ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

रत्नपाल : तुम्हारे द्वारा किया जा रहा घोर पाप मैं सुन चुका हूँ, सरह । तुम्हें कुछ भी बताने की जरूरत नहीं । दण्डाधिकारी, सरह के कंठ में पिघले तांबे को उतारा जाए ।

दण्डाधिकारी : जो आज्ञा ।

असमान्य संगीत प्रभाव

दण्डाधिकारी : आश्चर्य है महाराज, यह पिघला तांबा तो सरह के कंठ में जाते ही ठण्डे जल की तरह गले के नीचे उतर गया ।

रत्नपाल : (क्रोध में) कोई बात नहीं, इसे सामने की झील में फेंकवा दो, ताकि डूब कर यह पापी मर जाय ।

सरहपाद : तो, क्या तुम समझते हो, मैं झील में डूब कर मर जाऊँगा ?

रत्नपाल : तुम्हें अभी पता चल जायेगा, सरह । मंत्री आदेश का पालन हो ।

दण्डाधिकारी : जो आज्ञा महाराज ।

रत्नपाल : अब आप सब जाइए । सरह का खेल खत्म हो गया ।

एक साथ कई: महाराज की जय हो, धर्म की जय हो ।

लौटती पगध्वनियां

दण्डाधिकारी : मुझे क्षमा करें महाराज, सरह को झील में फेक तो दिया गया, लेकिन वह कमल के पत्ते की तरह ऊपर-ही-ऊपर उपलाता रहा । गोतने पर भी नीचे नहीं हुआ, तो इसे पकड़ कर ले आया हूँ ।

भीड़ का कोलाहल

रत्नपाल : (आश्चर्य से) क्या यह सच है ? तो, सरह पर लगाये गए आरोप झूठे हैं ? नहीं इतने लोग एक साथ झूठ नहीं बोल सकते । दण्डाधिकारी मेरे सामने ही सरह पर खौलते तेल को डाला जाए ।

सरहपाल : रत्नपाल, भीड़ की सुनते हो, मेरी नहीं ।

रत्नपाल : मौन होओ, पाप । मंत्री, आदेश का पालन हो ।

दण्डाधिकारी : ऐसा ही होगा महाराज ।

संगीत धीरे-धीरे उठता हुआ
भयानक हो उठता है और फिर शांत

रत्नपाल : (आश्चर्य के स्वर में) कुछ भी नहीं हुआ !

सरहपा : मुझे कुछ नहीं होगा; रत्नपाल । कुछ नहीं होगा । मैं तो तुमलोगों की मुक्ति के लिए इस लोक में आया हूँ, मुझे क्या होगा ।

दृश्य परिवर्तन-ध्वनि

वाचिका : सिद्ध सरहपाद सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भागलपुर के सबौर अंचल में जन्मे थे, जो राहुल भद्र के नाम से नालन्दा विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर भी रहे । इतिहास में ऐसा भी उल्लिखित है कि सरहपा कुक्करीपा के बड़े भाई थे, और इन दोनों ने ही मिलकर नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की थी ।

वाचक : सरहपाद का दर्शन था कि काया से विरक्त होकर साधना असंभव है, इसीसे अतिवाद से मुक्त होकर प्राकृतिक स्वभाव से ही सहज सिद्धि

संभव है ।

काव्यपाठ

काया बेधि अमृत झरै
गलेबद्ध डौम्बी कुमारी, कमूर से निकली बसन्त शाखा
डमरू अनहद बाजै सो डमरू कहै, योगिनी शबद है
नाद और बिन्दु बोलै ।

वाचिका : आचार्य शान्तरक्षित भी भागलपुर के सबौर के ही निवासी थे, जिन्होंने नालन्दा के आचार्य ज्ञानगर्भ में प्रवज्या ली थी । शान्तरक्षित ७५ वर्ष की उम्र में तिब्बत की सीमा में प्रवेश करते हुए, धर्मोपदेश के लिए, लहासा पहुंचे थे ।

वाचक : तब विक्रमशिला विद्याकेन्द्र में भुसुकपा, शबरपा, शांतिपा, लुचिकपा, जयान्तपा, निर्गुणपा, चेलुकपा, चम्पकपा, नारोपा जैसे सिद्ध कवि आचार्य ही नहीं, तंत्र के प्रख्यात पंडित दीपंकर श्रीज्ञान भी विक्रमशिला विद्याकेन्द्र में थे । ये सभी सिद्ध अपने जन्मस्थान से भी अंगप्रदेश के ही आचार्य थे ।

ध्वनि प्रभाव

वाचिका : दीपंकर श्रीज्ञान का जन्म भागलपुर के सबौर अंचल में राजा कल्याणश्री के राजपरिवार में हुआ था । लगभग चौदह मास समुद्र की यात्रा कर वह स्वर्णद्वीप पहुँचे थे और उन्होंने बौद्ध धर्म का विशेष अध्ययन किया था । १०४२ ई. के आसपपास, तिब्बत के राजा के अत्यधिक अनुरोध पर, श्रीज्ञान ६१ वर्ष की अवस्था में, अनेक कष्ट झेलते हुए तिब्बत पहुँचे थे । वहाँ तिब्बती राजा ने उनका ऐतिहासिक सम्मान किया था, और जहाँ उन्हें अतिश की उपाधि मिली। लहासा में ही लगभग ७३ वर्ष की अवस्था में दीपंकर श्रीज्ञान का निर्वाण भी हुआ ।

वाचक : दीपंकर श्रीज्ञान उसी वंश के थे, जिस वंश में शांतिरक्षित आए थे ।

वाचक : इस महाविहार में प्राप्त मूर्तियाँ भी अंगदेश के पालवंशी राज्यकाल में हुई मूर्तिकला के अद्‌भुत विकास की कहानियाँ कहती हैं । मिट्‌टी और पाषाणों की भव्य मूर्तियाँ यह बताती हैं कि राजनीतिक आक्रमण और उतार-चढ़ाव से दूर अंगप्रदेश ने, पालवंश के राज्यकाल तक, अपने ज्ञान और कला का कितना अद्‌भुत विकास किया था ।

वाचिका : विक्रमशिला के महाविहार में ही हिन्दी साहित्य-सृजन की भी पहली नींव

रखी गईं ।

(पूर्व गीत पाठ)

सहसा द्रुतगति का संगीत

वाचक : **(कातर स्वर)** ११९६ ई. का काल । तुर्क सरदार मलिक इसामुद्दीन आगुल बुक का विजय-अभियान और उसके द्वारा इखियारुद्दीन मुहम्मद-बिन-बख्तियार को चुनार का प्रदेश सौंपना ।

घोड़ों के टापों की तीव्र गति

वाचिका : मुहम्मद बिन बख्तियार के लूटपाट और आक्रमण के नीचे, मगध से लेकर अंग महाजनपद तक का प्रदेश, रौंदा चला गया ।

(चीख और आतंक का ध्वनि-प्रभाव)

वाचक : मुंगेर के खड़गपुर का राजा इन्द्रद्युम्न अपने गढ़ को छोड़ कर प्राणों की रक्षा में मुंगेर की पहाड़ियों में जा छिपा । आतंक की विजय का हौसला उत्कर्ष पर था ।

नेपथ्य के टापों की ध्वनि तीव्र

वाचिका : मुहम्मद बिन बख्तियार के इस लूटपाट के आक्रमण से अंगप्रदेश का विश्वविख्यात बौद्ध महाविहार भी न बच सका । पांडुलिपियों का होलिका दहन हुआ । भवन की दीवारें गिराई गईं । मूर्तिभंजन हुआ। बौद्ध भिक्षुकों के सर उतारे गये, और इस तरह १२०० ई. में विश्व का महान विद्याकेन्द्र, यातनाओं और विस्मृति के गर्दोगुबार की मोटी परतें ओड़ कर स्वयं सो गया ।

(उदास संगीत)

वाचक : अब इतिहासकार अनुमान लगा रहे हैं कि इस महाज्ञान के महाविहार को नष्ट करने में सिर्फ तुर्क सरदार मुहम्मद-बिन-बख्तियार का ही हाथ नहीं था; हिन्दुओं के भी हाथ थे । पालवंशी बौद्ध राजाओं और सेनवंशी हिन्दु राजाओं में धार्मिक मतभेद को लेकर आपसी कट्टरता उन्माद तक बढ़ गई होगी, जिसकी अमानवीय परिणति बौद्ध महाविहार के ध्वंश में दिखी । यह काल पालवंशियों के पराभव और सेनवंशियों के प्रभाव का काल था ।

वाचिका : लेकिन यह कारण ही विक्रमशिला के महाविहार के ध्वंश के कारण नहीं हो सकता । इसमें उस काल का व्यभिचार भी शामिल होगा, जो महाविहार में पाँव जमा चुका था, जिसके विरुद्ध स्थानीय प्रजा भी हो

गई होगी, और जब महाविहार अतीत की गाथा बनने जा रहा था, तब स्थानीय उग्र लोगों की भी उसमें कम भूमिका नहीं रही होगी । मुहम्मद बिन बख्तियार को तो धन से मतलब था, और महाविहार से आखिर उसे कितना धन मिल सकता था ।

वाचक : अब तो ये सारी बातें साक्ष्य और अभिलेख को देखने के बाद ही कही जा सकती हैं ।

वाचिका : लेकिन इतिहास के बन्द पड़े पन्ने अब बोलने लगे हैं—इतिहास यह जान कर चमत्कृत है कि जब विक्रमशिला के बौद्ध महाविहार की सभ्यता को धराशायी करने का ताण्डव मचा हुआ था, तब विक्रमशिला का एक आचार्य शाक्य श्रीभद्र, उस महाविनाश से निकल कर तिब्बत पहुँच गया था, और तेरहवीं शदी में जब चंगेज के नेतृत्व में मंगोल अफगानिस्थान पर विजय की पताका रहा था, तब शाक्य श्रीभद्र मंगोलिया में बौद्ध धर्म के ज्ञान के दीप को आकाश की ऊँचाइयों तक उठाए हुए था ।

आह्लादक संगीत प्रभाव

वाचक : इतिहास में उल्लेख है कि बौद्ध आचार्य शाक्य श्रीभद्र ने चंगेज के पोते मानूक खान तक को बौद्ध धर्म की दीक्षा देकर यह सिद्ध किया था कि अंगदेश राजनीतिक, आर्थिक, रूप से तो टूट सकता है, लेकिन संस्कृति और ज्ञान का आलोकध्वज उसके मजबूत हाथों से कभी नहीं छूट सकता ।

आह्लाद भाव का संगीत ।

शीर्षक संगीत

सप्तम खण्ड

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : 'अमृतदेश : अंगप्रदेश' धारावाहिक के खण्ड एक, खण्ड दो, खण्ड तीन, खण्ड चार, खण्ड पाँच, और खण्ड छः में आपने सुना—पृथ्वी के रूप में अंगद्वीप का जन्म, और द्वीप पर शिव और अन्य देवों के अवतार के साथ-साथ, ऋष्यशृंग जैसे ऋषियों की कथा। साथ ही महायानियों, सहजयानियों के बौद्ध विचारों का उत्कर्ष और पराभव। इतिहास की इस लम्बी अवधि में सभी धर्मो ने, राजवंशों ने, अपने-अपने समय के गौरव को, पत्थरों-धातुओं की मूर्त्तियों में ढाला; भवनों, मंदिरों, किलाओं में अपनी कलाप्रियता को उभारा । धारावाहिक की यह सातवीं कड़ी, अंगप्रदेश के प्राचीन और मध्यकाल के इतिहास को कहते पुरातत्वों की कथा है; सांस्कृतिक धरोहरों का अमृत-मंथन।

वाचक : भारत में संस्कृति के चरण-चिन्ह सिर्फ वहाँ-वहाँ दिखे हैं, जहाँ-जहाँ पुरातत्वविदों ने देखने की कोशिश की; जहाँ उन्होंने देखने की कोशिश ही नहीं की, वहाँ वे दिखते कैसे!

वाचक : लेकिन जैसे सभ्यता के चरण नहीं रुकते, वैसे ही इतिहास की खोज की प्यास भी नहीं मरती, और इसी प्यास के कारण इतिहासकारों ने खोज निकाला—अंग के आदिकाल में प्रवाहित हो रही संस्कृति की कलकल-छलछल करती पतली सी धार ।

वाचिका : एक ऐसी संस्कृति और सभ्यता, जो या तो सिन्धु सभ्यता के साथ अंगदेश में फल-फूल रही थी, या फिर इससे भी पूर्व; क्योंकि इतिहास गवाह है कि सृष्टि में चेतना ने जहाँ आँखें खोली थीं, वह प्रदेश, अंग का दक्षिण प्रदेश ही था ।

(पत्थर तराशने की ध्वनि)

वाचक : अंगप्रदेश की इस आदिम सभ्यता-संस्कृति को इतिहासकारों ने मड़प्पा की सभ्यता के नाम से रेखांकित किया है । हड़प्पा से मिलता-जुलता नाम—मड़प्पा ।

वाचिका : क्या होता है मड़प्पा का अर्थ । मोड़प्पा यानी मुर्दों की घाटी इतिहासकारों का कथन है कि अंगप्रदेश के इस पर्वतीय क्षेत्र में, सभ्यता को लील जाने वाली कभी विकराल ज्वालामुखी फूट पड़ी होगी, जिसके कारण

ही धरती को जड़ से हिला देनेवाला भूकम्प भी उठा होगा, और उसी कारण दुमका से लेकर राजमहल तक बसी, एक फलती-फूलती सभ्यता ने, पहाड़ियों के नीचे, सदा के लिए आँखें मूंद ली होंगी। उग्र ज्वालामुखी के कारण खेतों के ऊपर पहाड़ खड़ा हो गया, और बचे हुए लोगों ने उस पहाड़ को मड़प्पा पहाड़ कहना शुरु किया।

वाचिका : भागलपुर-दुमका के नौनीहाट अंचल के उत्तर में खड़ा मड़प्पा पहाड़ उस आदिम सभ्यता की मौन कथा है ।

एक करुण संगीत

वाचक : सर्वेक्षण तो यही बताता है कि यह मड़प्पा सभ्यता, हड़प्पा की सभ्यता से भी अधिक प्राचीन है, वैसे दोनों के अर्थ एक ही हैं, और दोनों ही सभ्यताएं पंच नदियों के बीच फल-फूल रही थीं ।

वाचिका : गंगा, वासलोई, ब्राह्मणी, अजय और मयूराक्षी; इन्हीं पंच नदियों के किनारे-किनारे बसी थी अंगप्रदेश की यह मड़प्पा सभ्यता, जिसकी कुछ टूटी-फूटी कहानियाँ कहते हैं—राजमहल में प्राप्त वनस्पतियों-अनाजों के जीवाश्म और धरती की गोद में, ज्वालामुखी के प्रकोप से बच रहे, आदिमकाल के कुछ मृणपात्र !

वाचक : मड़प्पा की यह सभ्यता-संस्कृति पत्थरों पर कला का युग था। और इस कला का संबंध जीवन की रक्षा और आहार से था । आज भी दुमका के रामपुरहाट अंचल की द्वारिका नदी के छिछले जल की छाती पर, पत्थर के छोटे-छोटे औजार चमकते देखे जा सकते हैं ।

वाचिका : इस आदिम युग के बहुत बाद ही अंगदेश में आरम्भ होती है मूर्तिकला। जब तक अंग के पुरातत्व की खोज शुरु नहीं हुई थी, तब तक इतिहासकारों के पास गुप्त और पालवंश के ही कुछ उदाहरण थे, और जब पुरातत्ववेत्ता इस दिशा की ओर बढ़े, तो अंग की मांटी के गर्भ से आश्चर्यजनक अवशेषों का अम्बार निकल पड़ा । इतिहास की आँखें चौंधिया गयीं ।

संगीत प्रभाव

वाचक : इतिहासवेत्ता जब भागलपुर की चम्पा के कर्णगढ़ के पचास साठ फीट नीचे पहुँचे, तो उन्होंने देखा—वहाँ हाथी दाँत की देवी है, मिट्टी की मूर्त्तियाँ हैं, तांबे और पत्थर के ऐतिहासिक अवशेष हैं; हाथी दाँत के कंगन हैं; काजल लगाने की तीली है, मिट्टी से बनी बैलगाड़ी के खिलौने हैं, चिड़िया, नाग-नागिन के जोड़े हैं, और हैं मिट्टी की गोलियां।

वाचिका : एक पूरी सभ्यता है—व्रात्ययुग से बुद्धोत्तर काल का युग ।

वाचक : किले में गुलेल की गोलियाँ । हो सकता है, छोटे-मोटे जंगली जानवरों से किले की प्रजाओं की रक्षा के लिए हों; लेकिन ये गोलियाँ उन व्रात्य युग की भी याद दिलाती हैं, जिनका उपयोग व्रात्य अपनी पहचान के लिए भी करते थे । व्रात्य गुलेलधारी होते थे ।

वाचिका : लेकिन हाथी दाँत की देवी ? आखिर किस युग को उद्‌घाटित करती है ?

वाचक : उत्तर में पुरातत्ववेत्ता कहते हैं, यह देवी मिस्र की मूर्त्ति कला के समकक्ष है । ई. की पहली दूसरी शताब्दी में जब अंग महानाविक, श्रेष्ठीजन व्यापार के सिलसिले मिस्र तक पहुँचे, तो उन्होंने वहीं से ये मूर्त्तियाँ प्राप्त कर किले में रखी होंगी । अनुमान गलत नहीं हो सकता।

वाचिका : लेकिन यह सर्वविदित है कि अंगप्रदेश श्रेष्ठ हाथियों के लिए प्रसिद्ध रहा है । यह चाणक्य के अर्थशास्त्र में भी उल्लिखित है । फिर इसमें आश्चर्य क्या, कि अंग के कारीगरों ने हाथी-दाँत से बनी मूर्तिकला की नींव रखी हो । यह अलग बात है कि हाथी दाँत की इस मूर्त्ति पर मिस्र की मूर्त्तिकला की छाप भी पड़ी हो । महाजनपद काल तक अंग देश मिस्र की सभ्यता और संस्कृति से परिचित हो ही गया था।

ध्वनि प्रभाव

अद्‌भुत है चम्पा के कर्णगढ़ की खुदाई में प्राप्त यह देवी की मूर्त्ति । घुंघराले केश; तीक्ष्ण, उठी हुई नासिका; खुली हुईं विशाल आँखे । देखते ही भगवती का स्मरण आ जाता है ।

वाचक : इसी कारण कुछ इतिहासकार इसे चम्पा की देवी के रूप में स्वीकार करते हैं, दुर्गा का आदि रूप,क्योंकि इसकी पीठ पर अस्त्र भी सजे हैं।

वाचिका : अगर १९७० ई. से लेकर ७५-७६ ई. तक पटना विश्वविद्यालय के पुरातत्वविभाग की ओर से इस ऐतिहासिक कर्णगढ़ की खुदाई नहीं हुई होती, तो ढूह के नीचे कर्णगढ़ की निर्माण कला की भव्यता से इतिहास अपरिचित ही रहता ।

वाचक : जो कर्णगढ़ आज से ढाई-तीन हजार वर्ष पूर्व किसी भयावह प्राकृतिक आपदा के कारण, मिट्‌टी के ढूह के नीचे दब कर कहानियों और नाम में ही जीवित रह गया था।

संगीत का उभार

वाचिका : अंग की सभ्यता और संस्कृति का इतिहास अभी अनलिखा है; जो

इतिहास लिखा गया है, वह अनुमान पर है, या दूसरे प्रान्त के शौर्य और पराभव की पृष्ठभूमि में, या फिर समय के प्रवाह में बह गये पत्थरों पर उभरी मूर्त्तियों को देख कर । इसके गर्भ में झाँकने की जरूरत ही कभी नहीं समझी गई । जब इतिहासकार माउण्ट गोमरी कहते हैं–

ध्वनि प्रभाव

सं. स्वर : अंगक्षेत्र में आप किसी भी जगह पर खड़े हो जाएं और एक ढेला उठाकर किसी भी ओर फेंक दें, वह ढेला जहाँ गिरेगा, वह स्थल या तो कोई स्मारक होगा या फिर इतिहास का कोई महत्वपूर्ण स्थान । और अगर आप वहाँ पर खुदाई करेंगे, तो कुछ-न-कुछ पुरातात्विक महत्व की चीज अवश्य ही मिल जायेगी ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : निसन्देह अंगप्रदेश पुरातात्विक अवशेषों का विशाल गर्भगृह ही है । जब भी किसी और काम के लिए कहीं खुदाई हुई, वहाँ इतिहास का एक स्वर्णयुग खड़ा हो गया।

वाचिका : १८६२ ई. में जब रेलवे लाइन के विस्तार के लिए अंग्रेज अधिकारी हेरिस के निर्देशन में सुल्तानगंज में कार्य चल रहा था, तब विश्व की अनोखी मुर्त्तियों में एक बुद्ध की मूर्त्ति निकल आई थी । कांस्य निर्मित ७.१/२ फीट की यह बुद्ध मूर्त्ति अपनी कला भंगिमा में अद्‌भुत है ।

वाचक : वर्त्तमान में बर्मिंघम संग्रहालय, लन्दन में स्थित मूर्त्ति को अंग के मूर्त्ति शिल्पियों ने गुप्तकाल में गढ़ा था, ऐसा ही इतिहासकार मानते हैं । यह अविश्वसनीय भी नहीं लगता, क्योंकि गुप्तकाल तक आते-आते शुंगवंश के पुष्यमित्र का बौद्धों के प्रति अमानवीय क्रोध शांत हो चुका था, और बुद्ध मार्ग जनसमाज में फिर लोकप्रिय हो उठा था ।

वाचिका : सुल्तानगंज में प्राप्त बुद्ध की प्रस्तर मूर्त्तियाँ तथा यहाँ की पहाड़ियों की पीठ और छाती पर गोदने की तरह उभरी वैष्णव धर्म की मूर्त्तियाँ गुप्त काल की हैं ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : लेकिन भागलपुर के कहलगाँव अंचल में प्राप्त मूत्तियाँ पालवंश के शासनकाल से अधिक संबंध रखती हैं । महायान का परवर्ती रूप, तंत्र और नाथ पंथ का है, उसमें शिव का महत्व पुनः स्थापित होना

स्वाभाविक था । विष्णु की अवतारकथा से जुड़े होने के कारण अंग में वैष्णव मूर्त्तियों का गढ़न स्वाभाविक ही था । इसीसे पालवंश के युग में शिव और वैष्णव मूर्त्तियों के साथ,बुद्ध की मूर्त्तियों का भी निर्माप्राचुरता में हुआ।

वाचिका : विक्रमशिला में प्राप्त उमा महेश्वर की मूर्ति, जो कसौटी पत्थर पर निर्मित है, कला की दृष्टि से भी अनूठी है, त्रिरथ पीठिका पर स्थित आलिंगनबद्ध मुद्रा में उमा-महेश्वर का आसन नदी और सिंह है । विक्रमशिला में प्राप्त मूर्तियाँ पालयुगीन मूर्तिकला को ही नहीं, अंगप्रदेश में मूर्तिकला की विभिन्न शैलियों के इतिहास को बोलती हैं।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि प्रभाव

समय : (गुरु गंभीर स्वर) मैं समय हूँ, सदियों से मैं इन मूर्त्तियों की कहानियां कहने को बेचैन हूँ । तुम कौन हो । तुम्हारी भंगिमा तो यही बताती है कि तुम इतिहास हो ।

इतिहास : हाँ, मैं इतिहास ही हूँ । कहौल ऋषि के कहलगाँव के इस अंतीचक में सोये पुरातत्व को समझने यहाँ तक आ गया हूँ ।

समय : अंतीचक का पुरातत्व समझने आये हो, इतिहास ? इसका इतिहास किसी स्थल के टुकड़े में नहीं, वृहद अंगजनपद की संस्कृति में समाया हुआ है । इसीसे तुम्हें ऊपर उठना होगा । वैसे यह देखो, चारभुजाओं वाले शिव की यह कलात्मक मूर्त्ति । अंतीचक के कलामन की नान्दतिक अभिव्यक्ति ! अपनी प्रथम दृष्टि से ही आँखों को बांध लेने वाली ! हाथों में करतरी, कपाल, त्रिशूल के साथ मुण्डमाल—शिव की यह मूर्त्ति उस युग को पूरा-का-पूरा बोल जाती है । (पॉज) इतिहास, अभी रुक कर फोटू उतारने, और नोट लिखने का समय नहीं; मैं समय हूँ, मैं रुक नहीं सकता । चलो मेरे साथ, उस जगह, उस स्थल पर ।

खड़ाऊँ पर चलने की ध्वनियाँ (फेड आउट)

इतिहास : वाह ! अद्‌भुत। अद्वितीय। हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्‌म को लिए विष्णु की एक नहीं, कई-कई मूर्त्तियाँ। स्वर्ण-कण से बिखरे पुरातत्व ! अद्‌भुत ! अद्‌भुत !

समय : (गंभीर और उदास स्वर में) हाँ, बटेश्वर पहाड़ी पर भी बुद्ध की मूर्त्तियाँ ऐसे ही बिखरी पड़ी हैं । मूर्त्तिभंजकों के कारण बुद्ध की अधिकांश मूर्त्तियाँ खंडित अवस्था में प्राप्त हैं, लेकिन ये मूर्त्तियाँ कला की कमनीयता को इस रूप में भी अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं । बुद्ध की अधिकांश

मूर्त्तियाँ या तो पहाड़ी के जंगलों में छिपी पड़ी हैं,या पत्थरों की ओटअदृश्य।

इतिहास : लेकिन ऐसा क्यों ?

समय : जानना चाहोगे, तो बहुत कुछ जान जाओगे । अभी तो तुम मेरे साथ बेलनीगढ़ चलो । कहलगाँव से बस २५ किलो मीटर की दूरी पर है।

आरोही-अवरोही संगीत-प्रवाह

समय : रुको, इतिहास । यहीं पर रूको । यही है बेलनीगढ़ । क्या तुम्हें इस गढ़ के बारे में कुछ पता है ?

इतिहास : (आह्वलाद का स्वर) हाँ, यह विग्रहराज नामक एक क्षत्रपति की नगरी थी, जो अंग के प्रथम देवपाल के उत्तराधिकारी थे। देवपाल की मृत्यु के बाद पालवंश जब दो हिस्सो में बँटा तो विग्रहपाल प्रथम अंगप्रदेश क्षत्रपति हुए, और सुरपाल मगध राज्य के। यह कालखण्ड ८५० से लेकर ८५४ के बीच का है। **(पॉज)**

इतिहास : समय, क्या सोचने लगे ?

समय : सोच रहा हूँ, बेलनीगढ़ के वे दिन भी कितने मोहक थे, जब विग्रहराज के राज्य-त्याग के बाद उनकी पत्नी ने भिक्षुणीगृह की नींव यहीं रखी थी । वह दिखता है न, टूटी-फूटी दीवारों का खंडहर, वही था भिक्षुणीगृह। भिक्षुणियाँ यहाँ शिक्षित ही नहीं होती थीं, रहती भी थीं। हवा-पानी से अधिक, मनुष्य ने इसको इस हाल तक पहुँचा दिया है। इतिहास, मैं अब यहीं रुकूंगा, कुछ देर । तुम सिंघाड़ी तक जाओ । वह वज्रयानियों की साधनी भूमि थी । वहाँ तुम्हें बुद्ध के छः पूर्वजन्मों की मूर्तियाँ मिलेंगी । निष्पक्ष होकर देखना, तो मूर्तियाँ बोलने लगेंगी । और सुनो, अगर कहीं सिद्धकवि चण्डीदास का कोई स्वर सुनाई पड़े, तो मुझे पुकार लेना ।

इतिहास : (आश्चर्य का स्वर) सिद्धकवि चण्डीदास !

समय : हाँ, मैं सिद्धकवि चण्डीदास की ही बात कर रहा हूँ, जिसकी पत्नी का नाम था रामी । जानते हो, रामी कौन थी ? रामी बेलनीगढ़ की रानी की दासी थी। सिद्धकवि चण्डीदास रामी में ऐसे रम गये, कि गीतों में गा उठे,

(स्वर लय के साथ गीत का उभार)

चण्डीदास हेथा एल, रानी संगे रमी गेल **(फेड आउट)**

इतिहास : अंगिका कवि डोय की मातृभूमि सिंघाड़ी में बहुत सारी मूर्तियाँ राहों-पहाड़ों पर बिखरी मिलेंगी, जान सको, तो आकर मुझे भी बताना कि उन मूर्तियों की दुगर्ति का कारण बंगाल के राजा बल्लालथेन का

युद्धोनाद था, या कुछ और ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचक : अंग इतिहास का यह दुर्भाग्य ही है कि यहाँ पहाड़ों, जंगलों, नदियों के किनारे जो मूर्तियाँ खड़ी हैं, उनके इतिहास का कोई ठीक-ठीक ज्ञान नहीं हो पाता है। यही कारण है कि मन्दार पर्वत पर उभारी गई मूर्तियाँ या तो गुप्तकालीन बता दी गई हैं, या चोलवंशी, या फिर सेनकालीन। इन अनुमानों की भीड़ के पीछे का कारण यह रहा है कि यह अंग प्रदेश, मगध साम्राज्य के उदय के साथ ही विभिन्न वंश के राजाओं के शासन के अधीन ही रहा।

वाचिका : भागलपुर से पश्चिम-दक्षिण दिशा में स्थित शाहकुण्ड का जो पर्वत है, और उस पर जो प्रस्तर मूर्तियाँ हैं, उनको सातवीं से दशवीं शताब्दी के बीच गढ़ी गई कहा गया है, यह काल बंगाल के शासक शशांक का है। इन्हीं मूर्तियों में एक है—भगवान नरसिंह की मूर्ति ।

वाचक : मोटी गर्दन, कृश उदर, बड़े-बड़े आयाल, भयानक मुख, क्रोध की ज्वाला से भरी आँखों के नरसिंह भगवान की मूर्त्ति, इस बात को सिद्ध करती है कि कला सृजन में इस महाजनपद के मूर्त्तिकारों ने शास्त्र को कितनी बारीकी से स्थापत्य में उतारा है ।

वाचिका : अनुमान के आधार पर इतिहासकार का कहना है कि शाहकुंड पर्वत पर प्राप्त नरसिंह की यह मूर्त्ति संभवतः छठी शताब्दी में निर्मित है ।

वाचक : मूर्त्ति शिल्प की कला का यही उत्कर्ष, पालवंशी नरेशों के काल में बनी, जमुई में प्राप्त उमा महेश्वर, शिव, सूर्य, गंगा सरस्वती की मूर्त्तियों में भी देखा जा सकता है, और खगड़िया के अलौलीगढ़ के ध्वंशावशेष के आसपास मिली पालकालीन मूर्त्तियों में भी ।

वाचिका : जमुई से प्राप्त मूर्त्तियों में ही एक है—नाग नागिन की प्रस्तर मूर्त्ति । इस नागकन्या के सिर पर तीन फण हैं और उसका ऊपरी शरीर मानव का है । इससे यह सिद्ध होता है कि अंगप्रदेश में नाग सृजन की परम्परा अति लोकप्रिय और प्राचीन रही है । तीन फणों वाली यह नाग कन्या, हठात ही मंजूषा कला की देवी विषहरी की कथा को मूर्त्त करदेती है।

वाचक : अंगप्रदेश के पालवंशी नरेशों के शासन काल में मूर्त्ति और स्थापत्य कला अपने चरम पर जा पहुँची थी । आज भी जमुई के पहाड़ी इलाकों में पड़ी, काले पत्थरों की चौड़ी-चौड़ी शिलाएं, इस तथ्य को उजागर करती हैं कि कभी यह मूर्त्ति और भवन शिल्पियों का केन्द्र

रहा था, जो नरेश इन्द्रद्युम्न की कलाप्रियता के प्रमाण हैं ।

संगीत-प्रभाव

वाचिका : इन्द्रद्युम्न के किले का अवशेष, अंगप्रदेश में भवन निर्माण की ऊँचाई का बिखरा हुआ इतिहास है ।

वाचक : इन्द्रद्युम्न कला का अद्‌भुत प्रशंसक और संरक्षक था। ११९७ और ९८ के बीच बिहार और बंगाल पर मुसलमानी प्रभुत्व, और खिलजी के निर्दयी व्यवहार से आतंकित हो जब अन्तिम पालवंशी नरेश इन्द्रद्युम्न अपनी राजधानी छोड़ कर पहले लक्खी सराय, फिर देवघर होते हुए, शांति का जीवन जीने के लिए उड़ीसा चला गया, तब वहाँ भी उसने अंगप्रदेश की स्थापत्य कला का अद्‌भुत, अद्वितीय उदाहरण उपस्थित किया । इतिहासकार समदार और पाटिल ने अपने इतिहास में लिखा है कि उड़ीसा पहुँचने पर राजा इन्द्रद्युम्न ने प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कराया।

ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : जैसा कि वृहत्तर चम्पा के हिन्दचीन में स्थित अंगकोरवाट का विश्वप्रसिद्ध हिन्दू मंदिर। अंगकोरवाट के मंदिर पर अंगप्रदेश में हुये समुद्र मंथन की कथा को पत्थरों में भव्यता के साथ उतारा गया है । आज के अंगप्रदेश के हजारों मील दूर, समुद्र के पार कम्बोज में, आज भी अंग की प्राचीन स्थापत्य कला भव्यता में विराज रही है ।

वाचक : अंग से उड़ीसा, और उड़ीसा से अंगकोरवाट तक फैली,प्राचीन अंग देश की इस स्थापत्य कला का पुरातात्विक विश्लेषण का दायित्व समाप्त नहीं हो गया है, जरूरत इसकी है कि वृहत्तर चम्पा से लेकर आधुनिक चम्पा में मिली मूर्तियों में इस प्रदेश की निरन्तर प्रवाहित संस्कृति की धड़कनों की खोज हो; तभी ये मूर्तियाँ बोलेंगी, चाहे वे काँसे की हों, या पत्थरों की, या फिर मिट्‌टी को पका कर बनायी गयी मूर्तियाँ ही ।

वाचिका : और ऐसा नहीं होने के कारण ही अंगप्रदेश के दक्षिण में शताब्दियों से खड़े शिव मंदिरों पर शोभित मृणमयी मूर्तियाँ भी खामोश हैं । अंग की समन्वित संस्कृति का दर्शन कराती हैं, यहाँ की ये प्राचीन मूर्त्तियाँ; प्राचीन मंदिर ।

वाचक : दुमका से ५५ किलो मीटर दूर शिकारी पाड़ा प्रखण्ड में गुप्तकाशी मलूटी है ।

वाचिका : सचमुच में यह गुप्तकाशी ही है, जहाँ कभी शिव के १०८ मंदिर थे, रख-रखाव के अभाव में अधिकांश नष्ट हो गये । बच गये हैं बस ५६; कुछ मन्दिरों पर काल के थपेड़ों से बच रही टेराकोटा की मूर्त्तियाँ अभी भी अंगप्रदेश में मूर्त्ति शिल्प की भव्यता को खुले स्वर में बखानती हैं।

वाचक : और ये मूर्त्तियाँ हैं, भगवती की, राम-जानकी की, जटायु की, कृष्ण लीला की ।

वाचिका : इससे एक बात तो स्पष्ट है ही, कि अंग प्रदेश के सामाजिक जीवन में सभी धार्मिक विचारों का सम्मान था, इसीसे धर्म को लेकर इस प्रदेश ने कभी महाभारत नहीं किया, आन्तरिक विवाद रहे हों, तो रहे हों । कला के क्षेत्र में अंग शिल्पियों की दृष्टि हमेशा ही संहार्तवाद की रही, जिस कारण ही इन्होंने धर्म के कारण किसी पंथ, या जाति के आधार पर किसी व्यक्ति को घृणा या उपेक्षा से नहीं देखा । उन्हें सभी में किसी एक ही शक्ति की छटा दिखाई देती रही । जल से भरे हजार कुंभों में सूर्य की परछाईं हजार भले दिखे, लेकिन आकाश में दीप्त सूर्य एक ही है । समस्त परछाइयाँ सूर्य से ही जुड़ी हैं । अंग की स्थापत्य कला में इसी दृष्टि का विकास है, जो मलूटी के मंदिर पर साफ-साफ दिखता है ।

वाचक : कौन थे मलूटी के इन मंदिरों के निर्माता ?

वाचिका : इसकी एक बड़ी और रोचक ऐतिहासिक कथा अंगप्रदेश में प्रचलित है। कहते हैं, तत्कालीन अंग के गौड़ राजा अल्लाउद्दीन हुसैन शाह, उड़ीसा की यात्रा के क्रम में अपनी बेगम के साथ, वीरभूम की मयूराक्षी नदी के किनारे आराम कर रहे थे, तभी उनकी बेगम का प्यारा बाज, उनके हाथों से छूट कर हवाओं में खो गया । **(दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि)**

बेगम : (व्याकुल स्वर में) जहाँपनाह, मैं तो उस बाज के बिना एक पल भी नहीं रह सकती । जैसे भी हो, वह बाज मुझे चाहिए ।

बादशाह : बेगम, धीरज रखो, मैंने चारों दिशाओं में सैनिकों और बहेलियों को दौड़वा दिया है । वह तो पालतू परिन्दा है, पकड़ा ही जायेगा ।

बेगम : (हर्ष से) जहाँपनाह, वह देखिए, एक चरवाहा मेरे बाज को पकड़े इधर ही आ रहा है । **(पॉज)**

बादशाह : कौन हो तुम, तुम्हें यह बाज कैसे मिला ?

चरवाहा : बादशाह मैं चरवाहा हूँ, और नाम है, वसन्त राय । यह बाज एक डाल पर बैठा था कि मैंने इसे पकड़ लिया । सोचा, आपको भेंट कर दूँ ।

बादशाह : (खुशी से) तुमने बहुत अच्छा किया । मैं तुमसे बेहद खुश हूँ । वसन्त, तुम इस घोड़े को लो, और इस पर बैठ कर, अभी से शाम तक, जितनी जमीन पर तुम घोड़े को दौड़ा सको; वह सब तुम्हारी ।

(दौड़ते घोड़े की आवाज तेज होकर खत्म होती है)

दृश्य परिवर्त्तन-ध्वनि

वाचक : और इस तरह वसन्त राय मलूटी राज्य का जमींदार बन बैठा । उसने सींथिया यानी वीरभूम के मयूरेश्वर नामक स्थान पर अपनी राजधानी बनाई।

वाचिका : कालक्रम में इसी राजवंश में राजा जयचंद्र भी हुआ, जो राजनगर के राजा ख्वाजा कमल खाँ द्वारा युद्ध में मारा गया था । यह बात सन् १६५० के बाद की है ।

वाचक : जयचन्द्र के निधन के बाद उनका पुत्र रखाल चन्द अपनी माता के साथ भाग कर मलूटी आ बसा । मलूटी के मंदिर इसी राखाल चन्द और इनके वंशजों के द्वारा बनवाये गये मंदिर हैं ।

वाचक : लेकिन किशनगंज के बड़ीजान ग्राम में जिस सूर्य की भव्य प्रतिमा प्राप्त हुई है, उसके संबंध में आज भी विद्वान तर्कशास्त्र का ही सहारा ले रहे हैं । कोई महाभारतकालीन कहता है, कोई गुप्तकालीन । चाहे यह मूर्ति किसी युग की हो, कलाशास्त्र की दृष्टि से यह अपूर्व है । कसौटी पत्थर पर गढ़ी गई यह सूर्य-प्रतिमा सप्त अश्व के रथ पर अवस्थित है, जिसके साथ परिचारिकाएँ, अनुचर भी संलग्न हैं । मणिमाला को धारण किए सूर्य आभूषणों से भी अलंकृत है ।

वाचिका : इतिहासकारों का अनुमान है कि ऐसी मूर्तियाँ प्राक् पालकाल में गढ़ी जाती थीं, इसी से यह सूर्य मूर्ति प्राक् पालकालीन हो सकती है।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : काश, ये मूर्तियाँ बोल पातीं, तो बोलतीं, कि किस राजा ने लोक में अपनी धर्मरुचि की स्थापना के लिए इनको गढ़वाया था, पत्थरों पर उतरवाया था । बोल पातीं, तो किशनगंज की सूर्य मूर्ति ही नहीं बोलती, महिषी की उग्रतारा भी बोलती कि किस बौद्ध के द्वारा किस पाल राजा के काल में स्थापित हुई । और बोलतीं शुभ अवसर पर बनने वाली मिट्टी के सफेद हाथी की मूर्त्तियाँ, कि किस तरह विलुप्त

हो गये अंगप्रदेश में मिलने वाले ऐरावत की प्रजातियाँ ।

वाचिका : अंगप्रदेश में सफेद हाथी की कहानियाँ किसी लोककथा का अंश नहीं है । इतिहास गवाह है कि मुगल शासन के समय में, जब पंचेत में नागवंशी राजाओं का शासन था तब पलामू में रकसेल, और सिंहभूम में सिंह वंशीय भूपों का शासन था । जब सरगुजा के हैहय वंशी रक्सेल राजा के साथ नागवंशी राजा भीम कर्ण का युद्ध हुआ था, तब भीम कर्ण ने उसकी सेना को बरवा की लड़ाई में पराजित कर, पलामू के टोरी परगना पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था ।

वाचक : बाद में रक्सेलों को चेरों ने पराजित कर वहाँ अपना शासन स्थापित किया, और चेरो राजा महारथ को पराजित करने के लिए शेर खां ने चार हजार घुड़सवारों के साथ सेनापति खवास खां को पलामू की ओर रवाना किया था, जो महारथ लूट-पाट के लिए क्षेत्र में आतंक बन गया था ।

वाचिका : लेकिन इतिहास प्रसिद्ध बात यही है कि शेर खां ने चेरो राजा के सफेद हाथी, जिसका नाम श्यामसुन्दर था, को प्राप्त करने के लिए ही चार हजार घुड़सवारों को अंग महाजनपद के पहाड़ी प्रदेश में रवाना किया था। ऐरावत प्रजाती का यह सफेद हाथी जब मस्त होता था तब उसपर नियंत्रण करना असंभव होता । श्यामसुन्दर अपने मस्तक पर कभी धूल नहीं डालता था।

(नेपथ्य में हाथी का निरन्तर गंभीर गर्जन
और दुरागत घुड़सवारों का ध्वनि-प्रभाव)

वाचक : चेरो राजा गिरफ्तार हो गया, और उसका सफेद हाथी भी पकड़ लिया गया । कहते हैं शेर शाह ने जब उस हाथी को देखा, तो खुशी से कह उठा—मुगलों से गद्दी हासिल करने का यह शुभ संकेत है ।

वाचिका : अंगप्रदेश में शुभ अवसरों पर मिट्टी के बने सफेद हाथी, काश अपनी कथा स्वयं बोल पाते, और बोल पाता मानभूम परगने का पंचकोट किला

वाचिका : तब आइन-ए-अकबरी में दर्ज हजारीबाग का छै-चम्पा परगना भी बोलता, कोकरह की शंखनदी ही नहीं बोलती, कि किस तरह कोकरह में नागवंशी राजा की नई राजधानी बनने के बाद यही कोकरह पहले पहल छोटा नागपुर कहाया । नदियां ही नहीं बोलती; मंदिर, राजप्रसाद के खंडहर बोलते। चम्पा का कर्णगढ़ ही नहीं बोलता, संथालपरगना के राजमहल का बारकोप भी बोलता । कन्दाहा का सूर्य मंदिर ही नहीं; मुंगेर का कर्णचौरा

भी बोलता, और अपनी बाँहें उठा-उठा कर बोलता मुंगेर का किला कि इसे मगध के राजा जरासंध ने बनवाया था कि पालवंशी राजा धर्मपाल ने, जिसके पुत्र देवपाल ने इस किला में रहते हुए एक विजयोत्सव किया था और जिस अवसर पर गंगा के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक नौकाओं का सेतु बनवा दिया था।

वाचक : बड़ी लम्बी कहानी है इस मुंगेर के किले की । इसने पालवंशी राजाओं के उतार-चढ़ाव को देखा है । इस गढ़ के साथ मीरकासिम की कथा जुड़ी है, तो टोडरमल की भी; हुमायूँ की कहानी जुड़ी है, तो शाह सूजा की भी । अगर किला बोल पाता, तो कहता कि किस तरह औरंगजेब के सेनापति मीरजुमला से बचने के लिए १६५९ ई. के छः मार्च को शाहशूजा इसी किले के गुप्त मार्ग से गंगा पार उतर आया था, और रातोरात संताल परगना का राजमहल पहुँच गया था । बहुत-सी कहानियों को अपने सीने में रख कर मौन हो गया है मुंगेर का यह किला । कभी इसी किला के अन्दर-बाहर सैनिकों की पहरेदारी,और अश्वारोही सैनिकों की रातदिन चहल-पहल बनी रहतीथी।

(ध्वनि-प्रभाव)

वाचिका : अंगप्रदेश में मुगल सन्तनत का एक पूरा इतिहास है मुंगेर का किला, जो अब उसी तरह खामोश है, जैसे मुंगेर के शाह नफह मजार, जहां कब्रों में मीरकासिम के बच्चे सो रहे हैं ।

वाचक : मुंगेर के किले के आस-पास ही नहीं; बोलते साहेबगंज की तेलियागढ़ी का किला भी बोलता। तेलियागढ़ी के ढहते किले को देखकर कौन कह सकता है, कि यही कभी अफगान और मुगल बादशाहों की किस्मत का फैसला करता था ।

वाचिका : १५३८ ई. में शेरशाह सूरी और मुगल बादशाह के बीच हुए ऐतिहासिक युद्ध का गवाह है यह तेलियागढ़ी का किला । लेकिन आरम्भ में युद्ध के लिए नहीं बना था यह किला। यह तो तब बना, जब तुर्कों के आक्रमण से बचने के लिए बंगाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मणसेन ने ११२१ ई. के आस-पास किले को सैनिक छावनी के रूप में बदल दिया। फिर अफगानों ने भी यही किया; मुगल शासकों ने भी ऐसा ही; नहीं तो, तेलियागढ़ का यह किला बौद्धविहार के रूप में ही अवस्थित होता। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने तेलियागढ़ी को बौद्धविहार के रूप में देखा था।

वाचक : एक अजीब खामोशी, एक अनन्त सन्नाटा पसरा हुआ है अंगप्रदेश में बिखरे खंडहरों और बिखरी मूर्तियों के चारों तरफ, भग्न किलाओं और मजारों के आसपास । कभी यह खामोशी बोलेगी, तो भागलपुर की गंगा के किनारे सन्नाटे में डूबा, इब्राहिम खां का मकबरा भी बोलेगा कि सिंहासन का मोह कैसा दुर्दमनीय होता है, नहीं तो बादशाह जहाँगीर का ही पुत्र खुर्रम, जो इतिहास में शाहजहाँ के नाम से विख्यात है, ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह ही क्यों किया होता । खुर्रम के इसी विद्रोह को दबाने के लिए जहाँगीर ने सैय्यद इब्राहिम खां को आदेश दिया था और आखिर में उस युद्ध की ही आग में इब्राहिम खां को हमेशा के लिए खामोश हो जाना पड़ा। अंगप्रदेश का यह इतिहास भी, शाहजहाँ के पुत्र शुजाकी उन कहानियों की तरह खत्म हो रहा है, जो शुजा २२ वर्षों तक इस प्रदेश के चप्पे-चप्पे से परिचित होता रहा । शुजागंज में शुजा की पुत्री और उसके शिक्षक की कब्रें कभी-कभी सन्नाटे को चीरती हुई यह जरूर कह जाती है कि कैसे शाहजहाँ की मृत्यु के बाद जब सल्तनत के लिए संघर्ष चला, तब किस तरह औरंगजेब के सिपहसालार मिरजुमला ने भागलपुर से होते हुए तेलियागढ़ी की दुर्गम घाटी तक शुजा का पीछा किया था । लेकिन इतिहास का यह अध्याय बहुत अंधकार पूर्ण है । अतीत की इन सुरंगों तक अगर किसी तरह पहुँचा जा सकता है, तो ह्वेनसांग, कनिंधम, बुकानन की डायरियों और फारसी इतिहास ग्रंथ शेयार मुताखरीन में छोड़े गये संकेतों से ही ।

वाचिका : डायरियों में बन्द अंगप्रदेश की विराट समन्वित संस्कृति, जिसको व्रात्यों, ब्राह्मणों, उपनिषदों, पुराणों, के साथ जैन और बुद्ध दर्शन ने मिलकर गढ़ा है, वह आज भी अपनी आत्मा में प्रवाहित है ।

वाचक : अंगप्रदेश में बहुत राजनीतिक उथल-पुथल के बाद भी इसकी संस्कृति की धारा कभी सूखने नहीं पाई, क्योंकि अंगप्रदेश की चम्पा के साथ-साथ वृहत्तर चम्पा के नरेश तक, न केवल उदार हिन्दू संस्कृति के वाहक थे,बल्कि शास्त्रों के भी उद्भट विद्वान। युद्ध उनका व्यसन नहींथा।

वाचिका : हिन्दचीन में अंगप्रदेश की चम्पा की स्थापना ई. की पहली-दूसरी शदी में हुई थी । इस हिन्दचीन की चम्पा का पहला राजा श्रीभार था । चीनी जनश्रुति के अनुसार चम्पा के हिन्दू राजा ने ई. स. ३४० में चीन के सम्राट के पास दूत भेज कर चीन और चम्पा राज्य के बीच सीमा विवाद को तय करने का संदेश भेजा था, लेकिन चीनी सम्राट ने जब इसमें अपनी

अरुचि दिखाई, तो चम्पा नरेश ने ई. स. ३४७ में विवश होकर चीनी सम्राट पर आक्रमण किया, और न्हुत नाम का उपजाऊ प्रदेश अपने अधीन कर लिया और इस तरह चम्पा राज्य होना सोन पर्वत माला तक विस्तृत हो गया था।

वाचक : इस युद्ध में चम्पा नरेश श्रीभद्र वर्मा को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा था ।

वाचिका : श्रीभद्र वर्मा वेदों का प्रकाण्ड विद्वान था, और शिव का अनन्य भक्त । भद्रवर्मा का उत्तराधिकारी गंगाराज ई. स. ४१३ से ४१५ तक राज्य की अव्यवस्था से इतने दुखित हुए कि सागर और गंगा को पार करते अंगप्रदेश लौट आये थे ।

वाचक : अंगदेश के नरेश, चाहे वह चम्पा में शासन कर रहे चम्प या हर्यंक हो, या वृहत्तर चम्पा में राजकाज कर रहे श्रीभद्र वर्मा और इन्द्र वर्मा, वे सम्राट से पहले ऋषि थे । हिन्दचीन की चम्पा में राजा इन्द्रवर्मा के जो शिलालेख मिले हैं, उनमें इन्द्रवर्मा को षडदर्शन, बौद्ध दर्शन, काशिका वृत्ति, पाणिनीय व्याकरण और उत्तर कल्प का प्रकाण्ड पंडित कहा गया है।

वाचिका : अंगदेश के अधिकांश नरेशों ने अपनी इन्हीं चित्तवृत्तियों को चम्पा के स्थापत्यों में ढाला था । यही कारण है कि अंग की कलाएं जहाँ-जहाँ उभरीं, वहाँ-वहाँ उनका रूप समन्वित संस्कृति की भव्यता से गढ़ा हुआ है।

शीर्षक गीत/समाप्ति गीत

अष्टम खण्ड

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : पृथ्वी के जन्म के साथ ही जिस अंगभूमि ने अपनी आँखें खोलीं, तब से इस प्रदेश ने जलप्रलय देखा, समुद्र मंथन देखा, देवताओं के अवतार देखे, ऋषियों के मंत्र सुने, अगर रोमपाद का वैभव देखा, तो कर्ण का महाशौर्य भी; बुद्ध-महावीर और वासुपूज्य के वचनों से यह धरती अगर आन्दोलित हुई, तो आक्रान्ताओं के आक्रमण से मलीन भी । इन सारी बातों का इतिहास आपने इस धारावाहिक के पूर्व सात खण्डों में सुना। अब प्रस्तुत है—पूर्व, और उत्तर मध्यकाल के अंगप्रदेश का सामाजिक तथा धार्मिक इतिहास, जिससे शताब्दियों तक अंगप्रदेश बंधा रहा, और इसी के बीच यह जीवन के सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों का मंथन भी करता रहा ।

सितार की तरंगायित स्वर लहरियाँ

वाचक : विक्रमशिला महाविहार के महायानियों का महायान, धीरे-धीरे मंत्रयान, वज्रयान में बदलता हुआ नाथपंथ हो गया था । कई-कई सिद्ध नाथपंथी हो गये थे, और अंगप्रदेश, जो कभी बौद्धों का विहार था, नाथपंथियों का महाविहार हो गया था।

वाचिका : नाथपंथ के जमने के बहुत से कारण थे । एक कारण तो इस प्रदेश का व्रात्य धर्म ही था । यायावरी स्वभाव के व्रात्य, सिद्ध भी कहाते थे, सुखभोग के अभ्यस्त थे । और महात्मा बुद्ध के कथन, 'आत्म दीपो भव' अर्थात् अपना प्रकाश तुम स्वयं बनो का अर्थ महायानियों ने अपने तरीके से लगाते हुए मुक्ति का नया रास्ता खोज निकाला था, जहाँ बुद्ध के आचार का एकदम अभाव हो गया था । माँस, मदिरा, मैथुन, कुछ से भी परहेज नहीं रह गया था ।

वाचक : भोग की इस छूट के कारण ही महायान अंगप्रदेश में बड़ा जहाज बन गया था, जिस पर ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, सभी शामिल हो गये थे ।

वाचिका : महायान, मंत्रयान में ढला, तब ४०० से लेकर ७०० ई. तक का पूरा अंग समाज जादू-टोना के मायाजाल में लिप्त हो गया था ।

दृश्य परिवर्तन

कठोर स्वर : 'ओं तारे तुत्तारे तरे स्वाहा', जो, ई मंत्र कें बोलथैं तोरों विरोधी तोरों

दास बनी जैतौ।

भयभीत स्वर : मजकि, हमरा राक्षस आरनियो के भय बुझैतें रहै छै ।

कठोर स्वर : 'ओं हूँ जिनरिटि हूँ, हूँ फट-फट स्वाहा' जो आबें तोरों राकस वाला डरो खतम ।

भयभीत स्वर : हे गुरु, आबें हमरा धर्म आरो मुक्ति के रास्ता बतैयै ।

कठोर स्वर : 'ओं कट विकट कटकटे करोट वीयें स्वाहा ।' जो ई मंत्र के जाप मात्र सें तोरा मुक्ति मिली जैथौ ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचक : ई. सं ४०० से ७०० के काल के बीच अंगप्रदेश का यही धार्मिक यथार्थ था। अन्धविश्वास में डूबा हुआ अंग प्रदेश । अगर स्वयं बुद्ध भी आकर समाप्त करना चाहते, तो असंभव था शायद । महाप्रलय के अन्धकार से अंगप्रदेश एक बार फिर घिर गया था । कभी महात्मा बुद्ध ने इस अंगप्रदेश को कर्मकाण्ड से ऊपर ज्ञान का नया आलोक दिया था, उसी बुद्ध के परवर्ती अनुयायियों ने अंगप्रदेश को मुक्ति-मोक्ष के नाम पर फिर अंधविश्वास के अनल कूप में लटका दिया था ।

वाचिका : तंत्र-मंत्र अंगप्रदेश के लोगों के लिए मुक्ति का सहज मार्ग बन गया था; माँस, मदिरा, मैथुन उनके खान-पान के अभिन्न अंग ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

नागरिक : (आश्चर्य से) भिक्षु, यह क्या ! आप मदिरा का सेवन कर रहे हैं ?

भिक्षु : यही तो दुख है कि मैं मदिरा का सेवन कर रहा हूँ, और मेरे साथ कोई वारांगना नहीं है । मदिरा का सेवन तो तभी सार्थक है, जब बगल में वारांगना भी हो ।

नागरिक : (कटु स्वर में) वेश्या । वह क्या आप को बिना पैसे के मिलेगी, भिक्षु, आपके पास उतने पैसे कहाँ से होंगे ?

भिक्षु : (उपेक्षा से) वह तो जूए या चोरी से प्राप्त हो जाते हैं । हाँ, पैसे की जरूरत हुई, तो जुआ भी खेल लेता हूँ, या फिर चोरी भी कर लेता हूँ।

नागरिक : (आश्चर्य से) क्याऽऽ! आपने जुए और चोरी को भी अपना रखा है ?

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचक : मंत्रयानियों का यह रूप वज्रयानियों को और भी प्रिय हो गया था ।

वाचिका : निर्वाण के गूढ़ अर्थ से तो किसी का संबंध भी नहीं रह गया था । न तो मंत्रयानियों के पास, और न वज्रयानियों के पास ही निर्वाण का वास्तविक अर्थ था । इसे तो बुद्ध ने भी कभी स्पष्ट नहीं किया था।

कोई शिष्य पूछता, तो बुद्ध मौन हो जाते ।

वाचक : फिर बुद्धमार्ग में आचरण की इतनी कड़ी पाबन्दी थी कि ई. सं ४०० से लेकर १२०० तक के अंगप्रदेश का, महायानियों के महासुखवाद में डूबा रहना आसान सिद्ध हुआ ।

वाचिका : क्योंकि मंत्रयानियों-वज्रयानियों का कहना था,

संगीत-प्रभाव

स्वर : क्या गम्य है, क्या अगम्य, इसका बिना विचार किए, सबकुछ का, छूट कर उपभोग करो। क्या भक्ष्य है, और क्या अभक्ष्य; क्या पेय है, और क्या अपेय, इसकी चिन्ता छोड़ कर योगी सिद्धि को प्राप्त करसकता है।

संगीत-प्रभाव

वाचक : ऐसा नहीं कि चौथी से बाहरवीं शदी तक अंगप्रदेश के सिद्ध आचार्यों ने महाभोग का ही मार्ग प्रशस्त किया; उन्होंने सामाजिक मूल्यों का मार्ग भी दिखाया था; यह अलग बात है कि उस समय के अंगप्रदेश ने उन सामाजिक मूल्यों को कितनी दूर तक स्वीकार किया और नहीं किया।

वाचिका : ये सामाजिक मूल्य भी व्रात्य में पूर्व से ही प्रतिष्ठित थे, जैसाकि जादू-टोना का मजबूत विश्वास ।

वाचक : अंगप्रदेश का उत्तर प्राचीन युग, और मध्य युग यहाँ की लोकभाषा अंगिका में रची गई लोकगाथओं में साफ-साफ देखा जा सकता है ।

वाचिका : यूँ तो अंगिका के लोकगीत, लोककथाओं का साहित्य भी इसके मध्ययुगीन इतिहास का आईना है, लेकिन अंगिका लोकगाथाओं में यह इतिहास और भी तीव्रता के साथ व्यक्त है ।

गीत का धीरे-धीरे उभार

हो रे कपड़ा धोइए गे नेतुला भै गेली तैयार हे
हो रे सामी बेटा कें गे नेतुला उठाबें लागलै जाय माया
हो रे उठें-उठें रे देवा धोबिया के जात रे
होरे आन दिन तें आबें रे दैवा तुरते उठावें माया
हो रे आजु दिन आबें रे दैवा उठलों नहि जाय रे
हो रे कौन तें जोगिन रे दैवा जोग टोना करलें माया

वाचक : नेतुला धोबिन पति संग बेटे को पाट और खूंटा बना लेती थी, लेकिन आज किसने यह जादू टोना कर दिया कि न पति उठता है, न बेटा।

वाचिका : बिहुला विषहरी की लोकगाथा तंत्र-मंत्र, मायावी क्रियाओं की कहानियों

से भरी हुई है। बिहुला विषहरी ही क्या, कमला मैय्या की मुख्य नायिका बहुरा गोड़िन तो तंत्र-मंत्र, मारन-उच्चाटन की मायावी क्रियाओं की सिद्ध साधिका ही है । कमला मैया लोकगाथा की कथाभूमि ही मंत्रबद्ध है । बहुरा का दामाद मंत्रसिद्धि के बल पर ही अपने प्राणों की रक्षा योगिनियों और अपनी सास से कर पाता है ।

गीत का उभार

काँहुँ नै देखी मुँगिया उचारै खोली सगुनों के पोथी !
मैनमा नटुकबा टपी रैल्हों छै आपनों सीमानों राती !!
झट सें मुँगिया सोंर चलाय कें धरलक बाघों के रूप ।
बाघों रूप धरी मुँगिया झपटली नटुआ पें अजगूत !!
देखथैं बाजों कें बनलै कबूत्तर नटुआ उड़ि जे परैलै !
जेन्हैं बजबा झपटलै कबुतरा, नटुआ गोटों बनी गेलै !!
गोटों देखी लेलकै कबूत्तर मुँगिया ने तुरत बनाय !!
बनी कबूत्तर मुँगियाँ गोट कें जेन्हैं निगलैलें चाहलक !
देखी मरन तबें मैनमा खबासें रूप बिलारों धइलक !!
दौड़ी बिलरबां, कबुतरा कें हो, छन्हैं में देलकै मोचारी !
पैल्हे मोचारों में राम-राम करी, मरी गेलै बेचारी !
फेनू आपनों रूप धरी कें चललों नटुकबा घोंर !

वाचक : जब तक मूंगिया जादूगरनी अपने सगुन खोलती, तब तक नटुआ दयाल उसके देश से बाहर हो गया था। मूंगिया ने बाघ का रूप धारण कर उसका पीछा किया, तो नटुआ दयाल कबूतर बन कर उड़ चला । यह देख कर मूंगिया ने बाज का रूप धारण किया । प्राणों पर संकट देख कर नटुआ दयाल गोटा बन गया, तो मूंगिया ने भी कबूतर का रूप धारण कर उसे निगलना चाहा । फिर क्या था, नटुआ ने बिलार का रूप धारण किया, और दौड़ कर उस बिलार ने कबूतर की गर्दन ही मोचार दी। इस तरह मूंगिया की मौत हुई, और नटुआ दयाल अपने घर की ओर लौट पड़ा ।

वाचिका : सलेश भगत की भी पूरी कथा इसी तंत्र-मंत्र की जमीन पर खड़ी है। दुसाधों में लोक देवता के रूप में पूजित सलेस भी तंत्र-मंत्र के साधक के रूप में ही लोकगाथा में चित्रित है, लेकिन नायक से कहीं अधिक बढ़-चढ़ कर तंत्र साधिका हैं, इस गाथा के नारी पात्र ।

संवाद की समाप्ति के साथ ही गीत का उभार

सोलह सौ कोठी जादू तर ऊपर महलो छेलबे तेँ करलै,
तड़ दना जाय केँ खोलबै तेँ करलकै ।
सौ सौ देवता सखुआ खुट्ठां बान्हलोँ छेलबे तेँ करलै,
तड़ दना जाय केँ खोलबे तेँ करै छै,
गे माय दुरुगा दोनों बहिनियां
जुड़बा खोपोँ बान्हबै तेँ करै छै,
साड़ी बनारसी बाँक बूटी चोली,
लोर मछलिया, गोड़-गोड़ानी
बोलता झुमका पहरबे तेँ करै छै
पट गुलमेख बिरनी छत्ता खोपो लगैबै तेँ करै छै,
दाँत के मिस्सी, सोलतिया अड़तालीस भर के
सोना कंगना पहरबै तेँ करै छै,
रत्ती भरी सोना के सेनुर माँगे जबेँ चढ़ैबै तेँ करे छै
गे माय दुरुगा चौदह डिब्बा जादू खोयछाँ लगैबे करै छै,
गे माय दुरुगा निशि भरी रातीं
मरदोँ पर चढ़ाय करबे तेँ करै छै,
सात ताड़ आगिन ऊपर जाय छै
सात ताड़ आगिन नीचें जाय छै,
गे माय दुरुगा ठुट्ठीराज पकड़िया के
नन्हुआ बाबू सलेस, गाजी मरद
दुधिया पोखरी पर जखनी बैठलोँ छेबे तेँ करै छै,

वाचक : जादू की सोलह सौ कोठियों के ऊपर जीरुआ-पचुआ बहनों का घर था, जिन्हें जाकर दोनों बहनों ने खोल दिया। बगल में खूंटे में बंधे सौ देवता को भी खोला । फिर दोनों ने अपने-अपने जूड़े बांधे, बनारसी साड़ी पहनी, बांक बूटे वाली चोली को पहना, लोर मछलिया, गोड़-गोड़ानी, बोलता झुमका पहनने के साथ, अपने अपने जूड़े में पट गुलमेख डाला। दाँत की मिस्सी चमकी । अड़तालीस भर सोने के कंगन को कलाइयों में डाला । माँगों को सिन्दूर से भरा, और इस तरह जीरुआ-पचुआ सलेश से मिलने के लिए निकल पड़ीं । उनके चलने के साथ ही सात ताड़ गाछ ऊपर और सात ताड़ नीचे की ओर आगिन ऊपर-नीचे होने लगी । उस समय सलेस दुधिया पोखर के किनारे पर बैठा हुआ था ।

वाचिका : इस लोकगाथा की जुड़वां बहन जीरुआ-पचुआ की तांत्रिक करामतें तो पक्के तांत्रिकों के दिमाग को भी चकराने वाली हैं । नगाड़े पर जीरुआ-पचुआ द्वारा चोट करने भर की देर होती कि सारा अंगप्रदेश जहाँ-का-तहाँ आगत भय से पत्थर-सा हो जाता ।

वाचक : सलेस भगत की जीरुआ पचुआ से लेकर कमला मैया की बहुरा गोड़िन तक की कथा यह बताती है कि तंत्र की साधना समाज में मुख्य रूप से स्त्रियों के बीच फैली हुई थी। दीना भदरी लोकगाथा की बुधनी, लोरिक गाथा की यमुनी बनियाइन की तांत्रिक गतिविधियां प्रसिद्ध हैं।

वाचिका : स्त्रियाँ आभूषणों की शौकीन थीं । सलेस को वशीभूत करने के लिए जीरुआ-पचुआ जितने प्रकार के आभूषण को धारण करती हैं, उससे ही यह ज्ञात होता है कि पैर के अंगूठे से लेकर कानों तक के दर्जन भर आभूषण स्त्रियों की शोभा में मदद करते थे ।

पूर्व सलेस गीत की आवृति

वाचक : अंगिका लोकगाथाएं तत्कालीन अंगप्रदेश के राजनायकों की जीवन शैली पर प्रकाश डालती हैं । लोकगाथाओं के लोकदेवता, जो मध्यकालीन अंगप्रदेश के राजनायकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे मुख्य रूप से आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होते थे, उनके आदर्श ऊँचे थे, लेकिन लोकजगत में उनका व्यवहार लोक व्यवहारों से अलग नहीं था । लोकगाथा गोपीचन्द का नायक 'गोपीचन्द' और विसुरौत, कारू भगत जैसी लोकगाथाओं के नायक इसके उदाहरण हैं । लेकिन युद्ध और शृंगार भी लोक देवताओं के जीवन से जुड़े हुए थे । घटमा-घुघली और लोरिक जैसी लोकगाथाएं तत्कालीन अंगप्रदेश के क्षेत्रीय शासकों के चरित्र को प्रकारान्तर से अवश्य ही कहती हैं, लेकिन मध्यकालीन राजाओं की तरह लोकपूजित इन पुरुषों में आपसी भेद, द्वेष का दर्शन नहीं होता ।

वाचिका : ये लोकगाथाएं मध्यकाल के अंगप्रदेश की आर्थिक परिस्थितियों को भी खोलती हैं । नदियों से घिरे इस प्रदेश में खेती अर्थ का मुख्य श्रोत रही होगी । दीना-भदरी दोनों भाई थे, और खेती के लिए दोनों के पास पाँच-पाँच मन लोहे की कुदालें होती थीं, जो बीघा-का-बीघा खेत एक दिन में कोड़ कर रख देते थे ।

वाचक : और विसुरौत लोकगाथा में वर्णित है कि विसुरौत को नब्बे लाख गायें

थीं । काव्य है, तो अत्युक्ति होगी ही; लेकिन इन उल्लेखों से यह तो स्पष्ट है कि मध्यकाल तक, गाय और खेती, आर्थिक जीवन की समृद्धि के मुख्य आधार थीं ।

वाचिका : ई. की तीसरी-चौथी शताब्दी में आचार्य संघदास मणि द्वारा रचित प्रकृत ग्रंथ 'वसंदेव हिण्डी' में भी इस अंगप्रदेश में गाय-भैंस पालनेवाले गोपी की बहुलता का उल्लेख है, इस ग्रंथ के ही अनुसार—दूध, दही, घी का व्यापार बड़े पैमाने पर होता था ।

वाचक : एक अकेले विसुरौत गोप के पास ही इतनी गायें हों, ऐसी बात नहीं है, गोपवंशी सोनाय महाराज के पास भी गायों-भैंसों की संख्या असंख्य थी ।

वाचिका : प्राचीन और मध्यकाल के अंगप्रदेश के संबंध में एक उल्लेखनीय बात और है कि समाज में कई अवर्ण-सवर्ण जातियों का जन्म तो हो चुका था, लेकिन उनके बीच जाति के आधार पर तब तक विद्वेष का वटवृक्ष नहीं खड़ा हुआ था । बल्कि आज की राजनीतिक भाषा में जिसे अवर्ण कहते हैं, मध्यकाल तक उनके प्रति सम्मान का भाव सर उठाए चलता था । तभी तो लोक देवियाँ उनके द्वार पर जाकर उनका निहोरा करती रहीं

संवाद के अंत के साथ ही गीत आरम्भ

गलियां गलियां घूमै छै शीतल मैया
कोय नै जागै छै आधी रतिया हे
जों हम्में होतियौं डोमवां के बेटिया
सूपवा चढ़ैतियौं आधी रतिया हे
जों हम्में होतियौं मलिया के बेटिया
फूलवा चढ़ैतियै आधी रतिया हे

वाचिका : ऐसा लगता है, समाज में संगीत और साहित्य की बहुत प्रतिष्ठा थी । और यही कारण था कि इतने विपुल लोक गीतों की सर्जना हो पाई। ये लोकगीत जीव के जन्म से लेकर मृत्यु के संस्कार तक से जुड़े हैं। अंगप्रदेश के जितने लोकदेव हैं,सबके अलग-अलग दर्जनों गीत भी हैं—

गीत

कथी केरों॑ अंगही रे कंगही कथी केरों॑ हे काम
मचिया बैठली हे शीतल मैया झाड़ै लामी रे केश
सोने केरों॑ अंगही रे कंगही रूपे केरों॑ हे काम

मचिया बैठली हे शीतल मैया झाड़ै लामी रे केश
टूटी गेलै अंगही रे कंगही फूटी गेलै रे काम
मचिया बैइली हे शीतल रोदना छै रे पसार
कहाँ गेलै मलिया रे मलिया कि फुलबा भिजाय दिएं मोर
मचिया बैठली हे शीतल मैया झाड़े लामी रे केश
कहाँ गेलै कुम्हरा रे कुम्हरा कलशबा भेजाय दिएं मोर
मचिया बैठली हे शीतल मैया झाड़ै लामी रे केश
कहाँ गेले सोनरा रे सोनरा गहनमा भेजाय दिएं मोर

वाचिका : देवताओं के लिए ही नहीं, नदियों के लिए भी गीत लिखे गये, विशेष कर उन नदियों के लिए, जो अंगप्रदेश को विशेष रूप से दहलाती, दुलराती हैं । कोशी और गंगा पर पचासों गीत आज भी अंग के कंठ में बसे हुए हैं । लोक देवी-देवताओं के गीत तो आकाशगंगा की तरह लोक में व्याप्त हैं । इन लोकगीतों से ही जाना जा सकता है कि अंगप्रदेश में तब भी शैव, शक्ति और वैष्णव मतों की प्रधानता थी ।

वाचक : जब–शिव, शक्ति, विष्णु के स्थान पर–समाज के लौकिक पुरुषों को अलौकिक रूप देने की परम्परा चली, तो उनकी प्रशंसा और ख्याति में प्रबन्धात्मक काव्यों की भी रचना की गई । ऐसा समझा जा सकता है कि अंगप्रदेश में लोकगाथा के सृजन की नींव सातवीं या आठवीं शताब्दी में ही रखी गई होगी ।

वाचिका : अवश्य ही लोकगीतों की परम्परा चौथी शताब्दी से पूर्व की ही है, जिसका अनुशरण करते हुए विक्रमशील महाविहार के सिद्ध कवियों ने चर्यापदों की रचना की होगी । कुछ भी हो, अंगप्रदेश के इन सिद्ध कवियों ने हिन्दी साहित्य की नींव रखी थी । इन्होंने हिन्दी को जो काव्यरूप दिया, विषय दिया, अभिव्यंजना शैली दी, उसी का अनुकरण कर बाद में भक्तिकाल के कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, दादू और पूरा संत साहित्य अपने भावों को लोक में झंकृत कर सके ।

वाचक : बिहुला विषहरी, कमला मैया, सलेस भगत, हिरनी बिरनी, जैसी लोकगाथाएँ अंगप्रदेश के प्राचीन और मध्यकाल में नारियों की स्थितियों को भी कहती हैं । अंगिका लोकगाथा हिरनी-बिरनी, जो नट जाति की दो युवतियों की कथा है, वह सिर्फ समाज की नारियों की स्वतंत्र सत्ता को ही रेखांकित नहीं करती, बल्कि अंगप्रदेश में विभिन्न जातियों के बीच सामाजिक जोड़ को भी स्पष्ट करती है ।

वाचिका : अंगप्रदेश के मध्यकाल में रची गयी ये लोकगाथाएं, वे चाहे सोरठी बृजभार हो या गोपीचन्द, विजयमल हो या नौका बनजरवा, दीना-भदरी हो या लचिका रानी या फिर सलेस या नटुआ दयाल; सभी लोकगाथाएं ई. स. ३०० से लेकर १२०० तक अंगप्रदेश के सामाजिक और आर्थिक जीवन के साथ इसके राजनीतिक जीवन के भी इतिहास हैं।

वाचक : अगर दीना भद्दरी मध्यकालीन जमीन्दारों द्वारा मजदूरों पर अत्याचार की कथा है, तो 'सोरठी बृजाभार' की कथा सम्पूर्ण रूप से अंगप्रदेष के उत्तर मध्यकाल के धार्मिक संस्कार को ही व्यक्त करती है । लोकगाथा गोपीचन्द ही नहीं, सोरठी बृजाभार भी इस प्रदेश में नाथपंथ की सबलता को दर्शाती लोकगाथा है ।

गीत का उभार

अतना कही कैं कुँवर जाहिर करै गुनियां हो
मोहिनी बाँसुरिया बजाबै छै रे की ।
बंसिया बजावै रामा मोहै तीनो लोकवा हो
डगमग करै इन्दरासन रे की ।
जीव, जन्तु मोहै रामा सुर-नर-लोकवा हे
तीनो लोक झूमै जों मातल नू रे की ।
बँसिया पर नाँचै रामा नाग रे नगनियाँ हे
नाँचै सुगा तीतर मोर मोरनी नू रे की ।
बँसिया बजाय रामा नाँचै वृजभारवा हो
झूमी-झूमी बंसिया बजाबै छै रे की !

फेड आउट

वाचिका : जीव, जन्तु, सुर-नर तीनों लोक को मोहने वाली बाँसुरी नाथपंथी योगियों के हठयोग के अनहद नाद और शृंगी की ओर ही संकेत है।

वाचक : और यह भी आश्चर्यजनक नहीं कि सोरठी बृजाभार पर सूफी मत का भी प्रभाव पड़ा हो । लोकगाथा में सोरठी की उपस्थिति का कुछ तो अर्थ अवश्य है । सोरठी कोई सामान्य नारी नहीं है, उसके रूप का वर्णन लोकगाथा में कुछ विशेष का संकेत ही करता है ।

एकिया हो रामा सुनी लेहूँ राजन वचन हमार नू रे की
एकिया हो रामा सोरठपुर में सोरठी कन्या रहै नू रे की
एकिया हो रामा ओकरै उड़ारी कें लै आबों नू रे की
एकिया हो रामा देखबा जब सोरठी के तोहें रूप नू रे की

एकिया हो रामा कोढ़िया के काया बदली जैतौ नू रे की
एकिया हो रामा ऐसन तिरिया नै तीनो लोक नू रे की

वाचक : 'सोरठी बृजाभार' में सोरठी का यह रूप वर्णन इतना तो सिद्ध करता ही है कि अंगप्रदेश अपने पूर्व और उत्तर मध्यकाल में राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक अंधविश्वासों या भोग के दुराचारों से जितना भी ग्रसित हो गया हो, उसके मन के उदात्त कलाप्रेम का अन्त कभी नहीं हुआ । नहीं तो, उस युग में, काव्य स्थापत्य का वह विराट सौन्दर्य कहाँ से उतरता, लोक साहित्य में उदात्त सौन्दर्य की यह भव्य चेतना।

वाचक : अंगप्रदेश की ये लोकगाथाएं अंगप्रदेश के इतिहास हैं । 'महुआ घटवारिन' लोककाव्य की दृष्टि से चाहे जितनी महत्वपूर्ण हो, यह तो इस प्रदेश के घटवारों के इतिहास को भी झंकृत करती है। केवट, कैवर्त, केयोट अलग-अलग शब्द नहीं, एक ही अर्थ के पर्याय हैं ।

वाचिका : पालवंशी राजा मदनपाल के समय में वैवर्तो के भयावह विद्रोह की स्मृति कराती है, महुआ घटवारिन । दसवीं शताब्दी के आस-पास अंगप्रदेश में कैवर्त बहुत शक्तिशाली थे, और उनकी सहायता से ही सेनवंश ने अपना राज्य सुदृढ़ किया था ।

वाचक : वैसे कैवर्त से कम शक्तिशाली नहीं थे दुसाधवंशी शासक । खेतौरी राजाओं के पूर्व, अंगप्रदेश के दक्षिण में दुसाधवंशी राजाओं का ही शासन था, जिसके सिंहासनारुढ़ राजा की हत्या कर, ग्यारहवीं शताब्दी में चन्देल क्षत्रियों ने गिद्धौर में नये राजवंश की नींव रखी थी। अंगिका लोकगाथा के महापुरुष सलेश उसी दुसाधवंशी राजकुल की उपकथा है ।

वाचिका : अंग की लोकगाथाओं के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि वृहत्तर अंग और इसकी केन्द्रीय सत्ता की समाप्ति के साथ ही पूरे प्रदेश में छोटे-छोटे सामन्त, राजा के रूप में उभर आये थे जो अपनी-अपनी जातियों में देवताओं की तरह पूजित होने लगे थे। कहीं कुलदेवता बन कर, और कहीं जातीय देवता का रूप धारण कर । और इसमें भी कोई शंका नहीं कि उन्होंने समाज में देवता के आदर्शों को भी उपस्थित किया था ।

समाप्ति संगीत

नवम खण्ड

आरम्भ संगीत और शीर्षक संगीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : महाप्रलय के बीच जिस अंगप्रदेश ने जीवों को जन्म दिया, और उसकी रक्षा की; जिसने अपने चारो ओर फैली जलराशि का मंथन कर, कई रत्नों के साथ अमृत को भी ऊपर किया, अपने ऋषियों-मुनियों के मंत्रों से जगत को सुख और शांति का संदेश दिया; जिसके आँगन में तीर्थंकरों के वचन गूंजे, और सिद्धों के गान; जहाँ नारियों ने अपने पराक्रम की क्षमता दिखाई : उन तमाम ऐतिहासिक घटनाओं के इतिहास को आपने इस धारावाहिक रेडियो नाटक के खण्ड एक से लेकर आठ तक सुना; अब आगे है—आधुनिक काल का वह काल खण्ड, जब आजादी की अमृत प्राप्ति के लिए, तिलकामांझी के रूप में, सम्पूर्ण अंगप्रदेश अपनी रक्तवर्णी आँखें खोल रहा था ।

वाचक : जिस अंगदेश ने सदियों से व्रत और वेदों का संगीत सुना था, और जो अहिंसा के संगीत को अपनी आत्मा में उतरता रहा, वह अचानक परशुराम हो उठा, दुर्वासा और विश्वामित्र की तरह तमतमाया हुआ । लास्य नृत्य अचानक ही ताण्डव में बदल गया । शिव रुद्र हो गया ।

ओज का संगीत प्रभाव

वाचिका : यह वह काल था जब पूरे भारतवर्ष की तरह अंगप्रदेश में भी हाँफता हुआ मुगल शासन, आपसी युद्ध से ही थक-हार कर, चूर-चूर हो गया था, जिसका ही लाभ उठाते हुए अंग्रेज मुगल साम्राज्य में पाँव पसारते गए । अलबर्दी खां अपने आखरी दिनों में अंग्रेजी नीयत के प्रति काफी चौकन्ना तो हो गया था, और उसने अपने उत्तराधिकारी सिराजुद्दौला को सावधान भी किया था, लेकिन अलबर्दी के बहनोई और सिराजुद्दौला के सेनापति मीरजाफर के कारण सिराज की पलाशी में हार हुई; हार ही नहीं हुई, मारा भी गया, और इस तरह हिन्दुस्तान में अंग्रेजी पाँवों को जमने की जगह मिल गई ।

वाचिका : सिराज का साथ छोड़कर कलाइव से जा मिलने वाला सेनापति मीरजाफर तो यही सोच रहा था कि सिराज की मृत्यु होते ही बंगाल और बिहार की नवाबी, उम्र भर के लिए, उसके भाग्य से सट जायेगी, लेकिन अंग्रेजों को खुश करना क्या मीरजाफर के वश की बात थी !

व्यापारी अंग्रेज ने मीरजाफर को हटा कर, उसकी गद्दी पर, नबाब के ही दामाद मीरकासिम को सन् १७६० में स्थापित कर दिया ।

वाचक : तब कलाइव विलायत जा चुका था, और यह काम कलाइव के उत्तराधिकारी वंसिटार्ट ने किया था ।

वाचिका : मीरकासिम, मीरजाफर सिद्ध नहीं हुआ । वह अंग्रेजों की कूटनीतियों से परिचित था, और अपनी स्थितियों से भी । उसने दरबार का खर्च कम किया, और अंग्रेजों का कर्ज चुकता किया ।

वाचिका : और अंग्रेजों के गुनाहों के प्रशंसक, बिहार के राजा रामनारायण को, एक अपराध के कारण बंदीगृह में डाल दिया।

वाचक : मीरकासिम को मालूम था कि बंगाल में रह कर वह अंग्रेजों का सेवक ही बना रहेगा, नवाब नहीं रह सकता, इसीसे उसने बंगाल को नमस्कार किया, और अंगप्रदेश के मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया। यहां के प्राचीन गढ़ को सामरिक महत्व के अनुकूल बनाया । तोप और बन्दूक ढालने के कारखाने खुलवाए, और समरू नाम के एक स्विस सेनापति को अपनी सेना का प्रशिक्षक नियुक्त किया, ताकि उसकी सेना अंग्रेजी शैली की बन सके ।

वाचिका : मीरकासिम ही वह नवाब था, जिसने बंगाल के कारिगरों की दशा में सुधार के लिए व्यापारियों पर लगी चुंगी ही उठा ली थी, जिससे अंग्रेज व्यापारी बेहद क्रोधित हो उठे, और देखते-ही-देखते कलकत्ता कौंसिल के दो सदस्य, नवाब को भयभीत करने, मुंगेर पहुँच गये थे।

परिवर्त्तन संगीत ध्वनि

मीरकासिम : अंग्रेजों को मालूम नहीं कि मैं मीरकासिम हूँ । मुझे गुप्त सूचना मिली है कि एक ओर तो अंग्रेज देशी शासकों को मुझे सैनिक मदद देने से रोक रहे हैं, और दूसरी तरफ मेरे ही विरुद्ध सैनिक तैयारियाँ भी कर रहे हैं । कलकत्ता कौंसिल के मेम्बरों को भेज कर मुझे धमकाना चाहते हैं । मूर्ख, समझते हैं कि मुझको इसकी खबर नहीं ! पटना की अंग्रेजी कोठी के मुखिया एलिस के लिए, हथियारों से भरी नावें कलकत्ते से गंगा के रास्ते भेजी गई हैं । नावें तो यहीं रहेंगी, मेरी राजधानी में ।

परिवर्त्तन ध्वनि संगीत

वाचक : और मीरकासिम ने सचमुच हथियारों से लदी दोनों नावें रास्ते में ही रोक लीं । कलकत्ता से आये कौसिलरों में से एक को जमानत के रूप

में रख लिया, और दूसरा, मुंगेर से मुर्शिदाबाद के बीच ही उत्तेजित प्रजाओं का शिकार हो गया ।

वाचिका : नवाब की इन कार्रबाइयों ने अंग्रेजों को और भी बौखला दिया ।

वाचक : परिणामतः सन् १७६३ ई. में अंग्रेजों ने मीरजाफर को मुर्शिदाबाद की गद्दी पर आसीन किया, और मीरकासिम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी ।

वाचिका : नवाब मीरकासिम ने जनोजी भोंसले से मदद मांगी, पर उससे तो पहले ही अंग्रेजों ने गुप्त समझौता कर लिया था, तब मीरकासिम को जुनोजी भोंसले की सैनिक सहायता कहाँ से मिलती ।

वाचक : पर मीरकासिम हतोत्साहित नहीं था । उसकी सेना ने राजमहल के निकट, उधवा नाले पर मोर्चा डाला, और महिने भर तक गंगा नदी के सारे घाटों को छेके रहा ।

घुड़सवारों, बन्दूकों और तोपों की ध्वनियाँ
(फेड इन, फेड आउट)

वाचिका : अंग्रेज सैनिक मीरकासिम की सैन्यशक्ति से जैसे उखड़ने लगे थे, लेकिन नवाब के भाग्य में तो कुछ और ही लिखा था। उसकी सेना के अंग्रेज अफसर अंग्रेजी सेना से जा मिले थे, जो अंग्रेजी सेना को गुप्त घाटों की सूचना दे रहे थे ।

वाचक : और एक रात, जब नवाब की सेना बेसुध पड़ी हुई थी, अंग्रेज सेना ने गुप्त घाटों के सहारे नदी पार की, फिर नवाब की सेना पर प्रलय की तरह टूट पड़ी । इस अप्रत्याशित आक्रमण से नवाब मीरकासिम को, भयावह उदासी और असह्य यंत्रणा के बीच, अपनी राजधानी मुंगेर से निकलकर अवध के नवाब वजीर शुजाउद्दौला की शरण लेनी पड़ी। मीरकासिम ने सोचा तो यही था कि वह शुजाउद्दौला की सहायता से अपनी राजधानी को प्राप्त कर लेगा, लेकिन उस सेना ने जिस तरह से बिहार की प्रजा को ही लूटना-पाटना शुरु किया, उससे तो यहाँ की प्रजा ही वजीर की सेना के विरुद्ध हो गयी । इस राजनीतिक संकट ने अंगप्रदेश में अंग्रेजी शासन की नींव को ओर भी मजबूत कर दिया ।

वाचिका : भले ही मीरकासिम अंग्रेजी सत्ता की नींव को हिलाने में, अपने ही गद्दार सैनिक अफसरों के कारण, असमर्थ रह गया हो, लेकिन अवध के नवाब शुजा तक को तो वह सावधान कर ही गया था कि

अंग्रेज कम्पनी के व्यापार पर लगी चुंगी को माफ करना, देशी व्यापार के हित में कितना खतरनाक हो सकता है, और इसी कारण कलाइव के प्रस्ताव को ठुकराते हुए शुजा ने कम्पनी के व्यापार पर लगी चुंगी माफ करने से इन्कार कर दिया था ।

वाचक : एक ओर मीरकासिम ने अगर अपनी नई राजधानी से अंग्रेजी कम्पनी को उसकी सीमा बताई थी, तो दूसरी ओर नवाब सरफराज खाँ के सिपहसालार गौस खाँ की विधवा बेगम लाल बीबी ने, भागलपुर में मराठा सैनिकों की लूटपाट को अपनी कूटनीति और तलवार की नोंक पर रोक कर, अंगप्रदेश के इतिहास पर एक नई चमक चढ़ाई थी ।

वाचिका : पलासी की लड़ाई में मराठों की हार भले हो गयी थी, लेकिन चौथ की मांग उसने नहीं छोड़ी थी, और इसी कारण कटक के अधिकारी शिवभट्ट साठे ने सन् १७६०-६१ ई. में अंगप्रदेश के वीरभूम के रास्ते मुंगेर पर चढ़ाई कर दी थी, जिसकी लूटपाट से भागलपुर तक आक्रान्त हो उठा था । अगर, लाल बीबी ने अपनी कुशल राजनीति का पता नहीं दिया होता, तो पता नहीं, लूटपाट में लगे मराठे सैनिक कितना कुछ उजाड़ते चले जाते ।

(घुड़सवार सैनिकों के प्रवाह की ध्वनि)

वाचक : और जब बक्सर से अंग्रेजी कम्पनी को बिहार-बंगाल की दीवानी मिली, तो जैसे अंग्रेजी राज ही कायम हो गया । १७७२ ई. में वारेन हेस्टिंग कलकत्ता का गर्वनर बना; रेग्यूलेटिंग एक्ट पास हुआ; मालगुजारी का इन्तजाम नीलामी द्वारा निश्चित हुआ । अंग्रेजों के दलालों का दल खड़ा हुआ । किसानों के अमानवीय शोषण का चक्र चल पड़ा। फिर तो देखते-देखते किसान, किसान से बंधुआ मजदूर बन गये ।

वाचिका : इस नये शोषण से अंगप्रदेश में सर्वाधिक पीड़ित हुए—जंगलों, पहाड़ों में रहनेवाले आदिवासी, गिरिवासी । और आखिर में वे शोषण के खिलाफ बादल की तरह फट पड़े ।

नेपथ्य में डिग्गा पीटने की आवाजें

जंगली हवाओं में आग लग गई । पेड़ों के पत्ते झनझना उठे, और इस तरह अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जनक्रांति का पहला अध्याय अंगप्रदेश के भागलपुर जिले की भूमि में लिखा जाने लगा ।

डिग्गे की ध्वनि तेज

वाचक : इस जनक्रांति का नायक था—तिलकामांझी । अंग्रेजों के विरुद्ध

उबलता हुआ लावा—तिलकामांझी । सामन्तों, शोषकों के विरुद्ध दहकता जंगल-पर्वत—तिलकामांझी । अन्याय के अंग्रेज पर रुद्र का तीसरा खुला नेत्र—तिलकामांझी ।

गीत

शंभु-धनुष पर तना हुआ आकर्ण काल-सा तीर हुआ
तिलका माँझी जैसा तो दुनिया में विरले वीर हुआ ।

जिस पर गौरव एकलव्य और अर्जुन के तीरों को
महाकाल-सा मोह रहा जो कौन्तेय-से वीरों को
वैरी-गढ़ में लगी हुई ज्यों भीषण आग लपट हो
सारे धैर्य जहाँ बह जाते—घाट विकट औघट हो
जल जाता इतिहास जिसे छू, छूने से डरता है
शब्दभेदियो, किसे मारते—तिलक कभी मरता है ?
पढ़ो 'अंग' की भाषा को, है अर्थ छुपा हर आखर
तिलका जिसका बीज मंत्र हो, हर अक्षर का ईश्वर
तिलक वही था, जननी-व्यथा से जो पहले गंभीर हुआ
रोई भारत माता, तो तन पर लज्जा का चीर हुआ
तिलका माँझी जैसा तो दुनिया में विरले वीर हुआ ।

वाचिका : तिलका यानी सरदार शिब्बू का पुत्र । जब बंगाल का नवाब अलीबर्दी खां जीवन की अंतिम घड़ियों में सिराज की तख्तपोशी कर रहा था; उसी समय सिराज की पहली मुलाकात गर्जन सिंह से हुई थी । इतिहास कहता है कि गर्जन सिंह पालवंशीय राजा द्वारा स्थापित महेश राज का ग्यारहवाँ राजा था ।

वाचक : गर्जन सिंह अंगप्रदेश का ऐसा राजा हुआ, जिसने अपनी सेना में पहाड़ियों का पूरा स्थान रखा था। अस्त्रों में तलवार-भाले की जगह तीर-धनुषों को प्रमुखता दी थी। अपनी पहाड़िया सेना के कारण ही गर्जन सिंह उस समय बंगाल, उड़ीसा और बिहार में लोकप्रिय शासक बन बैठा था ।

वाचिका : जब अंग्रेजी कम्पनी के विरुद्ध सिराजुद्दौला की सेना पलासी के युद्ध-मैदान में उतरी, तब गर्जन सिंह ने, अपने तीन सौ पहाड़िया सैनिकों के साथ, उस युद्ध में भाग लिया था । वह १७५७ का २३ जून था ।

तोप, बन्दूक, तलवार, लाठी की ध्वनियाँ/चीख-हुंकार

वाचक : मीरजाफर का षड़यंत्र । तोप-बन्दूक वाली अंग्रेजी सेना के सामने तीर, बिज्जल, लाठी की कमजोर सेना । पलासी युद्ध का परिणाम सामने था। पहाड़िया सरदार शिब्बू अपने घायल राजा गर्जन सिंह को किसी तरह बचा कर जंगल-पहाड़ की ओर भाग निकला ।

एक उदास संगीत प्रभाव

वाचिका : बन्दूक की गोली से घायल गर्जन सिंह को बचाने की बहुत कोशिश हुई, लेकिन मौत सिरहाने आकर बैठ गई थी । महेशपुर राज्य का सिंहासन सूना कैसे रहता । सरदारों के आग्रह पर गर्जन सिंह की विधवा पत्नी सर्वेश्वरी देवी महेशपुर राज की रानी बनी । उसने भी पहाड़ियों को शासन में साथ रखा ।

वाचक : करीब पच्चीस वर्षों तक शासन करती रही, सर्वेश्वरी देवी, और अपने पति की मौत का बदला लेने की बात भी सोचती रही । अंग्रेजों के विरुद्ध रानी का गुस्सा थम ही नही पा रहा था ।

वाचक : तब जबड़ा पहाड़िया, पहाड़ियों की जीवनशैली में सुधार के साथ-साथ अंग्रेजों से बदला लेने के लिए अंगप्रदेश में फैले पहाड़ियों को संगठित कर रहा था । जबड़ा पहाड़िया का पिता–शिब्बू सरदार, अंग्रेजी सैनिक के हाथों भागलपुर में ही मारा गया था । शिब्बू, पलासी के युद्ध में कई अंग्रेजी सैनिकों की मौत का अकेला कारण था ।

वाचिका : जबरा पहाड़िया इसी शिब्बू सरदार का बेटा था, जो इतिहास में तिलकामांझी के नाम से विख्यात हुआ ।

गीत (नेपथ्य से उभरता हुआ) क्षीण होता है ।

सौ तपियों का तेज अंग में जागा था कोने में
दमक रहा था प्रभा-पुंज ले सूर्य कलश सोने में
जाग रहा था पुण्य मंत्र का, दुर्वादल, अक्षत का
अंग प्रदेश का गूंज रहा था जंगल; जन पर्वत का
दिशा-दिशा से तिलका का ऐसा ही मंत्रोच्चार हुआ
सर्प-यज्ञ से लगा अभी ही सर्पों का संहार हुआ
महायज्ञ की महाअग्नि से ऐसी लपट उठी क्षण में
दीख रहा था धुआँ-धुआँ ही चंदा के उजले वन में
सावन भादो का बढ़वानल चानन, बडुआ, चीर हुआ
महाद्वीप का दुर्ग सुरक्षित करने को प्राचीर हुआ

तिलका माँझी जैसा तो दुनिया में विरले वीर हुआ ।

वाचक : रानी सर्वेश्वरी का सैनिक सहयोग तिलकामांझी को मिल गया था। अंग्रेज इस गतिविधि से असावधान नहीं थे । अंग्रेजों को मालूम था कि तिलका का गुरु श्याम गंजाम ही चुआर आन्दोलन का मुख्य नायक है, जो आन्दोलन, अंग्रेजों के विरुद्ध, घाटशिला से लेकर वीरभूम के पंचेत तक फैल गया था। इसीसे तिलका का सर्वेश्वरी दयाल से मेल-जोल अंग्रेजों को प्रीतिकर नहीं लग रहा था ।

वाचिका : और जैसे ही अंग्रेजों को शक सच लगा, उसने सर्वेश्वरी देवी को उसके ही महल में नजरबन्द कर दिया, और आखिर में नजरबन्दी के दौरान ही ई. स. १७८३ में रानी की मृत्यु हो गयी ।

उदास संगीत

वाचिका : लेकिन इससे तिलकामांझी की गतिविधियों में कोई कमी नहीं आयी। पलासी युद्ध के समय, अंग्रेजी फौज के भय से जो पहाड़िया अंगप्रदेश के विभिन्न अंचलों में बिखर गये थे, उन्हें अपनी सेना से तिलका ने जोड़ना शुरु कर दिया।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

रात के सन्नाटे को तोड़ती झिंगुर-झनकार।

कभी-कभी पत्तों की सरसराहट

तिलका : तुम लोगों को यहाँ बुलाने का खास मकसद है । अगर हमलोग समझते हैं कि अत्याचारी अंग्रेजों के विरुद्ध जैसे-तैसे लड़कर लड़ाई जीत लेंगे, तो यह सोचना भारी मुर्खता है । उनके पास बन्दूकें हैं, गोलियां हैं, और हमारे पास तीर और बिज्जल । (ओज का स्वर) लेकिन हमलोग संगठित रहें, तो विश्वास रखो, हमारे तीरों से बिंधे हुए अंग्रेज समन्दर पार भागते नजर आयेंगे ।

कई स्वर : हमलोग वही करेंगे, जैसा हमारा तिलका सरदार कहेगा ।

तिलका : तो, सबसे पहले, हमें अपने में ही सुधार करना होगा । हममें ऐसी बुराइयां हैं, जिनको दूर किए बिना न तो हम अपने समाज में सुधार ला सकते हैं, न अंग्रेजों को अपनी जमीन से समन्दर पार खदेड़ सकते हैं । (पॉज) और हमारी सभी बुराइयों में सबसे बड़ी बुराई है—यह मालगुएडवे की अमानवीय प्रथा ।

एक स्वर : लेकिन यह तो हमारे पूर्वजों की प्रथा है, पूर्वजों के द्वारा हमें दिया गया उत्सव है—महीने भर चलने वाला पर्व। वह भी मालगुएडवे क्या

साल-साल में आता है ! बारह साल में एक बार ही तो किसी बलिष्ठ भैंस को हम मारते हैं ।

तिलका : (गंभीर स्वर) तो सदियों के बाद अंग्रेजों ने हम पर अत्याचार आरम्भ किया है; क्या यह इसीलिए ठीक है कि सदियों के बाद हो रहा है ? आखिर अमानवीय व्यवहार किसी भी स्थिति में न्यायोचित नहीं कहा जा सकता, वह चाहे मनुष्य के विरुद्ध हो या जानवरों या जंगली पशुओं पर ।

क्षण भर का सन्नाटा : झिंगुर-ध्वनि

तिलका : अंग्रेजों के अत्याचार से हम मुक्त होना चाहते हैं, तो हमें ऐसी क्रूर आदतों से मुक्त होना होगा । अपनी सहज कमजोरियों से भी मुक्त होना होगा । हमारे दुश्मन खूब अच्छी तहर से जानते हैं कि वे हमें नशे में बनाये रख कर, हमारी बुद्धि और ताकत को सुलाए रख सकते हैं। हमारी बुद्धि और ताकत अगर ठीक से जग जाए, तो पहाड़ों पर ही क्या, जमीन की खाइयों में भी बुलूचियों को छिपना मुश्किल हो जायेगा । तुम सब याद रखो, किसी भी प्रकार का नशा शोषित व्यक्ति के सपनों को ही पहले चूर कर देता है ।

सन्नाटा, झिंगुर की आवाज ।

तुमलोगों को कभी नहीं भूलना चाहिए कि कैप्टन बुक ने किस तरह देवघर के त्रिकुटी पहाड़ पर तोप लगाकर हमारे कई सौ पहाड़िया लोगों की जान ले ली थी । हमें चुन-चुन कर, एक-एक कैप्टन बुक को मारना होगा, जैसे टटकपाड़ा में गवई गोथरा पहाड़िया ने अपनी तलवार से कैप्टन बुक की गर्दन उड़ा दी थी, और उसके धड़ को लटका दिया था, उसी जगह पर खड़े इमली के पेड़ से ।

पत्तों की सरसराहट लगातार तेज होती हुई

तिलका : लगता है, कोई जासूस या पुलिस दल हमारी खोज में इधर ही आ रहा है । तुमलोग, बिना किसी आवाज के, इस रास्ते से उस पहाड़ी पर उतर जाओ । मैं यहीं पर रुक कर पीछा करने वालों का पता लेता हूँ ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचक : सर्वेश्वरी रानी की मृत्यु की बाद, तिलकामांझी के नेतृत्व में पहाड़ियों की सेना फिर बनने लगी थी । बंगाल के भयानक अकाल ने इन

पहाड़ियों को तो बेहाल कर ही दिया था; फिर अंग्रेजों से मिले स्थानीय जमींदार भी इनका कम शोषण नहीं कर रहे थे । धुआँते कर बुझने की जगह, जलते हुए बुझने को अब पहाड़िया तैयार हो गये थे।

वाचिका : तत्कालीन भागलपुर के कलक्टर अगस्टस क्लीवलैंड ने, पहाड़ियों के पहाड़-से हौसले का पता जब पाया, तो फौज की टुकड़ी लेकर उसी ओर बढ़ गया । उसे क्या मालूम था कि तिलका की आँखों में उसके पिता की मौत का दृश्य घूमता रहता है; कि किस तरह उसके पिता को बरगद से लटका कर गोलियों से छलनी कर दिया गया था ।

वाचक : पहाड़ियों को दबाने के लिए क्लीवलैण्ड सैनिकों के साथ पहाड़ी जंगलों के बीच बढ़ा जा रहा था कि तभी तिलकामांझी का तीर झाड़ियों को छेदते हुए निकला, और कलीवलैंड के शरीर में धस गया । तीर का विष क्लीवलैंड की देह में उतरता चला गया । वह ऐसा विष था, जिससे कलक्टर क्लीवलैंड, ३० नवम्बर १७८३ से लेकर १२ जनवरी १७८४ तक बचने के लिए जूझता रहा, लेकिन तिलका के तीर का विष क्या बुझने के लिए था ?

वाचिका : जिस अंग्रेज ने पलासी के युद्ध को पस्त किया था, उसका ही एक कलक्टर एक पहाड़िया के तीर से मारा गया था; अंग्रेजों के लिए यह बेहद शर्म की बात थी । फिर इस खबर से क्रांतिकारियों का हौसला और भी हिमालय-सा हो सकता था, इसी से तिलका के तीर से क्लीवलैण्ड की मृत्यु की घटना को एकदम गोपनीय बना दिया गया, और अंग्रेज की डायरियों के सहारे इतिहास लिखने वाले ने भी वैसा ही किया । शायद इतिहास को यह नहीं मालूम कि साढ़े पाँच, छः हजार वर्ष का कर्णगढ़ जब खुदाई में निकल कर महाभारत की कथा बोलने लग सकता है, तब तो तिलका की कथा तीन, साढ़े तीन सौ वर्ष की ही पुरानी है, जिसकी कहानियाँ लोकमानस और स्थल में अभी भी जीवित हैं ।

गीत का उभार

स्वर्ण-शैल का शिखर तिलक था, पुण्य प्रखर गर्वोन्नत
जैसे भारत माँ के सर पर मुकुट हिमालय पर्वत
एक अलिखित गीता का अध्याय टंगा हो वट से
महासमर की कथा सुनी है जिसकी ही हर लट से
वृक्षों के पत्ते-पत्ते पर काल लिख गया नाम तिलक

छोड़ गया जो भारत माँ के अधरों पर सौ हँसी-किलक
मध्य दिवस में दीप्त सूर्य-सा काल-कील पर अड़ा हुआ
विष्णु की छाती पर कौस्तुभ मणि-सा ही जो पड़ा हुआ
दुनिया के सिंहासन पर बैठा वह आलमगीर हुआ
आकुल-व्याकुल मरूस्थल पर गंगाजल का नीर हुआ
तिलका माँझी जैसा तो दुनिया में विरले वीर हुआ ।

वाचक : तिलका जानता था, किसी की देह में उसके तीर के गथने का क्या अर्थ होता है; इसी से पहाड़िया सैन्य-संगठन में वह और भी उत्साह के साथ लग गया । यह तिलका की सूझबूझ का ही परिणाम था कि संताल भी उसके संगठन के करीब आने लगे थे । आखिर संताल भी तो अंग्रेजी जमींदारों से हद तक ऊब आए थे । निर्णायक लड़ाई के लिए दोनों एक हो गये थे।

डिग्गे की मार्चिंग ध्वनि उत्तरोत्तर तेज

वाचिका : और एक दिन कान्दो और वारकोप के मध्यस्थल पर अंग्रेजी फौज के आमने-सामने आ गई पहाड़िया और संताली की संयुक्त सेना । लेकिन बन्दूक की गोलियों के सामने तीरों का बहुत देर तक टिकना मुश्किल ही था । पहाड़ियों की संयुक्त सेना सामने आकर लड़ रही थी और अंग्रेज सैनिक पत्थरों-वृक्षों की आड़ लेकर गोलियां दाग रहे थे । वनवासी सैनिकों की लाशें बिछ गयीं । गोली तिलका की एक जांघ में भी आकर लगी । फिर क्या था, पहाड़िया तिलका को लेकर बौंसी के मन्दार की ओर निकल गये । वहीं स्वस्थ होकर तिलका गिद्धौर; फिर मुंगेर की पहाड़ियों पर अपने बचाव और पहाड़िया-संगठन की योजना बनाने लगा ।

वाचक : लेकिन अंग्रेज सिपाही और मुखबिर की आँखें तिलकामांझी का लगातार पीछा कर रही थीं । मुखबिर की ही सूचना पर अंग्रेज सैनिकों ने भागलपुर के सुल्तानगंज की पहाड़ी पर तिलका को गिरफ्तार कर लिया । (उदास संगीत उभार) घोड़े से बांध कर उसे भागलपुर लाया गया और आज जहाँ तिलका की विशाल मूर्त्ति खड़ी है, उसी के निकट, बरगद की एक डाल से बांध कर उसे फांसी दे दी गई । बर्बरता की सीमा तो वहाँ टूट गई, जब अंग्रेज सैनिक, फाँसी पर झूल रहे शहीद तिलकामांझी को, गोलियों से भूनते रहे ।

तीव्र उदास संगीत

वाचिका : बर्बरता का यह लेख अंग्रेजों द्वारा १७८५ ई. की ११ फरवरी को लिखा गया था । लेकिन अंग्रेजी दासता से मुक्ति के लिए शहीद तिलकामांझी ने १७७० ई. में ही जिस जनक्रांति की नींव डाली थी; अंग्रेजी कम्पनी के लिए उस नींव को खोदना आसान नहीं हुआ ।

वाचक : अंगप्रदेश में सन् १८५४-५५ में फिर संताल-विद्रोह फूट पड़ा । इस विद्रोह का नेतृत्व किया था—बरहेट के चुन्नू मुर्मू के चार बेटे—सिद्धो, कान्हो, चाँद और भैरो मुर्मू ने । सिद्धू-कान्हो अंग्रेज सैनिकों की गोलियों का शिकार हो कर शहीद हुए थे, लेकिन शहादत की कहानियाँ शहीद नहीं होतीं । संथाल परगना के पाकुड़ जिला का मार्टिलो टावर अब भी ३० जून १८५५ की उस लोमहर्षक घटना को एक साँस में बोल जाता है कि किस तरह अंग्रेजों के विरुद्ध दूसरे दिन हजारों की संख्या में जुटनेवाले संथालों को तितर-बितर करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने रातों रात तीस फीट ऊँचे टावर का निर्माण कराया था, और फिर बैठक के लिए हजारों की संख्या में जुटे संथालों पर गोलियों की बौछार शुरु हो गयी थी । जलियाबाग का एक और दृश्य खड़ा हो गया था ।

वाचिका : अंग्रेजों के विरुद्ध इस जनविद्रोह में सिद्धो, कान्हो ही नहीं, इनके सैन्य संगठन की देखरेख करने वाली फूलो और झामों नाम की दो बहनें भी शहीद हुई थीं । अंग्रेज सैनिक और अंग्रेजों के पक्षधर के विरुद्ध बौंसी में भी संतालों ने विद्रोह किया था, यहाँ का दत्ता पोखर उस जनविद्रोह का मूक साक्षी है; कई क्रांतिकारी यहाँ भी शहीद हुए । संतालों के इस जनविद्रोह को सिर्फ हूल आन्दोलन कह कर चुप हो जाना—आजादी के लिए आदिवासियों के आरम्भिक जनविद्रोह के इतिहास से आँखें चुराना है । यह जैसा भी जनविद्रोह था, भारत में अंग्रेजी स्थिरता को जड़ से हिलाने का पहला जनविद्रोह ही था ।

शीर्षक संगीत

समाप्ति संगीत

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : महाभारत के परमवीर कर्ण ने, महासमर में, अंगप्रदेश के जिस पराक्रम को दिखाया था, वह धीरे-धीरे वेदों, उपनिषदों की राहों पर चलते हुए, तीर्थंकरों-बौद्धसिद्धों के गान में शांति खोजने लगा था । मोक्ष और जीवन के सुख की तलाश में पराक्रमी अंगप्रदेश सुखवाद के रास्ते पर एक झटके के साथ ही बढ़ गया था, जो उसके पराभव का कारण भी बना । फिर आधुनिक युग में तिलका मांझी के रूप में, एक नई जागृति के साथ, अंग की आँखें खुलीं । इस धारावाहिक के पिछले नौ खण्डों में इसी इतिहास को जीवन्त किया गया । अब प्रस्तुत है—तिलकामांझी की शहादत से आलोकित अंगप्रदेश का नया समर-मंथन ।

मार्चिंग संगीत-झंकृति

वाचक : तिलकामाँझी के तिलक-सा अंगप्रदेश; सिद्धो की सिद्धि-सा अंगप्रदेश; कान्हो का कान्हा-सा अंगप्रदेश; चाँद का चन्दा-सा अंगप्रदेश; भैरो का भैरव-सा अंगप्रदेश ।

वाचिका : हाँ, चाँद-सा शीतल दिखने वाला अंगप्रदेश स्वाधीनता संग्राम के दिनों में भैरव ही बन गया था ।

वाचक : अंग्रेजी सरकार संताल-विद्रोह से इस कदर भयभीत हो गई, कि गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने भाषा सर्वेक्षण के आधार पर जिस भागलपुर जिला का निर्माण किया था, उसे तोड़ कर संताल परगना नाम से एक अलग जिला बना दिया; ताकि संतालों के विद्रोह को नियंत्रित किया जा सके, और संतालों के नेता भगीरथ माँझी तथा लाल बाबा की गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके ।

वाचिका : शहर-शहर, गाँवों में पुलिस की छावनी तैनात कर दी गई थी ।

फौजी बूटों की आवाजें कुछ क्षणों के लिए गूंजती हैं

वाचक : ऐसे में क्रांतिकारी कार्यों को जारी रखना कठिन तो हो रहा था, लेकिन चुप बैठे रहना भी तो कठिन था । अंगदेश के सहरसा-सुपौल से लेकर संताल परगना की सीमाओं में कई क्रांतिकारी संगठन सक्रिय हो गये थे ।

वाचिका : बात यहीं तक सीमित नहीं थी । भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष को गति देने और आजादी की प्राप्ति के लिए, अंग की भूमि पर ऐसा भी वीर हुआ, जो समुद्र के पार विदेशों में क्रांति का ध्वज लिए फिरता फिरा। ऐसा वह पुरुष थे—आनन्द मोहन सहाय ।

वाचक : भागलपुर के नाथनगर स्थित पुरानी सराय मुहल्ले में जन्मे आनन्द मोहन सहाय ने, गाँधी जी के आह्वान पर, सन् १९२१ में सरकारी इस्कूल की पढ़ाई छोड़ दी, और सन् १९२२ में राजेन्द्र प्रसाद के निजी सचिव बन गये । तब अंग्रेजी सरकार की दृष्टि देश भर के क्रांतिकारी नेताओं पर और भी वक्र हो गई थी ।

वाचिका : नरम और गरम नेताओं की गिरफ्तारियाँ बढ़ गयी थीं ।

हथकड़ियों, बूटों, जेल के फाटकों की ध्वनियाँ

वाचक : ऐसे में आनन्द मोहन सहाय ने पढ़ाई की आड़ में देश छोड़ा, और पानी के जहाज से जापान की ओर निकल गये ।

जहाज की ध्वनि, लोगों का कोलाहल

जिस समय सहाय जी जहाज से जापान जा रहे थे, उस समय उनके पास मात्र ७५ रुपये थे, और जापान तक पहुँचने के लिए उन्हें जहाज पर कूली का काम तक करना पड़ा था।

वाचिका : जापान पहुँच कर आनन्द मोहन सहाय श्रीरास बिहारी बोस से मिले, जो दिल्ली बमकाण्ड के प्रमुख क्रांतिकारी थे, और उस समय जापान में ही रह रहे थे । तब अंग्रेजी सरकार की जापान से गहरी दोस्ती होने के कारण अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध खुलकर कुछ भी नहीं किया जा सकता था । ऐसे हाल में सहाय जी ने जापान के अखबारों में जवाहर लाल नेहरू, गाँधी और राजेन्द्र प्रसाद की जीवनियों को लिखना शुरू किया, जिससे जापान में रहने वाले भारतीय युवक ही नहीं, जापानी युवक भी प्रभावित हो उठे ।

वाचक : उसी समय प्रसिद्ध क्रांतिकारी राजा महेन्द्र प्रताप वहाँ पहुँचे, जिनसे मिल कर सहाय जी की राष्ट्रीय भावना और भी प्रबल हो उठी । यह संयोग ही था कि इन्हें मंत्री आर. ओकूमुरा से भी घनिष्टता हो गयी, जिस कारण सहाय जी के खाने-पीने के साथ एक रात्रि-पाठशाला में पढ़ाने की भी व्यवस्था हो गयी । इससे वह जापान के नवयुवकों में अपने विचारों को फैलाने में बहुत सफल हुए ।

वाचिका : और ठीक इसी समय, भारतीय नेताओं के साथ विचार-विमर्श के बाद

जापानी राजनीतिज्ञों ने, जापान के नागासाकी शहर में, एशिया युवक सम्मेलन की नींव रखी, जिसका उद्देश्य पूर्णतः राजनीतिक था ।

वाचक : इसका भार भी दिया गया तो आनन्द मोहन सहाय के ऊपर ।

वाचिका : काम को अंजाम देने के लिए 'इन्टरनेशनल ट्रेडर्स' नाम का एक फर्म स्थापित हुआ, जिसका लक्ष्य दिखाने को तो यही था, कि उन देशों में कपड़ा उद्योग के मालिकों से सम्पर्क कर व्यापार का विकास; लेकिन इसका आन्तरिक उद्देश्य था—एशिया के गुलाम देशों में जाकर भारतीय आजादी के लिए क्रांतिकारी चेतना का सृजन और अंग्रेजों के प्रति विद्रोह के भावों को भड़काना ।

संगीत प्रभाव

वाचक : १९२६ ई. के ७ नवम्बर को आनन्द मोहन सहाय ने लक्ष्य की प्राप्ति के अपनी यात्रा शुरु की, और जापान से हाँगकाँग, कैण्टन, सैगोन, थाइलैण्ड, मलाया, सिंगापुर, सुमात्रा, और कोलम्बो होते हुए वह दक्षिणी भारत आये; वहीं से १९२७ ई. की जनवरी में कलकत्ता पहुँचे।

वाचिका : उस समय राष्ट्रीय कांग्रेस के गोहाटी अधिवेशन की तैयारी जोरों पर थी । सहाय जी की इच्छा प्रबल हो उठी कि वह उसमें भाग लें, लेकिन कपड़ा व्यापार के पीछे राजनीतिक उद्देश्य न खुल जाय, इसीसे उन्होंने अपने मन पर नियंत्रण ही बनाए रखा ।

वाचक : भारत प्रवास के दौरान ही इनका विवाह देशबन्धु चितरंजन दास की भांजी उर्मिला देवी की बेटी सतिसेन से हुआ, और जब सहाय जी अपनी पत्नी को लेकर जापान लौटने वाले थे कि उन्हें सुभाष चन्द्र बोस के असाध्य रोग की खबर मिली ।

वाचिका : वह सुभाषचन्द्र बोस से मिलने गये । उस समय नेताजी कलकत्ते में ही थे । लगभग पन्द्रह मिन्टों की बातचीत में सहाय जी ने नेताजी को अपनी समस्त गतिविधियों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दी; जिसे सुनकर नेताजी का चेहरा खिल उठा ।

संगीत प्रभाव

वाचक : जापान उतरने के पहले आनन्द मोहन सहाय सिंगापुर उतरे, और वहाँ के भारतीय संगठन के मंत्री आविद अली के कहने पर, जन्मभूमि के प्रति कर्त्तव्य विषय पर, लम्बा ओजस्वी भाषण किया, जिससे अंग्रजी सरकार के कान खड़े हो गये ।

वाचिका : लेकिन इसके पहले कि कहीं कोई गिरफ्तारी होती, सहाय जी अपनी

पत्नी के साथ, फ्रांसिसी जहाज पर चढ़ कर जापान पहुँच गये । वहाँ पहुँच कर उन्होंने कांग्रेस की शाखा ही नहीं खुलवाई, बल्कि 'वायस ऑफ इण्डिया' नाम की अंग्रेजी पत्रिका का सम्पादन भी आरम्भ किया, जिसका जापानी अनुवाद भी उसमें होता था । इस पत्रिका के माध्यम से सहाय जी ने भारतीय स्वाधीनता की भावना को प्रबलतम किया ।

वाचक : सहाय जी जापान में जो कुछ भी कर रहे थे, इसकी जानकारी सुभाष चन्द्र बोस को देना जरूरी था । लेकिन कौन हो सकता था ऐसा विश्वासी, जो उनके संदेश को वहां तक गोपनीय ढंग से पहुँचाए।आखिर इसके लिए उन्होंने अपनी पत्नी को ही चुना।

वाचिका : जब सतिसेन के अचानक भारत जाने की बात को लेकर शंका उठी,तो सहाय जी ने कह दिया–

संगीत प्रभाव

सहाय स्वरः अब मेरी पत्नी, मुझसे अनबन हो जाने के कारण, मेरे साथ नहीं रहना चाहती, इसीसे वह भारत लौट रही है ।

संगीत प्रभाव

वाचिका : यह बात १९३९ ई. की है ।

वाचक : और जुलाई १९४३ ई.में नेता सुभाष चन्द्र बोस से आनन्द मोहन सहाय की ऐतिहासिक मुलाकात हुई । इस मुलाकात में नेताजी ने सहाय जी पर आजाद हिन्द फौज के पुनर्गठन का उत्तरदायित्व सौंपा । तो, सहाय जी ने भी, आजाद हिन्द फौज में पुनर्जीवन डालने के लिए, अपने जीवन को समर्पित कर दिया ।

वाचिका : फौज के लिए सैनिक और धन, दोनों की ही जरूरत थी । इसके लिए सहाय जी ने थाईलैण्ड के पूर्व उन सभी देशों का भ्रमण शुरु किया, जहाँ भारतीय बसे हुए थे । देखते-ही देखते आजाद हिन्द फौज युवा महिला सैनिकों से भी भर उठी । सहाय जी की पुत्री आशा सहाय स्वयं आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेण्ट की सेनानी के रूप में सक्रिय थी।

वाचक : इस गहन राजनीतिक गतिविधियों के कारण सहाय जी को गिरफ्तार कर, सिंगापुर के पर्ल हिल जेल में बन्द कर दिया गया, लेकिन वियतनाम के उदारपन्थी साथियों ने इसकी खबर आकाशवाणी से दिल्ली तक पहुँचाई ।

वाचिका : देश में इस खबर को लेकर सनसनी फैल गई । १६ मार्च १६४६ ई. में जवाहर लाल नेहरु स्वयं सहाय जी से मिले, और राजनीतिक वार्ता के बाद ३० मार्च १६४६ को जेल से उनकी रिहाई हुई । जेल की यंत्रनाओं और इसके पूर्व नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु की खबर ने आनन्द मोहन सहाय को झकझोर अवश्य दिया था, लेकिन देश और समाज के प्रति अपनी गहरी आसक्ति और उत्तरदायित्व को वह जीवन के अन्तिम काल तक नहीं भूल सके ।

वाचक : उनके संघर्षों और सेवाओं की कहानियां आज भी भागलपुर के नाथनगर में अमरगाथा की तरह कही जाती हैं ।

तरंगायित संगीत ध्वनि

वाचक : जब आनन्द मोहन सहाय, सागर की लहरों और सागर के पार के देशों में, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की संघर्ष-गाथा लिख रहे थे, तब अंगप्रदेश के पहाड़ों, जंगलों, नदियों की छाती पर यहाँ के बाकी स्वतंत्रता सेनानी भी आजादी के संघर्षों का महान इतिहास रच रहे थे । इन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों में एक थे—पार्थ ब्रह्मचारी ।

अतीत की स्मृति से जुड़ा संगीत प्रभाव

वाचिका : पार्थ ब्रह्मचारी, यानी पिता वसन्त सिंह और माता कुन्ती देवी का वीर बेटा ।

वाचक : पार्थ ब्रह्मचारी, यानी सियाराम दल के महाप्राण ।

वाचिका : पार्थ ब्रह्मचारी, यानी भागलपुर के नौगछिया प्रमंडल स्थित बिहपुर में ७ जनवरी १८७१ में जन्मे पालेश्वर सिंह ।

हर वाक्यान्त पर वाद्ययंत्र पर हल्की ध्वनि

वाचक : हाँ, पार्थ ब्रह्मचारी के बचपन का नाम पालेश्वर सिंह ही था । पार्थ ब्रह्मचारी का नाम तो उन्हें वाराणसी के स्वामी परमहंस ने दिया था।

तरंगायित ध्वनि प्रभाव

वाचिका : १८१६ ई. में पालेश्वर सिंह घर की स्थिति से ऊब कर जब बनारस पहुँचे, तो वहीं स्वामी परमहंस के शिष्य बन गये । शिष्य ही नहीं बने, संस्कृत, न्याय, व्याकरण के महापंडित भी बन गये । ब्रह्मचारी रूप में यायावरी और धर्मोपदेश—पालेश्वर सिंह का यही जीवन बन गया था।

वाचक : कुन्तीपुत्र होने के कारण स्वामी जी ने इनका नाम रखा पार्थ, और तब पालेश्वर सिंह पार्थ ब्रह्मचारी बन गये । एक दिन पागल औघड़ के

नाम से विख्यात रामप्रसाद दास स्वामी परमहंस जी से मिलने आए, तो पार्थ ब्रह्मचारी को देखकर कहा,

अतीत को स्मृत कराता संगीत प्रभाव

एक स्वर : (गंभीर स्वर में) स्वामी जी, यह कैसा ब्रह्मचारी आपके साथ रह रहा है । यह ब्रह्मचारी तो बारह वर्ष बाद, अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह का भयानक प्रलय सिद्ध होगा ।

तरंगायित ध्वनि

वाचिका : पागल औघड़ की भविष्यवाणी सिद्ध हो गयी थी, और पार्थ ब्रह्मचारी अंग्रेजी सरकार का खूंखार विरोधी बन गये थे । वह बनारस से अंगप्रदेश लौट आये थे, और बिना रुके मुंगेर, बेगूसराय, खगड़िया और वर्तमान के बंगला देश में पहुँच कर उन्होंने भारतीय आजादी के विप्लव को ऊँचा उठाना शुरु कर दिया था ।

वाचक : तब अंग्रेज के विरोध का एक तरीका बन गया था—नमक कानून का विरोध । पार्थ ब्रह्मचारी ने नमक सत्याग्रह में भाग लिया, और जब बिहपुर के सुखदेव चौधरी, शिवधारी सिंह, चन्द्रदेव शर्मा अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ गिरफ्तार हो गये, तब अंगप्रदेश में भारतीय आजादी के लिए संगठित सशस्त्र क्रांतिदल का भार पार्थ ब्रह्मचारी के कंधे पर आ गया ।

वाचक : अब तक ब्रह्मचारी उत्तरी भागलपुर के सभी प्रमुख स्थलों पर व्यायाम केन्द्रों की स्थापना कर उन्हें सक्रिय कर चुके थे । उनका विश्वास था कि कमजोर कन्धा से न तो आजादी को हासिल किया जा सकता है, और न उन कंधों पर आजाद भारत का भविष्य ही स्थिर हो सकता है। इसीसे व्यायामशालाओं में तीर-धनुष, भाला, तलवार, लाठी के चलाने की कला से उन्होंने युवकों को प्रशिक्षित करना शुरू किया था।

वाचिका : जब सशस्त्र क्रांतिदल का भार ब्रह्मचारी जी के कंधे पर पड़ा, तो वे सभी प्रशिक्षित युवक ब्रह्मचारी के साथ हो गये । लगा; अंग्रेजी राज की नींव ही उखड़ जायेगी । नारे गूंज उठे; पटरियां उखड़ने लगीं; सरकारी कार्यालयों से आग की लपटें उठने लगीं ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : अंगप्रदेश में आजादी की क्रांति दरअस्ल सशस्त्र क्रांति का ही इतिहास है ।

वाचिका : अंग्रेज सैनिकों ने उत्तरी भागलपुर की इस सशस्त्र क्रांति को दबाने के लिए नौगछिया के राजेन्द्र आश्रम को अपने अधीन किया, इसके बदले में ब्रह्मचारी ने, अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ, अंग्रेज सैनिकों पर आक्रमण कर दिया । ब्रह्मचारी जी की देह में ऐसी फौलादी ताकत थी कि हाजत के मजबूत छड़ों और तालों को झटके से तोड़ना उनके लिए बहुत आसान था । उन्होंने राजेन्द्र आश्रम में लगे ताला को तोड़ डाला। दल आगे बढ़ा । उग्र अंग्रेजी सैनिकों की गोलियाँ गरज उठीं ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : मुंशी शाह अंग्रेजी गोलियों के शिकार हुए और शहीद हो गये । वह १३ अगस्त १९४२ की संध्या थी, जब मुंशी शाह ने राजकीय अस्पताल में अन्तिम साँस ली थी ।

करुण संगीत प्रभाव

वाचक : अपने मित्रों की मौत से क्रांतिकारियों का मन झुकने की जगह और भी विप्लवी बन गया था । नौगछिया रेलवे स्टेशन के निकट, अंग्रेजी सैनिकों के साथ हुए संघर्ष में, क्रांतिकारियों ने अंग्रेज सैनिकों से उनकी छः रायफलें छीन लीं । पुलिस के साथ संघर्ष में जो क्रांतिकारी शामिल थे, उनमें दीनानाथ मिश्र, अम्बिका सिंह व्यास, विन्देश्वरी कुँवर भी शामिल थे ।

वाचिका : रायफलें छिने जाने से अंग्रेजी पुलिस घबड़ाई, और यह सोचकर कि गोलियाँ भी अगर क्रांतिकारियों के हाथ लग गयीं, तो क्रांतिकारी भारी तबाही मचा सकते हैं, सैनिकों ने गोलियों को बाढ़ के पानी में बहा दिया । (पॉज) अगर वे गोलियाँ क्रांतिकारियों के हाथ लग गयी होतीं; तब क्या हुआ होता, यह सहज ही समझा जा सकता है ।

वाचक : रायफलें तो मिल गयी थीं, लेकिन गोलियों का अभाव क्रांतिकारियों को बेचैन कर रहा था । कि तभी एक आकस्मिक घटना घटी–

अन्तरिक्ष में हवाई जहाज की गड़गड़ाहट जो क्रमशः तीव्रतर;
फिर विस्फोट की ध्वनि

वाचिका : यह हवाई दुर्घटना उत्तरी भागलपुर के नारायणपुर के पसराहा ग्राम के निकट घटी थी । जिस दुर्घटना में क्रांतिकारियों को कई बोरों में भरी रायफल की गोलियाँ मिली थीं।

वाचक : बाढ़ का पानी उतरने पर जब दुर्घटनाग्रस्त जहाज को अंग्रेजी सैनिकों

द्वारा क्रेन से ऊपर उठाया गया, तो गोलियाँ नदारद थीं । गोलियाँ तो पार्थ ब्रह्मचारी के निर्देश पर क्रांतिकारियों ने, बक्से में बंद कर, नगरपाड़ा और जयरामपुर के गड्ढों में गाड़ दिया था।

वाचिका : गोलियाँ न पाकर अंग्रेजी फौज बौखला गयी । क्रांतिकारियों की खोज पैदल सैनिक भी कर रहे थे, और हवाई जहाज से उड़ते सैनिक भी। लेकिन क्रांतिकारी का पता भला कैसे लगता । वे तो बेगूसराय थाना में नारायणपुरवासी रीडर से गुप्त सूचना पा कर भूमिगत हो गये थे ।

वाचक : इसी समय पार्थ ब्रह्मचारी को जयप्रकाश जी का पत्र मिला । तब ब्रह्मचारी जी के साथ, सियाराम सिंह, सरदार नित्यानन्द सिंह, विन्देश्वरी सिंह, जैसे क्रांतिकारी भी थे । डॉ. के. के. दत्त ने बिहार के स्वाधीनता आन्दोलन में क्रांतिकारी पार्थ ब्रह्मचारी के लिए लिखा है–

ध्वनि प्रभाव

डॉ. के. के. दत्तः सियाराम सिंह को अपने दल में पार्थ ब्रह्मचारी एवं सरदार नित्यानन्द सिंह की भागीदारी से अस्त्रचालन के प्रशिक्षण में सुविधा हुई । ब्रह्मचारी को खगड़िया में शारीरिक प्रशिक्षक तथा नित्यानन्द सिंह को सेना में लान्स नायक की वजह से प्रशिक्षण प्राप्त था । विन्देश्वरी सिंह जो सिपाही थे, के आ जाने से सियाराम दल का काम सहज हो गया था। पार्थ ब्रह्मचारी इसके मुख्य कमाण्डर थे ।

मार्चिंग ध्वनि प्रभाव के साथ
समाप्ति संगीत

आरम्भिक संगीत और शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : अंगप्रदेश की जिस भूमि पर देव और दानव-वंश के लोगों ने, अपनी बुद्धि और बल के सहारे, अंग के वैभव को नया आलोक दिया; व्रात्यों के देव शिव और वैष्णवों के देवताओं ने जिस अंगभूमि को संकटों से बार-बार मुक्त किया; जिस भूमि के ऋष्यशृंग और कर्ण जैसे तपस्वी, वीर ने दशरथ की अयोध्या और अंग की भूमि को गौरवान्वित किया; जिस प्रदेश के तीर्थंकरों ने अहिंसा को उच्चासन दिया, और जिस प्रदेश में वीर तिलकामांझी ने जन्म लेकर शहादत का नया इतिहास रचा; जिसकी कीर्ति-कथा को लेकर आनन्द मोहन सहाय देश-विदेश में भटकते रहे—उस सबका इतिहास पूर्व के ग्यारह खण्डों ने कहा। धारावाहिक की यह बारहवीं कड़ी, देश की आजादी के लिए, अंगप्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों के बंद इतिहास का खुला पृष्ठ है, देश की आजादी के अमृत के लिए बलिदानियों का समरमंथन है—धारावाहिक की यह बारहवीं कड़ी ।

वाचक : गीता का उपदेश और समर का शंखनाद, एक साथ अंगप्रदेश में भैरवनाथ की तरह गूंज पड़े थे । अंग में जिस तरह विद्रोह का बादल गड़गड़ा उठा था, उसकी गूज ने गांधी को यहाँ तक खींच लाया । एक बार नहीं, क्रान्ति के उत्साह ने गाँधी को कई-कई बार यहाँ उतारा ।

वाचिका : १६ अक्टूबर १९१७ को जब गाँधी भागलपुर आये थे, तब उनका उद्देश्य बिहार छात्र-सम्मेलन का उद्घाटन भर नहीं था, बल्कि हिन्दी की रक्षा भी उनके आगमन के उद्देश्य में थी । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पुरुषोत्तम टण्डन, डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा, दीपनारायण सिंह की उपस्थिति में गांधी ने हिन्दी में ही छात्रों को अंग्रेजी सामानों के बहिष्कार के लिए आह्वान किया था ।

वाचक : १ अक्टूबर १९२५ में गाँधी ने अपना ५६वां जन्मदिवस भागलपुर के भीखनपुर स्थित शिवभवन में ही मनाया था, इसका उल्लेख पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश प्रेमशंकर सहाय ने सन् २००६ में प्रकाशित एक लेख में भी किया है । तब वह बिहार प्रदेश के

मारवाड़ी सम्मेलन को सम्बोधित करने आये थे ।

वाचिका : लेकिन १२ अक्टूबर १९३४ में जब अंगप्रदेश के क्रान्तिकारियों ने तत्कालीन भागलपुर के घोरघट में गांधी के हाथ में यहाँ की लाठी थमा दी, तो प्रकारान्तर से अंगप्रदेश के क्रान्तिकारियों ने यह भी बता दिया था कि देश की आजादी गीता के उपदेश पर नहीं, अस्त्र के सहारे ही संभव है ।

वाचक : उस समय सारा अंगप्रदेश मारो या मरो के तेज से उबल रहा था ।

आसपास घूमते बूटों की ध्वनि

अं. फौजी : (गुस्से में) सियाराम डल, सियाराम डल; आखिर यह सियाराम डल का मुखिया कहाँ रहटा हाय ? कहाँ रहटा हाय बरमाचारी, कहाँ रहटा हाय सियाराम और उसका साटी सब । कौन है यह सरडार निट्यानन्ड सिंह, विन्डेसरी सिंह । वह मुट्ठी भर हाय और टुम लोग हण्ड्रेड-हण्ड्रेड में, और अभी टक, न बरमाचारी गिरफ्टार हुआ, न सियाराम, न निट्यानन्ड सिंह, न विन्डेसरी सिंह। हम इसे बरडास्त नहीं कर सकटा।

(बूटों से जाने की ध्वनि)

सिपाही-१ : हुजूर, साहब गुस्से में गये हैं ।

पु. अफसर : (झुंझलाहट) तो हम क्या करें । क्या सियाराम दल के क्रांतिकारियों को पकड़ लेना आसान है ! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि २२, २३, २४ सितम्बर १९४२ को नेपाल में जिस सैनिक संगठन को तैयार किया गया है, उसमें सियाराम सिंह, रमेश झा के साथ पार्थ ब्रह्मचारी भी हैं।

बेचैनी से घूमना; बूटों की ध्वनि

पु. अफसर : यह ब्रह्मचारी कितना खूंखार है, क्या तुम्हें नहीं मालूम । यह आजादी के लिए हथियारों से लड़ना चाहता है । इसने गाँव के लोगों से सभी लाइसेन्सी बन्दूक, उसके दल के पास, जमा कर देने को कहा है । और लोगों ने, डर से ही सही, अपनी बन्दूकें ब्रह्मचारी के पास भिजवा दी हैं । सोच सकते हो, वह कैसा खतरनाक है ।

सिपाही : हमें मालूम हुआ है कि बिहपुर के नगरपाड़ा के अतिरिक्त मधेपुरा के खुरहान में भी इन क्रांतिकारियों ने अपना शिविर बनाया है ।

अफसर : मुझे भी मालूम है । और यह भी मालूम है कि खतरनाक क्रांतिकारी सुदीप नारायण सिंह उनलोगों को अपना साथ दे रहा है । और तुम क्या समझते हो, सरदार नित्या सिंह को पकड़ भी लें, तो क्या हम

सुरक्षित रह जाएंगे ! मुंगेर निवासी कमलेश्वरी सिंह का यह लड़का सेना में लान्स नायक रह चुका है, और अब ४२ की क्रांति से प्रभावित होकर ही सियाराम दल में शामिल हो गया है ।

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

वाचिका : हवलदार नित्यानन्द सिंह सियाराम दल का वह विश्वास था, जिसके सहारे दल कभी हारने की बात सोच ही नहीं सकता था । जब हनुमान नगर जेल से लोहिया और जयप्रकाश को निकालने की बात हुई, तो हवलदार नित्यानन्द ने ही गोरखा सैनिकों से संघर्ष करते उन्हें बाहर निकला था ।

वाचक : २३ वर्ष की उम्र में यह क्रांतिकारी हवलदार सोनवर्षा में सैनिक संघर्ष के दौरान शहीद हो गया ।

संगीत प्रभाव

वाचिका : सोनवर्षा में इस संघर्ष से क्रांति दबने की जगह और उभर आई । किसुनगंज थाना अन्तर्गत स्थित खुरहान के सुदीप नारायण सिंह के नेतृत्व में क्रांति ने उग्र रूप धारण किया, जिसमें खुरहान के ही पहलवान हलधर सिंह, अनूप लाल सिंह, अनिरुद्ध सिंह, हरिवल्लभ नारायण सिंह, पुनीत सिंह, तारिणी सिंह जैसे क्रांतिकारी शामिल थे । राजस्थान में मुगलों से लोहा लेने वाले ये चन्देलवंशी क्षत्रिय अब अंग्रेजी ताकत के विरुद्ध उठ खड़े हुए, जो राजस्थान से आकर खुरहान में बस गये थे

वाचक : सुदीप नारायण सिंह के कारण खुरहान—फरारी क्रांतिकारी का शिविर बन गया था, और इस शिविर को कमजोर करने के लिए अंग्रेज सैनिक यह समझते थे कि सुदीप को, जैसे भी हो, गिरफ्तार करना होगा । आखिर उनकी गिरफ्तारी के लिए एक योजना बनी ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

बैलगाड़ी की चर्र चूं और बैलों के गले की घंटियाँ उभरनी शुरू होती हैं, जो कथाकथन तक चल कर रुक जाती हैं

वाचिका : सुदीप नारायण सिंह की गिरफ्तारी के लिए एक बैलगाड़ी ठीक की गई। गाड़ी को कुछ इस तरह से सजाया गया कि टप्पर के अन्दर कोई दुल्हन बैठी हो । आगे में रंगी हाण्डी में सौगात रखी गयी थी और

गाड़ी खुरहान की ओर बढ़ी जा रही थी । लेकिन गाड़ी के टप्पर के अन्दर कोई दुल्हिन नहीं थी; छः फौजी छुपे बैठे थे । साथ में आलम नगर का दारोगा नन्दन चौधरी भी था ।

वाचक : दारोगा को गुप्त सूचना मिली थी कि सुदीप सिंह उस समय खुरहान में ही गुप्तवास कर रहे थे (बैलगाड़ी की आवाज के बीच गायों की आवाज)। ठीक गोधूली का वक्त था जब बैलगाड़ी खुरहान पहुँची, तब सुदीप नारायण सिंह अनिरुद्ध प्रसाद सिंह के घर के पास घूरा ताप रहे थे । (बैलगाड़ी की आवाज बंद) बैलगाड़ी रुकी और दारोगा ने आगे बढ़ कर पूछा ।

कूदने की आवाज

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

दारोगा : क्या आप बता सकते हैं कि यहाँ सुदीप नारायण सिंह कहाँ पर रहते हैं ?

सुदीप : मैं ही सुदीप नारायण हूँ, बताइए, क्या काम है ?

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

वाचिका : इतना सुनना था कि दारोगा ने सुदीप नारायण सिंह को गिरफ्तार कर लिया । बैलगाड़ी से सभी मिलिट्री जवान बाहर कूद पड़े, और इस तरह उनकी नाटकीय गिरफ्तारी हो गयी । कड़ी सावधानी के बीच उन्हें मधेपुरा लाया गया, और २३ जनवरी १९४५ को उन्हें मधेपुरा जेल में नजरबन्द कर दिया गया ।

वाचक : सुदीप नारायण सिंह को जेल के फाटक तक लाना था कि पूरा जेल, सुदीप सिंह के समर्थन में, नारों से गूंज उठा

जयजयकार के नारे

उस समय मधेपुरा जेल क्रांतिकारियों से भरा पड़ा था । भुवनेश्वर ठाकुर, गौरीशंकर खां, कार्तिक प्रसाद सिंह, कुशेश्वर खां, उमेश झा, सूर्य नारायण झा जैसे क्रांतिकारी मधेपुरा जेल में ही बंद थे । अब सुदीप नारायण सिंह भी उनके साथ थे । आजादी तो मिल के रहेगी—इस विश्वास से उन क्रांतिकारियों का हौसला आकाश तक चढ़ा हुआ था, और जब १९४५ की २६ जनवरी आई, तो मधेपुरा जेल के क्रांतिकारियों ने एक धोती फाड़ी; उसे रंगाया; फिर जेल के वार्ड पर तिरंगे के रूप में फहरा दिया । पूरा जेल परिसर 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्' के नारों से गूंज उठा

नारा (फेड इन-फेड आउट)

वाचिका : जेल दहला । मिलिट्री दहली । और इस नारे से अंग्रेजी सरकार का बचा-खुचा विश्वास तक दहल गया ।

वाचक : स्वतंत्रता-संग्राम के काल में अंगप्रदेश की सरफरोशी की तमन्ना, निस्संदेह किसी भी महान क्रांति को गौरवान्वित करने वाली है ।

वाचिका : जिस तरह उत्तरी भागलपुर सियाराम दल के क्रांतिकारियों का गढ़ था, उसी तरह दक्षिणी भागलपुर—परशुरामी दल का अभेद्य गढ़ । परशुरामी-दल, यानी भारत में अंग्रेजी सरकार के लिए खोदी गई गहरी कब्र । इस सशस्त्र क्रांति के पीछे अवश्य ही अनुशीलन समिति का भी प्रभाव था।

संगीत प्रभाव

वाचक : १९०२ ई. में कलकत्ता अनुशीलन समिति की नींव पड़ी, जो क्रांतिकारियों का गुप्त संगठन था । इसीके तर्ज पर ढाका अनुशीलन समिति का भी गठन हुआ, इस ढाका अनुशीलन समिति का बिहार में मुख्य कार्यालय भागलपुर में ही बना, जिसके संचालन का मुख्य भार भागलपुर के नाथनगर स्थित पुरानी सराय मुहल्ले के रास बिहारी लाल पर था ।

वाचिका : अनुशीलन समिति, यानी सशस्त्र क्रांति में विश्वास रखने वाला संगठन, अस्त्रों की प्राप्ति के लिए डकैती तक को न्यायसंगत स्वीकारने वाला संगठन । अंगप्रदेश में यह अनुशीलन समिति भागलपुर के अतिरिक्त, मुंगेर और पूर्णिया में भी सक्रिय थी ।

वाचक : भागलपुर की इस समिति को सक्रिय करने के लिए बनारस षड़यंत्र के मशहूर नायक प्रियनाथ भट्टाचार्य को भागलपुर भेजा गया था । इसके पहले, जब १९१५ ई. में भागलपुर में अनुशीलन समिति का गठन हुआ था, तब फणिभूषण भट्टाचार्य के बाद रेवती मोहन नाग को भागलपुर भेजा गया था । रेवती मोहन ने तेजनारायण बनैली कॉलेज में दाखिला लिया था, और कॉलेज के विद्यार्थियों में क्रांतिकारी चेतना को भरना शुरु किया था ।

वाचिका : प्रियनाथ भट्टाचार्य के बाद मुर्शिदाबाद और वीरभूम के कई क्रांतिकारी भागलपुर आये, जिनमें नलिनी बागची और अनाथबंधु घोष प्रमुख थे। दोनों ने ही तेजनारायण बनैली कॉलेज में दाखिला लिया था, और छात्रों को अनुशीलन समिति से जोड़ रहे थे ।

वाचक : भागलपुर में अनुशीलन समिति की बैठक, गंगा के किनारे, बूढ़ानाथ मंदिर में होती, जहाँ रेवती और अन्य सहयोगी विद्यार्थियों को अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण देते । उस समय रास बिहारी लाल टी. एन. बी. कॉलेज में आई. एस. सी के छात्र थे ।

वाचिका : तभी १९१६ ई. में, बंगाल के खुफिया विभाग का एक अधिकारी रेवती की खोज में भागलपुर पहुँचा । यह देख, रेवती और अनाथबंधु घोष भूमिगत हो गये, लेकिन ढाका अनुशीलन समिति में मिली डायरी के आधार पर लाल बिहारी लाल को गिरफ्तार कर लिया गया, और उनको, उनके ही पुरानी सराय वाले मकान में नजरबन्द कर दिया गया ।

वाचक : रास बिहारी लाल का गिरफ्तार होना था कि चुनचुन प्रसाद पाण्डेय के साथ चक्रधर पाण्डेय भी गिरफ्तार कर लिये गये । फिर तो अंगप्रदेश में एक-एक कर अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी गिरफ्तार होते चले गये ।

वाचिका : गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं, तो शेखपुरा मुंगेर के मशहूर क्रांतिकारी केशव प्रसाद सिन्हा भी गिरफ्तार कर लिए गये, जिनकी १९३३ के गया षड़यंत्र-काण्ड में अग्रणी भूमिका थी । १९२९ ई. में जिस गया युवक संघ की स्थापना हुई थी, और जिसका संबंध चन्द्रशेखर आजाद के हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से भी था, उसी गया युवक-संघ के नेता थे, केशव प्रसाद सिन्हा ।

वाचिका : गया षड़यंत्र-कांड के सिलसिले में १२ सितम्बर १९३३ को न्यायालय ने अपना फैसला सुनाया था—केशव प्रसाद सिन्हा को सात साल का कठोर कारावास, और न्यायालय के फैसले पर ही केशव प्रसाद के साथ श्यामाचरण बरथहार भी अप्रैल १९३४ को अण्डमान में नजरबन्द कर दिए गये । वह क्षण भी अजीब था, जब केशव प्रसाद के विरुद्ध फैसला सुनाया जा रहा था, और केशव प्रसाद के साथ सभी क्रांतिकारी एक ही नारा लगा रहे हैं

संगीत प्रभाव

क्रांति अमर रहे ! क्रांति अमर रहे ।।

संगीत ध्वनि प्रभाव

वाचक : सचमुच में तमाम गिरफ्तारियों के बावजूद क्रांति अमर थी, क्योंकि परशुरामी दल का परशुराम, यानी सम्राट महेन्द्र गोप अंग्रेजी सत्ता का

काल बना हुआ था । बलिदानियों के दल का सम्राट था—महेन्द्र गोप। उसके साथ क्रांतिकारियों का एक मण्डल घूमा करता था जिनमें जेठौर जमुआ के प्रद्युम्न सिंह; भितिया खेसर के शीलधर सिंह; रामपुर के नौमी पैरघो; सबलपुर के लड्डू सिंह, जयनन्दन सिंह, कृष्ण सिंह; शाहपुर के जगदीश सिंह; फागा के भुवनेश्वर मिश्र,

वाचिका : बौंसी के फूलो सिंह, नीलमणि सिंह; इटहरी बांध के गुलाबी बैठा; इटहरी गाँव के अधिक राय, शिवनारायण सिंह; दुधारी के जोगेसर बैठा; भीमसेन बांध के बेरासी यादव; कचनसार बौंसी के जागो शाही, लक्खी शाही, रामेश्वर शाही, पागो शाही, दुर्गा शाही, हरिहर शाही, रामोतार शाही; भदरिया के राधेश्याम पाठक; मिर्जापुर के गजाधर यादव, तारणी यादव जैसे क्रांतिकारी उस महामंडल के दीपते नक्षत्र थे।

वाचक : इन्हीं नक्षत्रों में एक नक्षत्र थे, श्रीगोप, जो १९४६ के मार्च में, ककबारा स्थित कोझी पहाड़ पर अंग्रेजी सैनिक की गोलियों के शिकार बने ।

वाचिका : लेकिन सम्राट महेन्द्रगोप अभी भी अंग्रेजों की आँखों को चकमा देता अंग्रेजों के लिए भयानक मुसीबत बना हुआ था । महेन्द्र गोप अपनी घोड़ी पर कभी भी सीधे नहीं बैठता, उलटी दिशा में बैठ कर अंग्रेजी फौज की गोलियों का जवाब गोलियों से देता था । ऐसा ही था वह क्रांतिपुत्र।

वाचक : साढ़े छः फीट की ऊँची कद और ३६ इंच की छाती वाला महेन्द्र गोप, बीस फीट की ऊँचाई को बिना किसी कठिनाई के फाँद जाता । (पॉज) अंग्रेजी सरकार की नींद उड़ा देने वाला यह क्रांतिकारी जब सुइया के घने जंगल के बीच एक आदिवासी के घर, १०४ डिग्री के ज्वर से पीड़ित, आराम कर रहा था, तभी राधे नाम के एक मुखबिर ने इसकी सूचना पुलिस को दे दी, और सम्राट महेन्द्र गोप चारो ओर से घेर लिए गया।

वाचिका : गिरफ्तार महेन्द्र गोप को १९४४ के अक्टूबर में, पूछताछ के लिए भागलपुर स्थित नाथनगर के कर्णगढ़ पर लाया गया, और वहीं से फिर भागलपुर सेन्ट्रल जेल पहुँचा दिया गया ।

उदास संगीत की गूंज

फिर २४ फरवरी १९४५ को पटना से प्रकाशित दैनिक आर्यावर्त में यह खबर प्रकाशित हुई कि

संयोजकस्वर : २२ फरवरी, भागलपुर के दौरा जज श्री रामस्वामी आई. पी. एस. ने सम्राट महेन्द्र गोप तथा तीन अभियुक्तों के मुकदमे का फैसला आज सुना दिया । महेन्द्र गोप को फांसी तथा भुवनेश्वर मिश्र, ध्रुवराज शाही और केसर महतो नामक तीन अभियुक्तों को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : १५ जुलाई १९४४ को भागलपुर के केन्द्रीय कारा में पहले तो जागो शाही और लक्खी शाही को फाँसी पड़ी, फिर १३ नवम्बर १९४५ को सम्राट महेन्द्र गोप को भी फाँसी पर लटका दिया गया । उसके क्रांतिकारी साथियों ने सब कुछ देखा था कि किस तरह अंगप्रदेश में १९४२ की क्रांति का इतिहास फाँसी के फंदे पर मुस्कुरा रहा था ।

वाचिका : शहीद होने का उत्सव, अंगप्रदेश के सिर्फ दक्षिण में ही नहीं, उत्तर में भी वैसा ही ओज पर था । सहरसा के शहीद धीरो राय, पुलकित कामत, हरिकान्त झा, कालेश्वर मण्डल, भोला ठाकुर, केदारनाथ तिवारी और सुपोल के शहीद बच्चा मण्डल, चुल्हाई यादव, बाजा साह के बलिदान की कहानियाँ कोशी की माटी में ही नहीं; कोशी के शोर में भी समाई हुई हैं ।

वाचक : इतिहास सिर्फ किताबों के पन्नों पर ही नहीं लिखा होता, और न ताम्रपत्र या शिलापट्ट पर ही, वह कई बार हवाओं और नदी के जल और रेत पर भी लिखा जाता है, जिसे काल पढ़ता और सुनता है । तभी तो बौंसी का मंदार और लक्ष्मीपुर की पहाड़ियाँ बहुत कुछ बोलती हैं, सियाराम दल के बारे में; बहुत कुछ बोलता है—देवघर का तियूर पर्वत।

वाचिका : हाँ तियूर पर्वत बोलता है—उन वीर सिपाहियों का राष्ट्रप्रेम, जिसे अंग्रेजों ने सिपाही विद्रोह कहकर नजरअन्दाज करना चाहा था ।

अतीत बोधक संगीत प्रभाव

वाचक : बात सन् १८५७ ई. की है । तत्कालीन भागलपुर प्रमंडल के देवघर का

रोहिणी गाँव । इसी गाँव में सिपाहियों का अंग्रेजों के प्रति विद्रोह फूट पड़ा था । तब रोहिणी अश्वारोही फौज का प्रधान केन्द्र होता था । साथ में पैदल सिपाहियों का भी मुख्य केन्द्र ।

उत्तेजित संगीत धीरे-धीरे प्रबल

वाचिका : १२ जून १८५७ की बात है । मिस्टर लेसली और मिस्टर ग्राण्ट, मेजर मेकडोनाल्ड के मकान के बाहर, बैठे बातचीत कर रहे थे, कि तभी अश्वारोही सेना के तीन सैनिकों ने उन अंग्रेज अफसरों पर हमला बोल दिया । भागते-भागते मेकडोनाल्ड और ग्राण्ट तलवार की चोट से लहूलुहान हो गये । लेसली भी बुरी तरह घायल हुआ ।

वाचक : खबर सुनते ही ३७वीं रेजीमेण्ट के नायक लेफ्टीनेन्ट कुपर ने पचास सैनिकों के साथ घटनास्थल को घेर लिया, और १६ जून १८५७ को कोर्ट मार्शल कर उन राष्ट्रभक्त सिपाहियों को फाँसी पर लटकवा दिया गया।

वाचिका : तियूर पर्वत पर बहती हवाओं और मयूराक्षी नदी की लहरों पर उन शहीदों की राष्ट्रभक्ति आज भी तैरती है ।

तरंगायित संगीत प्रभाव

वाचक : जैसा कि तारापुर की ढोल पहाड़ी की बहती हवाओं पर दर्जनों शहीदों की कहानियाँ तैरती हैं । (अतीत की स्मृति में खोया स्वर) वह १५ फरवरी १९३२ ई. का दिन था ।

दृश्य परिवर्त्तन ध्वनि

राष्ट्रभक्त क्रांतिकारियों का नारा । अश्वारोही फौज का ध्वनि प्रभाव । रह-रह कर गोलियाँ छूटने की आवाजों के साथ 'भारत माता की जय' के स्वर, जो संवादों के पीछे क्रमशः धीरे-धीरे चलते हुए समाप्त ।

संगीत-प्रभाव

वाचिका : तारापुर के थाना भवन पर तिरंगा फहराने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों का सैलाब । **(ध्वनि प्रभाव फिर से तेज होता है)** तारापुर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध बागी हो उठा था । विप्लव का ज्वार गरज उठा था, और उस विप्लव को रोकने के लिए अंग्रेजी फौज की गोलियाँ, क्रांतिकारी राष्ट्रभक्तों के सीने में उतरती जा रही थीं । शहीदों का स्तूप खड़ा हो गया था।

वाचक : (गीले स्वर में) कौन खोजता कि शहीदों की बिछी लाशों में छतहार के विश्वनाथ सिंह; रमचुआ के महिपाल सिंह; असरगंज के शीतल चमार; तारापुर के शुकुल सोनार; संता पासी और सतखरिया के झोंटी झा के निष्पंद शरीर कहाँ पर दबे हुए थे।

वाचिका : (अतीत को याद करता स्वर) कौन खोजता कि विहगा के सिंहेसर राजहंस; धनपुरा के बदरी मंडल; लोड़िया के वसन्त धानुक; पढ़भाग के रामेश्वर मंडल; महेशपुर के गैनी सिंह के रक्त से लथपथ शरीर कहाँ गिरे पड़े थे ।

वाचक : और कहाँ गिरे थे कसटिकरी के असर्फी मंडल; घोरगाँव के चंडी महतो के साथ अज्ञात उन शहीदों के बेजान हुए शरीर, जो दर्जनों में थे । आज भी उस ढोल पहाड़ी के ऊपर खड़े हो जाएँ, तो निहत्थे राष्ट्रभक्तों पर घुड़सवार फौजों द्वारा की गई गोलियों की बारिश, और उस बारिश के बीच मातृभूमि का नारा लगाते उन राष्ट्रभक्तों का उबलता विद्रोह घोर सन्नाटे के बीच सुनाई देगा ।

पूर्व ध्वनि प्रभाव (फेड इन)

वाचिका : अजीब थे वे राष्ट्रभक्त । सचमुच में अजीब थे सुपौल जमुआ के मदन गोपाल सिंह, त्रिपुरारी सिंह, महेशपुर के महावीर सिंह; पसराही के परमानन्द झा, और धनकी के कार्तिक मण्डल, जो गोलियों से घायल होने के बावजूद, तारापुर के थाना भवन पर तिरंगा फहरा के ही रहे। भारतीय आजादी के लिए, अपने रक्त से अंगप्रदेश ने, शहादत के जिस अप्रतिम इतिहास को लिखा है, वह भारत के जाग्रत पुरुषार्थ का ही भैरवनाद है ।

तीव्र संगीत ध्वनि (फेड आउट)

समाप्ति संगीत

आरिम्भक संगीत/शीर्षक संगीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : अंगप्रदेश का अमृत मंथन; यह अमृत मंथन अंगप्रदेश ने केवल सतयुग के समापन काल में ही नहीं किया, बल्कि त्रेता, द्वापर के समापन कालों में भी किया । कभी व्रात्य चिंतन के रूप में, कभी वैदिक, औपनिषदिक चिन्ताओं को लेकर, कभी हिंसा-अहिंसा को लेकर, तो कभी भौतिक-अभौतिक सुखों को लेकर ही इस अंगप्रदेश ने अमृत मंथन किया है । इस भूमि पर हुए देवकालीन समुद्र मंथन से लेकर विश्वविख्यात विक्रमशिला बौद्ध विहार की ख्याति तक का इतिहास, इसी अमृत मंथन की यात्रा है । लेकिन इस मंथन में हलाहल भी हाथ लगा । यह हलाहल है –वर्त्तमान में अपने प्राकृतिक वैभव–नदियों, पहाड़ों, झीलों, जंगलों से अंगप्रदेश के लोगों का हठात ही उदासीन हो जाना, जो प्राकृतिक वैभव अंगप्रदेश को, पृथ्वी के आरंभ से ही, अमृत के विशाल कुम्भ की तरह मिला है ।

वाचिका : अंगप्रदेश यानी प्रकृति की लीला भूमि; जैसे, प्रकृति की सारी शोभा को अपनी गोद में समेटे, पाताल फोड़ कर, कोई विशाल भूखंड बाहर निकल आया हो । अंगप्रदेश यानी पहाड़ों का देश; नदियों का देश; जंगलों का देश ।

वाचक : मानभूम, वीरभूम और काँकजोल का फैला पर्वतीय प्रदेश अनादिकाल से अंग जंगलों, झीलों-नदियों, पहाड़ों-पठारों का ही तो प्रदेश रहा है।

वाचिका : सभी पहाड़ों, पहाड़ियों के नाम नहीं मिलते, क्योंकि ये तो गाँव-गाँव में पसरे हुए हैं । नाम तो उन पहाड़ों के ही हैं, जिनसे फूटती है–बड़ी-बड़ी लम्बी नदियाँ । देवघर के अंचल में बसा तियूर, यानी त्रिकूट पर्वत, ऐसा ही एक पर्वत है । इसी त्रिकूट नदी से निकलती है, मयूर की आँखों-सी सुन्दर नदी, मयूराक्षी ।

पर्वत से गिरती नदी की ध्वनि

वाचक : सकरी, धोबही, भुरभुरी, टिपरा, बमरी, चन्दना, सिंघेसरी जैसी पहाड़ी नदियों का जल समेट कर जब मयूराक्षी मसानजोर के निकट बंगाल में जाने के लिए तैयार होती है, तो सृष्टि की सुषमा जैसे उसके स्वागत में आ उतरती है ।

नदी की लहरों की तेज ध्वनि
फिर मद्धिम होकर अतिमद्धिम

वाचिका : मयूराक्षी-सी ही संताल परगना की एक और नदी है, जिसका नाम है—गुमानो । सुन्दर पहाड़ी अंचल से फूटने वाली यह सुन्दर नदी, अपने मार्ग में कुरकुरी, लोहरी कुन्दी, सूरी, नारी, मोरम, गोड़धावा, डकई जैसी पहाड़ी नदियों को समेटते, जब भगनाडीह गाँव पहुँचती है, तो यहाँ कुछ पल के लिए रूक कर, अपनी लहरों से गुमानो १८५५ ई. की एक कहानी कहती है

तरंगायित ध्वनि प्रभाव

प्रतिध्वनित स्वरः भगनाडीह—एक गाँव नहीं, इतिहास का एक शिलालेख है । इसी गाँव के थे—सीदो, कान्हू, चाँद और भैरव, जिन्होंने १८५५ ई. में दस हजार संतालों की सेना संगठित की थी, जो सेना, सीदो के आह्वान पर ३० जून १८५५ को तीर-धनुष, गड़ासा, भाले लेकर विद्रोह के लिए इकट्ठी हो गयी थी । उस सभा में सिद्धों राजा घोषित हुआ था; कान्हू मंत्री; चाँदो को न्यायाधिपति बनाया गया था, और भैरव को सेनाध्यक्ष । (पॉज) सीदो और कान्हू की सवारी पालकी निश्चित हुई थी और चाँदो भैरो की सवारी बने, घोड़े । संतालों का वह विद्रोह इतना भयावह था कि विवश होकर संताल परगना को भागलपुर से काट कर एक अलग जिला बनाना पड़ा—संताल परगना ।

नदी प्रवाह तीव्र (फेड आउट)

वाचक : और गुमानो, भगनाडीह का यह इतिहास सुनाने के बाद तेजी से आगे बढ़ती है, बमरी नदी के जल को अपने में लेती है, और दूर तक सीद्दो, कान्हो की कहानी ही कहती हुई बड़हरवा तक पहुँचती है; फिर यात्रा की सारी थकान दूरकर लेने के लिए संताल परगना के पूर्वी भाग में प्रवाहित होती गंगा में लीन हो जाती है ।

नदी का ध्वनि-प्रवाह तीव्र (फेड आउट)

वाचिका : बंगाल की भूमि को उर्वर करने वाली कई नदियाँ अंगप्रदेश की दक्षिण भाग से ही निकलने वाली नदियाँ हैं, वह चाहे मयूराक्षी हो या तोरई या कि फिर बंसलोई नदी ।

वाचक : ब्राह्मणी भी बंगाल को ही उर्वर करती है, जिसकी जन्मभूमि भी दुमका और रामगढ़ की सीमा-भूमि दुधुआ पहाड़ी ही है ।

वाचिका : अंगप्रदेश की समृद्धि का कारण इसकी छाती पर बसे पर्वतों की

बस्तियाँ ही हैं, जो पर्वत—नदियों के घर हैं । कहीं एक पर्वत एक नदी का घर, और कभी एक पर्वत, जैसे—नदियों का संयुक्त परिवार। मुंगेर जिला का चकाय थाना वह पहाड़ी प्रदेश है, जहाँ सें एक साथ किऊल, चिलका, चानन, बड्डुआ, दरुआ, बरनर, सुखबर, उलई, डँडवा और पथरी नदियां निकल कर आठो दिशाओं में कलकलाती हुई प्रवाहित होती हैं । इसमें अजय भी एक ऐसी नदी है, जो ७७ मील की लम्बी यात्रा करती है, और तब कहीं बंगाल की भागीरथी में प्रवेश कर जाती है ।

धारा-प्रवाह-ध्वनि

वाचक : कुछ को छोड़कर बाकी सभी नदियां, अंगप्रदेश के उत्तरी-दक्षिण अंचलों से निकलकर अंगप्रदेश की गंगा में ही अपनी यात्राएं खत्म करती हैं; चाहे दक्षिण में गंगा-सी बहती चानन नदी हो या उत्तर में गंगा के समान पवित्र कोशी नदी । और चानन तथा कोशी के बीच प्रवाहित होती रहती है—देवनदी गंगा ।

जलप्रवाह-ध्वनि (फेड आउट) मल्लाह गीत

वाचिका : अंगप्रदेश, गंगा के पुनर्जन्म की भूमि है, इसीसे गंगा का नैहर भी है—अंगप्रदेश । धरती पर उतरने के बाद जब गंगा अंगदेश पहुँची, तो भूल गई कि मार्ग में जह्नु ऋषि का भी आश्रम है । उजाड़ते-पुजाड़ते आगे बढ़ गई । (वेगवती धारा की ध्वनि) क्रोध में आकर ऋषि ने गंगा को पी लिया, फिर अनुनय-निवेदन पर गंगा को उदर से बाहर भी कर दिया। तब गंगा का नाम पड़ा, जाह्नवी। जह्नु की पुत्री, जाह्नवी।

वाचिका : आज का सुल्तानगंज यानी पूर्व का गंगाधाम—यही था ऋषि जह्नु का आश्रम । सावन-भादो के आते ही पूरा अंगप्रदेश उमड़ पड़ता है—सुलतानगंज के जाह्नवी तट पर।

वाचक : बोल बम के पवित्र नारों से गूंज उठता है पूरा अंगप्रदेश ।

नारे/गीत (फेड इन-फेड आउट)

तब उत्तर और दक्षिण का भेद मिट जाता है । सभी राजनीतिक सीमाएँ टूट जाती हैं, और बच जाता है सिर्फ अंगप्रदेश । कमरथुआ गीत में धड़कता अंगप्रदेश !

वाचक : लाखों कमरथुओं का यह महाकुंभ भी अपने हृदय में एक पौराणिक कथा समेटे हुआ है । गंगा के बीच खड़ी अजगैवी पहाड़ी कभी गंगा के तट पर ही स्थित थी, जो अगस्त्य ऋषि का आश्रम थी, तब इस पहाड़ी

का नाम सोमद्वीप था । इसी सोमद्वीप पर अगस्त्य ऋषि के साथ सोम ने भी शिव की अखंड पूजा-अर्ची की थी, और शिव ने प्रसन्न होकर चन्द्रमा को अपने मस्तक पर धारण कर लिया था ।

वाचिका : नारदीय पुराण के अनुसार अजगैवीनाथ की पहाड़ी ही कलशतीर्थ है, जिसे अपनी धारा से छू कर गंगा काशी की गंगा के समान पवित्र और पुण्यवती है ।

गीत : (कमरथुआ हो भाय)

वाचिका : अंगदेश में पुनर्जन्म पाकर गंगा अंगप्रदेश के लिए वरदान बन गयी है। चम्पा की सभ्यता बसी, तो इसी गंगा के किनारे । ईसा पूर्व भारत के आन्तरिक पोतपत्तनों में विख्यात था—चंपा का पोतपत्तन । बड़े-बड़े जहाजों का विश्रामगृह । गंगा ने चम्पा को समृद्धि दी और विश्व के कोने-कोने में चम्पा को पहुँचा दिया ।

वाचक : चंपा की गंगा के साथ-साथ बहुत सी कहानियाँ बहती हैं, इसके साथ। इन्हीं कहानियों में एक है बाला-विषहरी की कथा। बिहुला अपने मृत पति बाला को मंजूषा में लिए इसी गंगा के सहारे-सहारे स्वर्गलोक पहुँची थी और इसी गंगा के सहारे फिर अपनी ससुराल भी लौटी थी।

बिहुला गीत

वाचिका : इसी चंपा की गंगा में छाती भर धँस कर अंगनरेश कर्ण सूर्य की संध्या-पूजन करता था। अंगप्रदेश में छट पूजा की प्रथा, उसी सन्ध्या पूजन से जुड़ी हुई है ।

छठ गीत

वाचक : अंगप्रदेश की चम्पा की गंगा ! जाने कितनी-कितनी कहानियाँ यहाँ की गंगा की लहरों पर मचलती हैं, कुछ इतिहास की कहानियाँ, और कुछ पुराण की ।

वाचिका : सम्राट अशोक की माँ सुभद्रांगी इसी चम्पा की बेटी थी । और इस तरह राजकुमार महेन्द्र और संघमित्रा का ननिहाल रही है, चम्पा ।

संगीत प्रभाव

वाचक : चम्पा में प्रस्तर से निर्मित चार गोपुर द्वार थे, जो वर्षों से बन्द थे । सुभद्रा नाम की एक सती स्त्री ने, कुएँ से चलनी में पानी भर-भर कर, तीन द्वारों को सींच-सींच कर खोल दिया था । चौथा नहीं खोला, तो वह कभी नहीं खुला ।

क्षणिक संगीत प्रभाव

वाचिक : चम्पा की गंगा का किनारा, यानी १२ वें तीर्थंकर भगवान वासूपूज्य की जन्म और निर्वाण की भूमि ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : जैन ग्रंथों, पुराणों में चंपा के झूमते वृक्षों का जो काव्यात्मक वर्णन है, वह अंगप्रदेश के जंगलों, वनों के वैभव को प्रकट करता है ।

संगीत ध्वनि प्रभाव

वाचिका : अब ऐसे घने जंगल अंगप्रदेश में शायद ही कहीं दिखे । जो जंगल बचे हैं, वे जंगलों की ध्वंशकथा की तरह बच गये हैं ।

वाचक : अंगप्रदेश के भूगोल को ही नहीं; इसके जंगलों, इसके पहाड़ों को भी उसी तरह काटा गया है । अब नहीं दिखते—ऊँचे-ऊँचे पहाड़ । जो शेष बचे हैं, उनकी देह जगह-जगह से काटी गई है । यहाँ तक की कहौल गाँव की कासड़ी पहाड़ तक को काटा गया है, जिस पहाड़ी पर उगी दुर्वा का आहार कर, दुर्वासा दुर्वासा हो गये थे । जमालपुर के पहाड़ को भी नहीं छोड़ा गया, जो ऋषि विभाण्डक का साधनाश्रम रहा। कटते पहाड़ों के साथ इतिहास और संस्कृति कट कर गिर रहे हैं।

वाचिका : और उन पहाड़ों की रक्षा करते वृक्षों को, जड़ से गिराया गया है । अब जंगलों की छातियां कटे वृक्षों के रोओं से भरी हैं, पहाड़ों के सर नंगे हैं। कभी, उन्हीं पहाड़ों पर पावस का पानी जमा रहता था, और महिनों वहाँ से निकल-निकल कर जलस्रोत, मीलों-मील भूमि को पत्थर होने से बचाए रखता था ! अब जमीन मीलों-मील तक बंजर है, पर्वत ही क्षत-विक्षत हैं, तो पानी कहाँ से उतरेगा !

उदास संगीत का उभार

वाचक नदियां : बहती हुई नदियों को बाँधों से रोकने की कोशिश हो रही है, और

हैं कि बंधना नहीं चाहतीं बाँधों को तोड़ कर बहना चाहती हैं । तब पहाड़ और घने जंगल, नदियों के प्रवाह को मीलों तक साथ चलकर रोकते थे, तो नदियाँ मानती भी थीं। अब पहाड़ बच भी गये हैं, तो जंगल नहीं रहे । नदियाँ सरसराती हुई उतरती हैं; बाँधों को, तटों को तोड़ती सैकड़ो गाँवों में घुस जाती हैं, और छा जाता है पृथ्वी पर का जलप्रलय ।

(जलप्रवाह का शोर)

वाचक : २००८ के अठारह अगस्त का वह महाप्रलय (बाढ़ का शोर उग्र), जब

कोशी ने अपनी लीक छोड़कर एक सौ बीस किलोमीटर पूरब की ओर अपना मुंह कर लिया । तीन लाख से अधिक बसेरा, खेत-खलिहान, गाँव कस्बा सब डूब गये (जलसंघात ध्वनि)

वाचिका : आखिर, क्यों हो गयी हैं अंगप्रदेश की नदियाँ इतनी उग्र ? कहीं हम कोशी को फिर तो नहीं सताने लगे हैं ।

वाचक : लोककथा है—कोशी अपने नैहर में बहुत सुख से थी, जब ब्याह हुआ, तो कुछ ही दिनों बाद मैनावती और सुग्गावती ने कोशी को सताना शुरू किया ।

वाचिका : मैनावती और सुग्गावती कोशी की ननदें थीं। दोनों ननदों का खिलाफ होना था कि खूब लाड़-प्यार देने वाली सास भी उग्रचण्डा हो गयी । अब तो कोशी का ससुराल में रहना मुश्किल हो गया । कोशी को उसके पिता, माँ, बहन, भाई के नाम से गालियाँ पड़ने लगी थीं ।

वाचक : कोशी का धैर्य टूट गया । वह सब कुछ सह सकती थी, लेकिन माँ, बाप, भाई के लिए सास और ननदों की गालियाँ नहीं सुन सकती थी । और एक दिन वह रातो रात अपने नैहर को भाग चली ।

वाचिका : जब ननदों को इस बात की खबर लगी, तो भागती कोशी पर काले जादू का प्रहार किया ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : कोशी, उस अंधेरी रात में, और भी भयानक वेग से भाग चली ।

जलप्रवाह का शोर

वाचिका : जब सास को मालूम हुआ, तो वह भी कोशी को छेकने के लिए प्रचण्ड वेग से दौड़ी। कोशी पर तूफान और आँधी का प्रहार किया ।

ध्वनि प्रवाह

वाचक : कोशी और भी वेग से नैहर की ओर भागी

जल प्रवाह ध्वनि

वाचिका : रास्ते में कोशी ने अपने नैहर के एक-एक आदमी को पुकारा, अपने प्राणों की रक्षा के लिए । लेकिन न माँ आई, न पिता, न भाई, न कोई ओर सगा संबंधी ही । ब्याही गयी बेटी के लिए तो ससुराल ही सब कुछ था, ससुराल उसे जैसे रखे, रखे ।

वाचक : हाँ दूर की एक बहन थी, धेमुरा; वह आई और अंधेरे में भागती हुई कोशी के आगे में एक दीया जला दिया । कोशी रुक गई, तो धेमुरा ने कहा;

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

धेमुरा : (हतास स्वर में) बहन, तुम यह क्या कर रही हो ! जरा तुम घूम कर तो देखो, तुम्हारे इस तरह आँधी की तरह भागते जाने से हजारो बस्तियों की पहचान ही खत्म हो गयी है । गाँव-के गाँव रेत हो गये।

कोशी : (दुखित स्वर) धेमुरा, मेरी बहन, मेरे लिए अब संसार में है ही कौन ? न ससुराल में, न नैहर में । लेकिन तुमने मुझे इस अंधेरी रात में दीये की रौशनी दिखाई है, तो मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि अब जहाँ-जहाँ रुकूँगी, ठहरूँगी, वहाँ हरियाली होगी, जीवन होगा ।

दृश्य परिवर्तन ध्वनि

वाचिका : लेकिन १८ अगस्त २००८ को कोशी ने अपनी बहन धेमुरा को दिए वचन को फिर भुला दिया । आखिर ऐसा क्यों हो गया ?

वाचक : यह एक ऐसा प्रश्न है, जो मनुष्य की हठधर्मी, नदियों को बांधने की विनाशकारी योजना को भी अपने घेरे में लेता है । मनुष्य की गलतियों के कारण नदियाँ अपनी धाराएं बदल रही हैं; बदल ही नहीं रही हैं, सूख भी रही है । कोशी के इतने-इतने छाड़न, इतनी-इतनी उपधाराएं, आखिर किस कथा को कहती हैं ! सूखती नदियों पर बस्तियाँ बस गयी हैं ।

वाचिका : नदियों पर ही नहीं, झीलों पर भी । झीलें सूख रही हैं । निर्मल जल की झीलें कीचड़ के तालाब बनती जा रही हैं ।

वाचक : कभी राजमहल की उधवा झील, अंगप्रदेश की सुन्दरतम झीलों में एक थी । वही उधवा झील, प्रवासी पक्षियों का अभयारण्य थी । शिशिर ऋतु के उतरते ही, झील नाना प्रकार के प्रवासी पक्षियों के शोर से गूंज उठती

ध्वनि प्रभाव

वाचिका : वही उधवा झील, मर रही है । झील पर बस्तियां बस रही हैं, जल के पेट में बस्तियों का जहर जम रहा है । जल की मछलियाँ मर रही हैं। कभी, मैयके में खिलखिलाने वाली लड़की की तरह थी उधवा झील, आजकल ससुराल में कोशी की तरह बहुत आहत है, वही ।

(मंदार नेचर क्लब)

वाचक : उधवा झील ही क्यों, शेष झीलों की भी यही कथा है । हमारे सामने प्रश्न तैर रहे हैं। चाहे बेगुसराय की काँवर झील हो या कटिहार की गोखुरा झील ।

वाचिका : हमारी झीलें सिर्फ हमारे जीवन के स्रोत ही नहीं हैं, हमारे इतिहास की साक्षी भी होती हैं । मुंगेर की खड़गपुर झील से ही जाकर पूछिए, तो बताएगी यह झील खड़गपुर के राजा संग्राम सिंह की विधवा रानी चन्द्रजोत का रणकौशल, और किस परिस्थिति में रानी चन्द्रजोत के पुत्र तोरल मल को रोज आफजुन बन जाना पड़ा ।

वाचक : और कैसे तोरल मल की पाँच पुत्रियों ने इस्लाम कुबूल करने से इनकार कर दिया था। किस तरह से पाँचो बहनें रातो-रात पालकी पर चढ़कर खडगपुर झील के पास आयीं, और कूद गयीं झील के अथाह जलकुण्ड में । यह घटना १६१५ ई. की है।

वाचिका : झीलें, नदिया, पहाड़ और जंगल हमारे इतिहास के अंग हैं । जब ये कटते हैं, तो हमारा इतिहास कटता है, हमारी संस्कृति कट जाती है।

वाचक : आज भागलपुर स्थित शाहकुण्ड की पहाड़ियाँ दरांती और भारी हथोड़े से पस्त कर दी गयी हैं, तो लोग यह भी भूलने लगे हैं कि बावन सरदारों के मुख्य राजा शशांक इसी शाहकुंड के खेरही ग्राम के निवासी थे, और खड़गपुर क्षेत्र पर पहले इसी राजवंश के राजाओं का शासन था।

वाचिका : जिस खेतौरी सरदार शशांक के यहाँ खड़गपुर के तीन भाई, दन्दुराय, वासुदेव राय, और महेन्द्र राय नौकरी करते थे, जिन्होंने एक समय में सरदार को एक युद्ध में भारी सहायता पहुंचाई थी । लेकिन एक रात इन्हीं तीन भाइयों ने शशांक की ही हत्या कर दी; उनकी ही नहीं, उनके परिवार की भी, अन्य सरदारों को भी युद्ध में परास्त किया, और फिर बड़े भाई दन्दु राय ने अपने को खड़गपुर का शासक घोषित कर दिया । दन्दुराय के बाद उसका पुत्र रूपशाह गद्दी पर बैठा । और कई पीढ़ियों के बाद इसी रूपशाह के वंश में संग्राम सिंह का जन्म हुआ, जिसकी पत्नी रानी चन्द्रजोत थी । राजा संग्राम सिंह की कहानी मुगल बादशाह जहाँगीर के काल की है । शाहकुण्ड खिरही के पर्वतकुल में बच गयी पहाड़ी और बचा तालाब आज भी सिसकियों में यह इतिहास कह रहा है; कल ये न होंगे तो शायद लोक को इतिहास सुनाने वाला आज के शाहकुण्ड में कुछ नहीं होगा ।

वाचक : शेष भारत की तरह अंगप्रदेश के सामने भी कई प्रश्न तैर रहे हैं कि क्यों हमने बड़े-बड़े तालाबों को भरवा कर उस पर शहर बसा दिया। ईनारों को, जंगलों को पाट कर बस्तियाँ क्यों बसा दी गईं ? पर्वतों को खदान में बदलकर अपनी तिजोरियों को पर्वत क्यों बना लिया ?

क्यों खेतों में कारखाने खड़े कर दिये ? क्यों कारखाने का मुँह नदियों में खोल दिया ? जब ऐसा नहीं था, तब नागवंशी राजाओं की राजधानी कोकराह की शंखनदी हीरों से कुल्ला किया करती थी । इतिहासकार डॉ. बी. वीरोत्तम के अनुसार; पंचेत, काँकजोल और क्योझरा खास जनजातियों को क्षेत्र था, अतः यहाँ स्थापित नागवंश का सम्पूर्ण छोटानागपुर में अग्रणी स्थान था । कोकरह नागवंशियों की राजधानी थी।

वाचिका : अब नदियों पर हीरों का कौमुदी महोत्सव नहीं,रेतों का महाभारत मचा रहता है । पर्वतों, नदियों, जंगलों, नक्षत्रों की उपासना के लिए उठने वाले हमारे हाथों में आखिर किसने परशुराम का कुठार थमा दिया कि आज अंगप्रदेश की आँखें अपने वनवंश के लिए तरस रही हैं !

वाचक : कभी मंदार पवत की छः-छः दिशाओं में छः वन फैले हुए थे ।

वाचिका : पर्वत के पूरब में था रेणुका बदरी वन, पश्चिम दिशा में था मालूर वन, उत्तर में दूर-दूर तक विस्तृत था—भारती वन, मालूर, माधव और भारती वनों की तरह, देवतरू मन्दार वृक्षों से आच्छादृत था—ईशान कोण का भृष्टराज वन; जैसाकि भृष्टराज के दक्षिण में था सुगंध का साम्राज्य फैलाता कमला वन ।

वाचक : मालती, केतकी, मौलसिरी, चम्पा, शृंगार, अशोक, कदम्ब का सामाज्य था इन वनों में। औषधियों का शासन चलता था ।

वाचिका : नहीं रहे वे वन, न रेणुका, बदरी, न मालूर, न माधव, न भारती, न भृष्टराज और न ही कमला वन । खो गया मयूरों का शोर और इसी के साथ उन वनों में गेण्डे; हाथियों के झुण्ड और विचरते वनराज।

(हाथियों और सिंह की ध्वनियाँ)

ध्वनि प्रभाव

वाचक : कभी राजमहल की तरह कटिहार के जंगली क्षेत्रों में गेण्डे ही नहीं मिलते थे; हिरण ही नहीं मिलते थे; बल्कि यहाँ की नदियों में घड़ियाल भी पलते थे, जो आज विश्व के दुर्लभ प्राणियों में शामिल हो गये हैं ।

वाचिका : डर है कि कल कटिहार का गोखुरा झील भी न खत्म हो जाय, जहाँ जाड़े के मौसम में, अकेले रूस से ही तीन हजार प्रकार के पक्षी आकर, उत्तर अंग को अपनी मधुर आवाजों से गुंजा देते हैं । जिस तरह की चम्पा की विशाल झील ईसा की पाँचवीं या छठी शती तक आते-आते विलुप्त हो गई । 'वसुदेव हिण्डी' में चम्पा की इस झील

के संबंध में उल्लेख है कि वह कमलवन से ढकी हुई थी । न रही चम्पा झील, न रहा वह कमल वन ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : हम प्रकृति के विरुद्ध हो गये हैं, इसीसे जीव-जन्तुओं के भी विरुद्ध हो गये हैं । गंगा में लगातार कूड़े-कचरों के प्रवाहित होते रहने से, जीवन देने वाली गंगा स्वयं मृत्यु के करीब पहुँच गयी है । दुखों को हरने वाली गंगा, अपने दुखों के निवारण के लिए याचना कर रही है ।

उदास संगीत

वाचिका : गंगा के जल की पारदर्शिता खत्म हो गयी है । अधजले मुर्दे और जली लकड़ियों को ढोते-ढोते अंगप्रदेश की गंगा फासफोरस की गंगा बनने लगी है, जिसके कारण डॉल्फिनों की सांसें आश्रयणी के बीच ही घुट कर रह गयी हैं । कई-कई प्रजातियों की मछलियों की तरह ही डॉल्फिन भी कल लोककथा की तरह न रह जाए ।

वाचक : प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर २००५में जहाँ अंग की आश्रयणी में, डॉल्फिनों की संख्या १३३ थी, वहाँ २००६ में यह संख्या मात्र ८३ तक बच गई थी, और जिस तरह से डॉल्फिनों की मृत्यु की खबर आ रही है, उससे आनेवाले दिनों में इनकी संख्या के बारे में सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है ।

वाचिका : लेकिन अंगप्रदेश कभी हारता नहीं, कभी हारा भी नहीं है,तब भी नहीं, जब इस महाजनपद पर मौर्य, शुंग, कुषाण और गुप्त राजाओं का शासन था । तभी तो इतिहासकार जयचन्द्र विद्यालंकार ने 'बिहार : एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन' में लिखा है कि चम्पा राज्य बारह सौ वर्षों तक बड़ी समृद्ध दशा में रहा, और इसके बाद १८२२ ई. तक यह किसी-न-किसी रूप में जारी रहा ।

वाचक : इसकी समृद्धि की कहानियाँ यहाँ की पहाड़ियाँ,यहाँ के तालाब, नदियों और इसकी छाड़न शाखाओं के किनारे-किनारे भी बिखरी हुई हैं । कोशी की छाड़न शाखा ही है पुरइन, सुपौल के करनपुर गाँव के पास से अलग होने वाली कोशी की यह धार । यह करनपुर भी कर्ण के साम्राज्य के अन्तर्गत था । यहाँ महाभारतकालीन कर्ण के एक किले का अवशेष आज भी मौजूद है ।

वाचिका : यही पुरइन जब डमरा, कदली पट्टी, हेमपुर गाँवों को पार करती है, तब सहरसा का नौहट्टा गाँव पहुँचती है । नौहट्टा में ही चालीस

फीट ऊँचा मिट्टी का एक टीला है, जो युद्ध में मारे गये बहादुर माधो सिंह की स्मृति में निर्मित हुआ था । इस टीले को नौहट्टा के हिन्दू और मुसलमान, दोनों ने मिल कर बनाया था ।

प्रभाती और अजान का ध्वनि प्रभाव

वाचक : हमारी नदियां, हमारे पहाड़, हमारे जंगल, हमारे इतिहास और हमारी संस्कृति की संजीविनी हैं । अंगप्रदेश के कटिहार में भले ही कृष्ण की कटि का हार खो गया हो, लेकिन इसी कटिहार के लक्ष्मीपुर ग्राम में १८५६ ई. में गुरुग्रंथ साहिब का प्रकाश हुआ था । आज भी लक्ष्मीपुर के ऐतिहासिक गुरुद्वारा में गुरु गोविन्द सिंह द्वारा हस्तलिखित गुरुग्रंथ साहिब धरोहर रूप में वर्तमान है । गंगा-कोशी के संगम में यह गुरुग्रंथ साहिब छः महीने तक पड़ा रहा, लेकिन इसकी स्याही फीकी न पड़ी । १७२६ ई. में एक नाव की दुर्घटना के साथ ही गंगा में यह पांडुलिपि समा गयी थी । पानी हटा, तो पांडुलिपि भी निकल आई, जैसे समुद्र-मंथन में बचा कोई नया रत्न निकल पड़ा हो ।

वाचिका : अंगप्रदेश के इस कटिहार तक तिब्बत जाने के क्रम में सन् १५०० ई. के आस-पास गुरुनानक देव ही नहीं आए, गुरु तेगबहादुर भी १६६६ ई. में आए, और जिस कर्मनाशा नदी के लिए यह लोकमत प्रचलित था कि इसमें स्नान करने से पुण्य कर्मों का नाश हो जाता है, उस नदी में गुरु तेगबहादुर ने स्नान कर अंगवासियों को यह संदेश दिया कि कर्मनाशा में स्नान करने वाला पापी भी पुण्य का अधिकारी बनेगा।

वाचक : और सिक्खों के अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह ने अंगप्रदेश की महान संस्कृति को आशीर्वादते हुए कहा—जय अंगाली, जय बंगाली ।

वाचक : पर्वतों,जंगलों,नदियों, झीलों, तालाबों का अंगप्रदेश हमारे कानों में कुछ कह रहा है—मैं तो फीनिक्स हूँ। फीनिक्स, जो कभी नहीं मरता । मरने के समय यह लपटों में बदल जाता है; फिर लपटों की राख से एक नया फीनिक्स निकल आता है । मैं फीनिक्स हूँ ।

समाप्ति संगीत

त्रयोदश खण्ड

आरम्भिक संगीत/शीर्षक गीत
गीत की समाप्ति पर शंख की गुरु गंभीर ध्वनि

सूत्रधार : धारावाहिक रेडियो नाटक 'अंगप्रदेश का अमृत मंथन' के बारहवें खण्ड में आपने अंगप्रदेश को कहते सुना—मैं फीनिक्स हूँ, मैं कभी नहीं मरता । सचमुच में अंग कभी नहीं मरा, सृष्टि के आरंभ में हुए भीषण जलप्रलय के बीच से निकलकर यह सतयुग, त्रेता, द्वापर को पार करता कलियुग के सीमांत तक पहुँच गया है । लेकिन इसके कानों में गूंजते इसके ही अतीत के स्वर, अभी भी प्रतिध्वनित हैं, और इसी से यह बेचैन है, अपने व्रात्य, वैदिक, जैन और महायान के महाभाव को पकड़ने के लिए भी । रूसी उपन्यासकार रसूल हमजातोव के उपन्यास 'मेरा दागिस्तान' की एक पंक्ति है—अगर तुम अतीत पर पिस्तौल से गोली चलाओगे, तो भविष्य तुम पर तोप से गोली बरसाएगा ।' आज अंगप्रदेश अपने अतीत के सहारे, अपने सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर है, तो इसीलिए । खोए हुए अमृत-कलश की प्राप्ति हेतु फिर से समुद्र मंथन के लिए ! प्रस्तुत है, इसी विषय को केन्द्र में लिए, इस धारावाहिक रेडियो नाटक की अंतिम कड़ी—त्रयोदश खण्ड ।

वाचक : लाखों-करोड़ों वर्षों की यात्रा तय कर यह अंगप्रदेश आज भी जिन्दा है, कहीं पर्वतों के हृदय में; कहीं रेत हो गईं नदियों में; सागर पार की कथाओं में; वेदों में; वाणियों में; और अंगप्रदेश की लोककथाओं में, लोकगाथाओं में । तिलका और सिद्धो-कान्हो की कहानियाँ इतिहास में मिले न मिले, लोककंठ में उसका इतिहास, अंगप्रदेश में १९४२ की क्रांति की तरह अमर है ।

वाचिक : अंगप्रदेश का गौरवशाली इतिहास कैसा था, इसे जानने के लिए हमारे पास बौद्धग्रंथ हैं, जैनग्रंथ हैं । कविवर मुनि नयनन्दी ने अपने अपभ्रंश काव्य में इस महाजनपद के लिए लिखा है ।

गीत-पाठ, जो क्रमशः क्षीण और अंत में मुखर होता है

रयणायरु णावइ सायरु ताह चम्पापुरु छज्जइ
तहिँ मणोज्जु रिद्धीएँ समिद्धउ अत्थि देसु अंगउ सुपसिद्धउ।
निविडण्णेण्णु भिडिय गुरुअज्जुण दुज्जोहणसुभीमगयकयरण।

सरहभीसवाणवलिछाइय भारहसरिस जेत्थु वणराइय ।
सुविसालाइँ सिसिरसाहालइँ अविरलसुरहिपसवसोहालइँ
तरुणिकालयग्गिरपोमरयइँ जहिँ उववणइँ व गोउलणियरइँ ।
खत्तसारपरिसाहिय खेत्तइँ बहु करिसणइँ ललियकरजुत्तइँ।
णियवइरक्खियाइँ दिढकच्छइँ जहिँ गामइँ सामंतसरिच्छइँ।
सुरयणपरियंचियकलल्लाणइँ जहिँ जिणवरसरिसइँ पुरठाणइँ।

सूत्रधार : भारतक्षेत्र में मनोज्ञ, ऋद्धि से समृद्ध व सुप्रसिद्ध अंगदेश है । वहाँ के वनों में बड़े-बड़े विशाल अर्जुन वृक्ष परस्पर ऐसी सघनता से भिड़े हुए हैं, जैसे—मानो गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन परस्पर युद्ध में भिड़े हों । बड़े भीमकाय गज रण में ऐसे गुथे हुए दिखाई देते हैं; जैसे, दुर्योधन और भीम गदायुद्ध कर रहे हों । इस प्रकार अंगदेश की वनराजि महाभारत सदृश दिखाई देती है। वहाँ गोकुलों के समूह; सुविशाल और शीतल दधिशालाएं; निरन्तर गौओं द्वारा प्रसूत बछड़ों की शोभा—वहाँ के उपवनों के सदृश्य ही दिखाई देती है, जहाँ सुविशाल, शीतल शाखालय हैं, निरन्तर सुगन्धित पुष्पों की शोभा है, तथा वृक्षों के समूहों पर पुष्पों की रज लगी हुई है। वहाँ गाँवों के खेत उत्तम खाद से खूब उर्वर बनाए गए हैं। वहाँ के नगरस्थान विपुल रत्नों से युक्त एवं सब प्रकार कल्याणपूर्ण हैं। ऐसे उस अंगदेश में चम्पापुर नाम का नगर रत्नों का निधान होने से रत्नाकर के समान शोभायमान है। वहाँ अनेक देवालय हैं और वे पण्डितों से मनोहर होते हुए ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे, बहुत से विमानों से युक्त तथा देवों से मनोहर देवेन्द्रपुरी ही हो ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : ऐसा ही था यह अंगप्रदेश !

वाचिका : रत्नों के रत्नाकार का अंगप्रदेश !

वाचक : अनेक देवालयों का देश, अंगप्रदेश !

वाचिका : महापण्डितों के मंत्रोच्चार से गूंजता हुआ अंगदेश !

वाचक : जब बुद्ध अंगुत्तराप के आपण निगम पहुँचे थे, तब वहाँ सेल नामक एक

बहुत बड़ा विद्वान निवास करता था, जो तीनों वेदों, निघण्टु, कल्प, इतिहास, काव्य, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, लोकायत शास्त्र, आदि के अद्‌भुत ज्ञाता हो, अपने तीन सौ विद्यार्थियों को विद्यादान किया

करता था, जिसने अपने शिष्यों के साथ, सिर मुड़वा कर, प्रवज्या प्राप्त कर ली थीं ।

वाचिका : सेल तो सेल था, उस समय तो अंगप्रदेश का एक सामान्य जनभी किसी विद्वान की तरह ही जिज्ञासा करता था ।

वाचक : मज्झिम निकाय में वर्णित है कि जब बुद्ध चम्पा की गर्गरा पुष्करिणी पर निवास कर रहे थे, तब पेस्स नामक एक कुमार जो हाथीवान का पुत्र था, उनके पास आया । उस समय पेस्स के साथ उसका मित्र कन्दरक परिव्राजक भी था । जब वे दोनों बुद्ध के पास पहुँचे, तब बुद्ध-परिषद् बिल्कुल मौन थी । उस शान्त परिषद् में ही कन्दरक परिव्राजक ने बुद्ध से पूछा, ''भगवन, क्या इतनी ही बड़ी परिषद् पहले के बुद्ध भी रखते थे, और क्या आने वाले बुद्ध भी इतनी ही बड़ी परिषद् रखेंगे ? तो, उत्तर में बुद्ध ने कहा—हाँ, पहले के बुद्ध भी परिषद् रखते थे, और आगे के बुद्ध भी रखेंगे ।

वाचिका : इसके बाद पेस्स और कन्दरक ने बुद्ध के साथ अनेक संलाप किए, और उठकर पीछे चले गये । उनके चले जाने पर बुद्ध ने पेस्स के ज्ञान की बहुत बड़ाई की ।

वाचक : धन्य है यह अंगप्रदेश, जहाँ के एक हाथीवान के पुत्र के ज्ञान की प्रशंसा स्वयं बुद्ध करते हों ।

वाचिका : और तब आश्चर्य ही क्या,जब विक्रमशील बौद्ध महाविहार में दस हजार विद्यार्थियों को तंत्र और विज्ञान की शिक्षा देने के लिए एक सौ आठ अध्यापक नियुक्त थे । महाविहार के परिसर में विज्ञान भवन के साथ एक केन्द्रिय हॉल भी था, विस्तृत वातानुकूलित पुस्तकालय था और थे तंत्रसाधना के लिए छोटे-छोटे कक्ष । इस महाविहार में प्रवेश के लिए छः द्वार थे । अपने रूप में कैसा होगा वह बौद्ध महाविहार, जिसकी स्थापना पालवंशी राजा धर्मपाल ने सन् ७८९ ई. में की थी, जिसका अब ध्वंशावशेष ही अंगप्रदेश के अंतीचक में बिखरा हुआ है।

करुण संगीत का उभार

वाचिका : करीब चार सौ वर्षों तक इस विश्वविद्यालय में महाज्ञान की दीपाराधना होती रही, जिसके आचार्यों में रत्नवज्र, दीपंकर श्रीज्ञान, जेतारि, ज्ञान श्रीमित्र, रत्नाकरकीर्ति, शान्तिरत्नाकर, विद्याकोकिल, चन्द्रकीर्ति प्राज्ञकरमति, वागीश्वर कीर्ति, नरोपान्त जेसे विश्वविख्यात आचार्य शामिल थे । रत्नाकर कीर्ति ने तंत्र और सूत्र के सौ ग्रन्थ सृजित किए

थे जो राजा महिपाल के समय में वर्त्तमान थे । यह विश्वविद्यालय चारो ओर से दीवालों से घिरा था, और जिसके मुख्य द्वारों पर नागार्जुन और अतिश दीपंकर जैसे आचार्य विद्यमान होते थे ।

वाचक : विश्वविद्यालय में देश-विदेश के छात्रों में लंका और तिब्बत के शिक्षार्थियों की प्रमुखता होती थी । विक्रमशील विश्वविद्यालय की विशालता का पता तो इसीसे लगाया जा सकता है कि आठ हजार लोगों के बैठने के लिए इस विश्वविद्यालय के साथ ही एक विस्तृत मैदान भी संलग्न था ।

संगीत प्रभाव

वाचिका : सेन शासक काल में भी अंगप्रदेश शिक्षा और संस्कृति का मुख्य केन्द्र बना रहा । सेन वंश के संस्थापक राजा विजय सेन की केन्द्रीय राजधानी, भागलपुर के कहलगाँव स्थित बटेश्वरथान में ही थी जिसका राज्य विस्तार गौड़ क्षेत्र तक व्याप्त था ।

वाचक : दशवीं शताब्दी के उत्तरकाल में उठे सेन शासन का विकास बारहवीं शताब्दी के अंत तक रहा, जिस वंश में वीर सेन, बल्लाल सेन, और लक्ष्मण सेन प्रमुख राजा हुए । विश्वविख्यात गीतगोविन्द के रचयिता जयदेव लक्ष्मणसेन के दरबार के ही रत्न थे । जयदेव के अतिरिक्त लक्ष्मण सेन की विद्वत सभा में हलायुध और श्रीधर जैसे भारत प्रसिद्ध विद्वान भी शामिल थे ।

वाचिका : अंगुत्तराप के कुछ पश्चिमी भाग को छोड़ सम्पूर्ण अंगप्रदेश में सेन वंश का शासन फैला हुआ था । सेनवंशी राजाओं का शिक्षाप्रेम अकारण नहीं था । बल्लाल सेन स्वयं उच्चकोटि के लेखक थे, और उन्होंने 'दानसागर' नामक ग्रंथ की रचना की । इन्हीं के द्वारा अधूरा लिखा गया 'अद्‌भुत सागर' को पूरा किया था इनके विद्वान पुत्र और शासक लक्ष्मण सेन ने जिसके दरबार में आर्यासप्तशती के रचयिता गोवर्द्धन, उमापति और शरण जैसे कवि रत्न भी थे ।

वाचक : अंगप्रदेश के पश्चिमी-दक्षिणी सीमा पर पालवंशी अन्तिम राजा इन्द्रद्युम्न के राज्य को अपने अधीन करते जब ७०० अश्वारोहियों के साथ बख्तियार अपने पुत्र मुहम्मद के साथ पूरब की ओर बढ़ा, तो बिना किसी लड़ाई के बल्लाल सेन के पुत्र लक्ष्मण सेन के ऊपर विजय प्राप्त कर ली ।

वाचिका : शायद ऐसा नहीं होता,अगर किसी ज्योतिष ने लक्ष्मण सेन से यह नहीं

कह दिया होता कि आप के राज्य का अंत निकट है और लक्ष्मण सेन ने उस ज्योतिष की भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं कर लिया होता। लक्ष्मण सेन अंगप्रदेश की सीमा से निकल कर बंगाल भाग गया और बख्तियार खिलजी ने बटेश्वर नाथ की राजधानी के साथ उसके गौढ़ पर भी अधिकार कर लिया, और विक्रमशील विश्वविद्यालय के उजाड़ बस्ती में बदल दिया ।

संगीत का उभार और तिरोभाव

वाचक : लेकिन ज्ञान के जिस दीप को इस महाजनपद ने वेद और उपनिषदकाल में ही जलाया था, वह विक्रमशील बौद्ध विश्वविद्यालय के ध्वस्त कर दिए जाने के बाद भी न बुझा । तंत्र और विज्ञान का महाकेन्द्र उजड़ गया था लेकिन मुगलकाल में ही चम्पा में पुनः मुस्लिम विद्या का अद्‌भुत केन्द्र खड़ा हो गया था । मुगल बादशाह जहाँगीर के शासन में अरबी-फारसी का बिहारप्रसिद्ध मदर्सा की नींव मौलाना शाहबाज मोहम्मद ने भागलपुर में रखी, जिसमें दो सौ विद्यार्थी अरबी-फारसी की शिक्षा पा रहे थे । लतीफ, तकी, अफजन, हाफिज, आवकील, आलोद और माहूद इस विख्यात मदर्से के विद्वान मौलवियों में थे, जिस मदर्से की ख्याति अन्तिम मुगल बादशाह काल तक लोकप्रिय रही ।

वाचक : आज भी भागलपुर की गलियों में यह कहानी लोकप्रिय है कि किस तरह नाथनगर के शेखपुरा से आलिमों की सैकड़ों पालकियां एक साथ निकलती थीं ।

संगीत ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : बादशाह औरंगजेब के समय के प्रकाण्ड विद्वान शेखरेजुद्‌दीन भी भागलपुर के ही थे, जो मुसलमानी कानून की प्रसिद्ध पुस्तक फतबा-ए-आलमगिरी के बारह संकलनकर्त्ताओं में एक थे ।

संगीत ध्वनि-प्रभाव

वाचक : ज्ञान के आलोक से अघाया हुआ यह अंग प्रदेश इसी कारण अंग्रेजी राज के अंधकार में भी नही खोया । यह महाजनपद निराश नहीं हुआ, क्योंकि अतीत की एक महान संस्कृति इसके पीछे थी, और भविष्य के प्रकाश का महालोक इसकी मुट्‌ठी में सुगबुगा रहा था। (पॉज) कभी, पराधीन भारत के समय जेल में बन्द, कवि पं. बुद्धिनाथ झा कैरव ने ये पंक्तियाँ लिखी थीं,

काव्यपाठ–

कवि जीवन में नित्य तुम्हारे सुन्दरता के साज सजे
मेरे पाँवों में रुनझुन यह बेड़ी की झनकार बजे
तुम हो मुक्त और मैं बन्दी
पद-पद पर मेरे पाबन्दी
इस अभाव के जग में कोई भाव कहो कैसे उपजे
मेरे पाँवों में रुनझुन यह बेड़ी की झनकार बजे

वाचक : और जब बेड़ियाँ टूटी, देश आजाद हुआ, तो अंगप्रदेश का वही कवि फिर गा उठा–

काव्यपाठ–

फर-फर फहरे राष्ट्र पताका
बल-विश्वास-वैभव का सोता
क्रांति-यज्ञ का अभिनव होता
तरल तरंगित नवल ज्योतिमय
शुचि प्रतीक प्रभुता का
फर-फर फहरे राष्ट्र पताका ।

ध्वनि प्रभाव

वाचिका : अंगप्रदेश का जीवन और इसकी जीवनदृष्टि, इसके इतिहास से कहीं ज्यादा, इसके साहित्य में सुरक्षित है, अंकित है । अंगप्रदेश के साहित्यकारों ने, आरम्भ से ही साहित्य को, अपनी सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के औजार के रूप में स्वीकार किया । वह चाहे विक्रमशिला बौद्ध महाविहार के सिद्ध कवियों की वाणी हो, या आधुनिक काल के राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की कविताएं।

वाचक : क्या यह एक संयोग मात्र है, या कुछ और कि हिन्दी का पहला परिच्छेद भी अंगप्रदेश के सिद्ध कवियों ने ही लिखा, और जब राष्ट्रीय एकता के लिए खड़ी बोली के पक्ष में मत प्रबल हुआ, तो अंगप्रदेश ने ही, महेश नारायण के रूप में, खड़ी बोली का पहला कवि दिया ।

वाचिका : जब भारतेन्दु के पक्ष का समर्थन करते हुए प्रताप नारायण मिश्र ने अपनी पत्रिका 'ब्राह्मण' में लिखा, कि जब खड़ी बोली में कविता-सृजन कवि शिरोमणि भारतेन्दु से संभव नहीं हो सका, तब इस भाषा में कविता करने की बात सोचना भी व्यर्थ है ।

वाचक : तब उसी काल में तत्कालीन भागलपुर प्रमण्डल के संथाल परगना के

राजमहल में जन्मे, महेश नारायण ने खड़ी बोली में इतनी समर्थ कविताएँ कीं, कि आगे चलकर उसी नींव पर द्विवेदी काल और परवर्ती हिन्दी काव्य की इमारतें खड़ी हुईं । इसमें कोई विवाद नहीं कि भारतेन्दु ने खड़ी बोली के गद्य को जितना माँजा; उतना ही महेश नारायण ने खड़ी बोली की काव्यभाषा को ।

ध्वनि प्रभाव

वाचिका : हिन्दी के विकास में अंग की महती भूमिका को देखते हुए ही, सन् १८९३ ई. में जिस नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना काशी में हुई थी, उसका चौथा अधिवेशन सन् १९१३ ई. को भागलपुर में ही हुआ। यह चौथा अधिवेशन महात्मा मुंशीराम के सभापतित्व में हुआ था ।

ध्वनि प्रभाव

वाचिका : अंगप्रदेश ने साहित्य और साहित्य-भाषा को लेकर आरम्भ से ही अमृत मंथन किया है। विक्रमशिला महाविहार के सभी सिद्धकवि महापंडित थे, लेकिन उन्होंने अपनी कविताएँ अंगप्रदेश में व्याप्त जनभाषा अंगिका में ही लिखीं, इसलिए नहीं कि उन कवियों की मातृभाषा ही अंगिका थी, बल्कि इसलिए कि उन्हें मालूम था कि गहनतम-से-गहनतम विचारों को, समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक, सिर्फ उसकी ही भाषा में पहुँचाया जा सकता है ।

ध्वनि प्रभाव

वाचक : और स्वतंत्रता संग्राम के काल में खड़ी बोली की आवश्यकता महसूस हुई, तो अंगप्रदेश के साहित्यकार खड़ी बोली हिन्दी के भारी पक्षधर होकर सामने आए । पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', लक्ष्मीनारायण सुधांशु, रामधारी सिंह दिनकर, पं. अवधभूषण मिश्र, डॉ. डोमन साहू समीर, अनूप लाल मंडल, रामेश्वर झा द्विजेन्द्र, फणीश्वर नाथ रेणु, डॉ. वचनदेव कुमार, जैसे अंगिका भाषी साहित्यकारों के अधिकांश साहित्य खड़ी बोली में ही सृजित हैं । तब पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी की यह पंक्ति अंगप्रदेश के कोने-कोने में गूंज रही थी,

संगीत प्रभाव

काव्यपाठ–

हिन्दी में हम लिखें पढ़े, हिन्दी ही बोलें
नगर-नगर में हिन्दी के विद्यालय खोलें ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : लेकिन अंगिका के साहित्य की धारा इससे उपेक्षित नहीं हुई । स्वयं जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, रामधारी सिंह दिनकर, अनुप लाल मंडल, रामेश्वर झा द्विजेन्द्र, फणिश्वरनाथ रेणु, डॉ. परमानन्द पाण्डेय, अवध भूषण मिश्र, अंगिका के प्रबल समर्थक थे, क्योंकि यह उनकी मातृभाषा थी । उन्होंने खड़ी बोली के अपने साहित्य को अंगिका ध्वनियों से सजाया था।

वाचक : और यही कारण है कि बाद के समय में भी अंगिका साहित्य हिन्दी साहित्य के समानान्तर प्रवाहित साहित्य-धारा बनी । इससे उस गौरवशाली अतीत की रक्षा हुई, जिस अतीत के संबंध में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है

ध्वनि-प्रभाव

सूत्रधार : हिन्दी साहित्य और पूर्वी भारतीय भाषाओं के जन्मदाताओं के रूप में जिन चौरासी सिद्धों के बारे में हम जानते हैं, उनमें से बहुतेरे लोग विक्रमशिला विश्वविद्यालय से संबंधित थे ।

ध्वनि-प्रभाव

वाचिका : लेकिन इससे यह समझ लेना कि अंगप्रदेश सिर्फ अंगिका या खड़ीबोली के अमृत मंथन के लिए ही कछुए की पीठ बना रहा, तो गलत होगा। यह प्रदेश तो बंगला साहित्य और उर्दू भाषा के लिए भी नन्दन वन रहा है ।

वाचक : बंगला भाषा के महान साहित्यकार शरतचन्द, सतीनाथ भादुड़ी, बलाई चन्द्र मुखर्जी वनफूल के साहित्य का केन्द्रीय कथ्य तो, उनके समय के अंगप्रदेश का पूरा समाज ही है । एक ऐसा भी समय था, जब अंगप्रदेश के कमल से अरबी-फारसी साहित्य के पराग झरा करते थे। आज भी वह संस्कृति खत्म नहीं हुई है ।

वाचिका : खतम हो भी नहीं सकती है, जब तक तेजनारायण सिंह की कहानियाँ इस अंगप्रदेश से जुड़ी हुई हैं । और बंधी हुई हैं राजा शिवचन्द्र बनर्जी की स्मृतियाँ, जिन्होंने अपने पिता दुर्गाचरण बनर्जी की स्मृति में दुर्गाचरण मध्य विद्यालय और माता की स्मृति में मोक्षदा कन्या विद्यालय की नींव रखी थी ।

वाचक : राजा शिवचन्द्र बनर्जी ने तभी जान लिया था कि देश में नई जागृति के लिए जितनी बाल शिक्षा जरूरी है, उससे भी अधिक कन्या को

शिक्षित करना ।

वाचिका : राजा शिवचन्द्र के इस विचार के पीछे, कहीं-न-कहीं, इस मिट्टी की परम्परा ही प्रेरणा रूप में रही होगी । अंगप्रदेश की स्त्रियाँ, शक्ति और ज्ञान की उपासिका रही हैं। वह चाहे जैनकाल की चन्दनवाला हो, या बुद्धकाल की विशाखा; बुद्धोत्तरकाल की बिहुला हो या मुगलकाल में भागलपुर के सुल्तानगंज के छोटे से गांव उधाडीह की बेटी रानी चन्द्रजोत—राजा संग्राम सिंह की रानी, या फिर उन्नीसवीं सदी की कादम्बिनी गांगुली ।

वाचक : विशाखा, बाँका जिला के छोटे-से गाँव भदरिया के श्रेष्ठी परिवार की कन्या । महासेठ मेण्डक की पुत्री । सात साल की उम्र में ही भदरिया में भगवान बुद्ध से मिली थी, विशाखा । विवाह हुआ था श्रावस्ती नगर के सेठ मिगार के पुत्र पुण्यवर्द्धन से । विवाह में कन्यापक्ष की ओर से जो हार पड़ना था, वह तीन महीने में तैयार हुआ था, वह था नौ करोड़ मूल्य का महार्घ, जिसे विशाखा ने बौद्ध सेवा के लिए खर्च कर दिया था ।

वाचिका : विशाखा की बात यहीं खत्म नहीं हो जाती । बहू के बुद्ध प्रेम को देख श्वसुर मेण्डक भड़क उठे, लेकिन विशाखा ने अपने तर्कों से श्वसुर को परास्त किया, और उसी दिन से वह मिगार माता कहाने लगी । सती बिहुला ने भी तो अपने अद्‌भुत साहस, धैर्य और विवेक से अपने श्वसुर चाँदो के अहंकार को परास्त किया था । अद्‌भुत रहा है यह अंगप्रदेश । अद्‌भुत रही है अंगप्रदेश की रमणियां । जिन्हें, नहीं भूल पाता यह अमृत देश । क्या ज्ञान, क्या साहस, क्या धैर्य, क्या कला, सब क्षेत्रों में अंग की ललनाओं ने विश्व को सीखने को बहुत कुछ दिया है ।

वाचक : यह महाजनपद जब बीसवीं शदी के सुरसम्राट मांगन खवास को याद करता है, तो इसे अनायास ही चम्पा के महाश्रेष्ठी चारुदत्त की पालिता पुत्री विद्याधर गन्धर्वदत्ता की स्मृति हो आती है, जो परम रूपवती होने के साथ-साथ गन्धर्व वेद की प्रख्यात विदूषी थी; जिसके विवाह के लिए चारुदत्त ने यह शर्तें रखी थी कि जो कोई गन्धर्वदत्ता को संगीत में पराजित करेगा, वही उसका पाणिग्रहण का अधिकारी होगा । तब न जाने, देश के कैसे-कैसे निपुण संगीतकार चम्पा तक आए थे । तब चम्पा के बाजार नाना प्रकार के वाद्‌य यंत्रों से

शोभायमान रहते थे ।

वाचिका : यह कथा महाजनपद काल से पूर्व की कहीं जाती है, जिसका उल्लेख जैनग्रंथ 'वसुदेव हिण्डी' में प्राप्त है । गन्धर्वदत्ता, विशाखा, बिहुला और रानी सर्वेश्वरी देवी की कहानियाँ अंगप्रदेश में कभी रुकी नहीं, जिसका ही प्रमाण है उन्नीसवीं सदी की कादम्बिनी गांगुली ।

वाचक : हाँ, कादम्बिनी गांगुली इसी अंगप्रदेश की बेटी थी, जिसका जन्म भागलपुर में १८६१ ई. में हुआ था । वह भारत की प्रथम महिला स्नातक थी और इंडियन नेशनल काँग्रेस के पाँचवें अधिवेशन की छः महिला प्रतिनिधियों में एक । कादम्बिनी गांगुली ने नारी-मुक्ति के लिए आजीवन संघर्ष किया था और इसके लिए उसने भागलपुर में अभय चरण मल्लिक के साथ मिलकर भागलपुर महिला-समिति का भी गठन किया था ।

वाचिका : अंगप्रदेश में नारी शिक्षा और नारी मुक्ति की बात उठते ही, एक नाम, अतीत की छाती फोड़कर, अपने आप ऊपर उठ जाता है; वह नाम है, बेगम रुकैया ।

वाचक : क्या फर्क पड़ता है कि कादम्बिनी गांगुली की मृत्यु ३ अक्टूबर १९२३ को कलकत्ता में हुई, और बेगम रुकैया का जन्म वर्त्तमान में बंगला देश के रंगपुर में सन् १८८० में हुआ। बेगम रुकैया का विवाह अठारह वर्ष की उम्र में भागलपुर के उप मजिस्ट्रेट सैयद शेखावत हुसैन से हुआ था।

वाचिका : और विधवा हो जाने के बाद बेगम रुकैया ने अपने खाली हाथों से भागलपुर में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा और जागृति के लिए विद्यालय की स्थापना से जो ऐतिहासिक कार्य किया, वह अब इतिहास में प्रेरणा का शिलालेख बन गया है ।

संगीत ध्वनि-प्रभाव

वाचक : जिस प्रदेश की चम्पा स्वामी विवेकानन्द के प्रवास से रोमांचित हुई है, और भागलपुर में कार्यरत राजा राममोहन राय की गतिविधियों से बार-बार आन्दोलित हुई है, वह चम्पा अपने ऊपर फिर कभी काला पहाड़ का आगमन नही चाहती, चम्पा भूल जाना चाहती है १५७६ ई. का वह क्षण, जब राजमहल के युद्ध में दाउद खां का सिर काट कर उसे बादशाह अकबर के पास भिजवा दिया गया था ।

वाचिका : चम्पा १९८९ ई. की एक शाम को फूट पड़ने वाली उस भयावह

साम्प्रदायिकता को भी स्मरण नहीं करना चाहती, जिसने पूरे देश को दहला दिया था । चम्पा खोई हुई है सूफी संत मकदूम शाह की स्मृति मे । और १९६१ ई. के सौ कुण्डों से एक साथ उठती यज्ञाग्नि की शिवकारी लपटों की स्मृति में; वेदों के गूंजते मंत्र और भक्ति भाव में डूबे जनसमुद्र की स्मृति में।

मंत्रोच्चार जो देर तक गूंजकर समाप्त होता है

वाचिका : चम्पा, रेशम की चम्पा; रेशम का अंगप्रदेश ।

वाचक : अंगप्रदेश का रेशम किसकी आँखों में चमक नहीं भर देता । (पॉज) दिल्ली में, २०१० का उन्नीसवां राष्ट्रमंडल खेल उत्सव । (पॉज) देशी, विदेशी खेल विजेताओं के बदन पर अंगप्रदेश के रेशमी शॉल और रेशमी दुपट्टे की वह दोहरी चमक, न कभी अंग प्रदेश भूल सकेगा, न भारत देश और न विश्व के राष्ट्रमंडल के इकहत्तर राष्ट्र ।

वाचिका : क्या पता, केले का सिल्क भी राष्ट्रमंडल खेल के विजेताओं के बदन पर चमके और जलमार्ग से होकर देश-विदेश के लिए चल निकले। कभी चम्पा का आन्तरिक पोतपेत्तन विदेशों से व्यापार का विख्यात केन्द्र था, कौन जाने फिर वे दिन लौट आए । भारतीय जलमार्ग प्राधिकरण, व्यावसायिक सेवा को विस्तार देने के पक्ष में है और भागलपुर में इसके लिए टर्मिनल भी बन कर तैयार है ।

वाचक : लगता तो बस यही है कि वे दिन दूर नहीं, जब जलमार्ग से होकर फिर चम्पा के लोग निकल पड़ेंगे, जावा, सुमात्रा, बालि जैसे देशों में—अपने अंगप्रदेश के अतीत की कहानियों को ढूंढने के लिए । अंगप्रदेश को बुला रहा है, अंगकोरवाट की चम्पा ।

वाचिका : खंडहर कहानियाँ कहने को बेचैन हैं—वे कहानियां, जो बनैली राजवंश की हैं, महाशय वंश की हैं, शंकरपुर और पंचगछिया राजघरानों की हैं, राय और तरुआरी राजघरानों की हैं सुपौल के हरावत स्टेट और दुमका के हण्डवा स्टेट की हैं यानी अंगप्रदेश के आखरी राजवंशों की मिटती कहानियां ।

वाचक : यह अमृत देश मुड़कर नहीं देखता कि बिहार-पुनर्गठन के नाम पर सन् १९५६ में इसके साथ क्या हुआ, और बिहार पुनर्गठन २००० के ही नाम पर उसके भूगोल को कैसे चीरा गया, इसकी संस्कृति ही कुछ ऐसी है कि यह विभाजित होकर भी यह प्रदेश अविभाजित ही रहता है ।

वाचिका : हवाओं पर फिर लिखा जायेगा, बाबू दीपनारायण सिंह और तेजनारायण

सिंह का इतिहास; शहीद सतीश झा की शहादत और तारापुर में नील अत्याचार के विरोध में उबला किसान-विद्रोह ही नहीं, बल्कि वह इतिहास भी, जब अंगप्रदेश के महान राजनीतिज्ञ बाबू श्रीकृष्ण सिंह ने, बिहार की सत्ता संभालते ही, खुली आवाज में कहा था कि राष्ट्र और समाज का सुख बस इसी विवेक से प्राप्त हो सकता है कि हम वर्ण-भेद की लाश को जमीन के नीचे दफन कर आएँ । और धर्म और न्याय के द्वार, समाज के सभी वर्णों के लिए, समान रूप से खोल आएं ।

वाचक : सुनो, सुमेरू के शिखर पर बैठा यह कौन करकंड चरिउ की पंक्तियों का पाठ कर रहा है

(गीत की पंक्तियाँ मद्धिम स्वर में उभरती है और उसका अनुवाद अपेक्षाकृत तेज स्वर में । पाठ के अन्त में गीत की पंक्तियाँ पुनः स्पष्ट होती है)

दीवाण पहाणहिँ दीवदीवे जंबू दुवलंछिए जंबूदीवे ।
वेढियलवणण्णववलयमाणे जोयणसयसहसपरिप्पमाणे ।
वित्थिण्णउ इह सिरि भरहछेत्तु गंगाणइसिंधु हिं विप्फुरंतु ।
छक्खंडभूमिरयणहँ णिहाणु रयणायरो व्व सोहायमाणु ।
एत्थत्थि रवण्णउ अंगदेसु महिमहिलइँ णं किउ दिव्ववेसु ।
जहिँ सरवरि उग्गय पंकयाइँ णं धरणिवयणि णयणुल्लयाइँ
जहिँ हालिणिरूवणिवद्धणेह संचल्लहिँ जक्ख ण दिव्वदेह ।
जहिँ बालहिँ रक्खिय सालिखेत्त मोहेविणु गीयएँ हरिणखंत ।
जहिँ दक्खइँ भुंजिवि दुहु मुयंति थलकमलहिँ पंथिय सुहु सुयंति ।
जहिँ सारणिसलिलि सरोयपंति अइरेहइ मेइणि णं हसंति ।
तहिँ देसि रवण्णइँ धणकणपुण्णइँ अत्थि णयरि सुमणोहरिय ।
जणणयणपियारी महियलि सारी चंपा णामइँ गुणभरिय ।।

द्वीपों में प्रधान, द्वीपों के दीपक समान, जम्बू वृक्ष से लक्षित जम्बूद्वीप है, जो लवणसमुद्र से वलय के समान वेष्टित तथा प्रमाण में एक लाख योजन है। इस जम्बूद्वीप में विशाल श्री भरतक्षेत्र है, जो गंगा और सिन्धु से विस्फुरायमान है । वह छह खण्ड भूमिरूपी रत्नों का निधान होने से रत्नाकर के समान शोभायमान है । ऐसे इस भरत क्षेत्र में रमणीक अंगदेश है; जैसे, मानो पृथ्वी रूपी महिला ने दिव्य वेष धारण किया हो । जहाँ के सरोवरों में कमल उग रहे हैं; मानों धरणी के मुख पर सुन्दर नयन ही हों । जहाँ

कृषक-स्त्रियों के रूप में स्नेहासक्त होकर दिव्य देहधारी यक्ष निश्चल हो गये हैं । जहाँ बालिकाएँ चरते हुए हिरण के झुण्डों को अपने गीत से मोहित करके, धान के खेतों की रक्षा कर लेती हैं । जहाँ पथिक दाख का भोजनकर अपने यात्रा के दुःख से मुक्त होते और स्थल कमलों पर सुख से सो जाते हैं। जहाँ की नहरों के पानी में कमलों की पंक्ति अति शोभायमान होती है; मानो, मेदिनी हँस उठी हो । ऐसे धन-धान्य से पूर्ण उस रमणीक अंगदेश में बड़ी मनोहर, जननयन-प्यारी, महीताल में श्रेष्ठ और गुणों से भरी हुई चम्पा नाम की नगरी है ।

शीर्षक संगीत

समाप्ति संगीत